वार्षिक पत्रिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

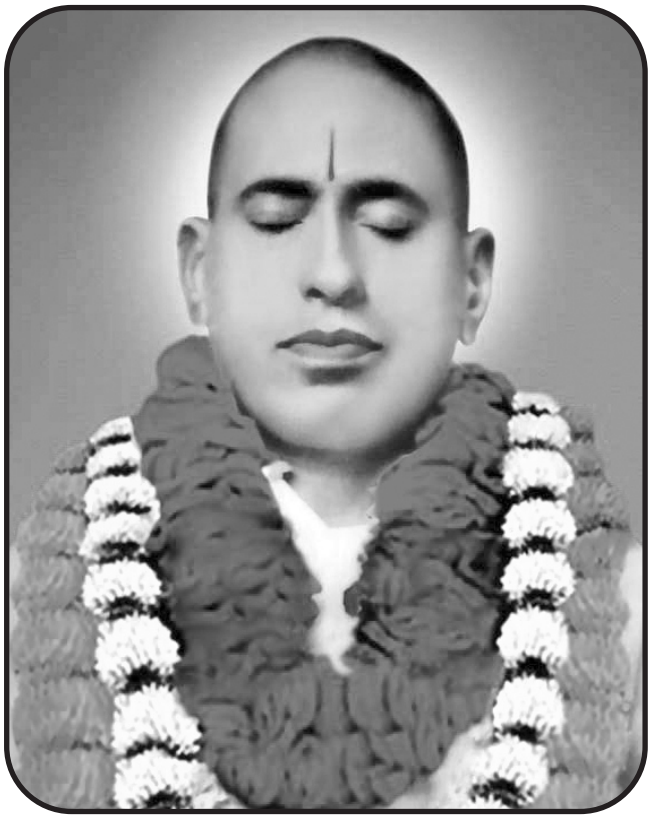

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रकाशक
श्री विश्वशान्ति आश्रम
त्रिवेणीपुरम्, झूँसी-इलाहाबाद

संपादकीय

विगत वर्षों में कुछ लालची, पाखण्डी और अराजक तत्त्वों ने संयासी, पुजारी और बाबा के नाम पर अनकूत काला धन अपने-अपने मठों, आश्रमों अथवा मन्दिरों में इकट्ठा किये, जो कालाधन के रूप में पकड़े गये। इन काला धनों की मात्रा इतनी अधिक बतायी गयी कि सिर्फ अनुमान लगाना ही सम्भव था, निश्चित धनराशी का तो कुछ पता ही नहीं। ऐसे में उच्च न्यायालय का सख़्त रूख़ अख़्तियार करना आवश्यक हो गया था। ऋषि, महात्माओं के इस पावन देश में ऐसे पाखण्डी संयासियों और बाबाओं की भरमार एक विडम्बना बन गयी है, जिसके कारण साधारण मानव ठगा जा रहा है। क्योंकि अज्ञानी भगवद्प्रेमी भक्त भगवान की चाह में दर-दर भटकता रहता है जिसे पाखण्डी संत और बाबाओं की चमक-दमक आकर्षित करती है और उनके चंगुल अथवा जाल में आसानी से फँस जाते हैं। लेकिन जो संयासी सचमुच में सच्चे संत, महापुरुष अथवा ज्ञानी होते हैं उनकी सादगी उन्हें सांसारिक चमक-दमक से दूर रखती है जिसे विरले ही भाग्यशाली लोग पहचान पाते हैं। ऐसे महापुरुष संसार में आते हैं और अपना कार्यकाल बिना किसी चमक-दमक और दिखावे के बिता कर संसार से विदा ले लेते हैं। ऐसे महापुरुष भगवान का प्रतिरूप होते हैं, जिसे समय रहते कोई पहचान नहीं पाता है। ऐसे महापुरुषों को वही पहचान सकता है जो इसके योग्य अथवा अधिकारी होता है, जैसे- डॉक्टरी में दाखिला लेने के लिए उसके अनुसार तैयारी करनी पड़ती है वैसे ही प्रभु पिताजी को पहचानने के लिए हमें सबसे पहले ख़ुद को उनके योग्य बनाना पड़ता है तभी हमारी दृष्टि उन्हें पहचान पायेगी। अपनी दृष्टि पटल से अंधकार का पर्दा हटाने के लिए रास्ता के रूप में हमें सत्यमहापुरुषों द्वारा कुछ ग्रन्थों की सौगात मिली है, जिसका अध्ययन और पालन कर प्रभु दर्शन की तैयारी कर सकते हैं और परीक्षा पास कर उनके दर्शन पाने के अधिकारी बन सकते हैं।

इन्हीं सत्य महापुरुषों में सद्गुरु आनन्द योगी जी आनन्दमय थे, जिन्हें समय रहते कुछ भाग्यशाली लोग ही पहचान पाये थे और जितने भी लोग उन्हें पहचान पाये उनमें से बहुत कम ही लोगों ने उनके ज्ञान को धारण और आदर्शों का पालन किया। बहुतों ने तो उनके साथ जीवनपर्यन्त रहते हुए भी सांसारिक विषय भोग और आसक्तिवश अपने को प्रभु-दर्शन के योग्य नहीं बना पाये, बस जीवन भर उनका प्रिय बनने का नाटक अथवा ढोंग ही करते आये। लेकिन जिन्होंने सद्गुरुदेव के दिये उपदेश और ज्ञान का आंशिक रूप में भी पालन किया या आत्मसात् किया उन्हें आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार से लाभ प्राप्त हुआ। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के द्वारा दिये गये ज्ञान को भगवद्प्रेमी भक्त आज भी उनके संकलित ज्ञान-ग्रन्थों में से पठन-पाठन कर ग्रहण कर रहे हैं और अपने इस सांसारिक जीवन को आध्यात्मिक पटल पर रेखांकित करने की कोशिश कर रहे हैं। बहुत से ऐसे ही भगवद्प्रेमी भक्तों के अनुभव और महापुरुषों के ज्ञान एवं उपदेश से परिपूर्ण यह पत्रिका आपके सामने है, जिसका लाभ उठा कर आप अपने जीवन को सन्मार्ग पर ला सकते हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य लोगों तक प्रभू पिताजी के ज्ञान और उपदेश को सरल और सुगम भाषा अथवा शब्दों में पहुँचाना है जिससे साधारण जन भी इस परम् ज्ञान से स्वयं को अभिसिंचित कर सकें।

–नन्द लाल सिंह

संपादक : आनन्दमय- नन्द लाल सिंह
सलाहकार : आनन्दमय- दीनानाथ उपाध्याय
संयोजक : आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह
: आनन्दमय- लवकुश भगवन
आशीर्वाद : सभी गुरुजन एवं भगवन लोगों का
अक्षर संयोजन : शची कम्प्यूटर्स (तख़्तोताज)
105-एफ/4, ॐ गायत्री नगर,
इलाहाबाद। Mo. 9839873793

प्रकाशक :श्री विश्वशान्ति आश्रम
जी॰ ए॰ 1/13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी,
इलाहाबाद-211019
www.shrivishwashantiashram.com
Email : president@shrivishwashantiashram.com
publisher@shrivishwashantiashram.com
editor@shrivishwashantiashram.com
संस्करण : पाँचवा (2012)
सहयोग राशि : ₹ 25/-

ध्यानयोगाचार्य श्री आनन्दयोगी जी महाराज द्वारा स्थापित 'श्री विश्वशान्ति आश्रम' दिव्य ज्ञान का भण्डार

ऋषियों की तपोभूमि इस भारत वर्ष में विभिन्न युग एवं कालवर्ष में स्वयं भगवान मानवरूप में अवतरित हुए और मनुष्य को उनके कर्त्तव्यों, कर्मों और आदर्शों का बोध कराया। पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने स्वयं एक मनुष्य रूप में आज्ञाकारी पुत्र की भाँति अपने सारे मानव कर्त्तव्यों का निर्वहन कर प्रत्येक मानव जाति के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किये। परमानन्दमय श्रीकृष्ण भगवान ने श्री अर्जुन को निमित्त बनाकर पूरे मानव जाति के कल्याण के लिए 'श्रीमद्भगवद्गीता' के रूप में दिव्य ज्ञान दे गये, जिसके सहारे मानव चाहे तो अपना जीवन लोककल्याणकारी, परम्हितकारी और मोक्षदायी बना सकता है। ''इस महाकाव्य में लिपिबद्ध ज्ञान स्वयं भगवान श्रीविष्णु के मुखारविन्दु से निकली हुई है जिसके नित श्रद्धा, भक्ति सहित अध्ययन एवं मनन से मन में नये-नये सत्-ज्ञान, अच्छे विचार और भाव आते हैं।''

मानव निर्मित धर्म चाहे जो भी हों, भगवान तो एक ही है। मोहम्मद पैगम्बर, ईसा मसीह, महाबीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, गुरु नानक जी इत्यादि महापुरुष, देव अथवा भगवान स्वरूप विभिन्न काल में अवतरित हुए और मानव जीवन को सार्थक और भक्तिमय बनाने के लिए बहुपदेश दिये जिनका सार विषय समान ही है, लेकिन क्या आज तक हम इनके उपदेशों पर मंथन किये हैं और अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया है? नहीं। हम लोग तो बस इनके नाम पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन इत्यादि धर्म बनाकर उनको मूर्ति स्वरूप मन्दिरों में स्थापित कर दिये हैं। उनके नाम पर अधिक से अधिक मन्दिर, मस्ज़िद और गुरुद्वारा को बनवाने में ही लगे हुए है। उनके उपदेशों, गुणों और आदर्शों को दरकिनार कर दिये हैं। जब तक हम लोग इनके उपदेशों और आदर्शों को अपने जीवन में नहीं उतारेंगे तब तक हमारा यह मानव जीवन सार्थक सिद्ध नहीं होगा।

वर्तमान युग में इन्हीं श्री धर्मगुरुओं के नाम पर न जाने कितने आश्रम, मठ और संस्थाएँ बनाकर धन्य-धान्य को बँटोरने में लगे हैं, शायद इसीलिए आज कुछ संस्थाएँ इतनी अमीर हो चुकी हैं कि उनके सम्पत्ति का लोग सिर्फ़ आँकड़ा लगाते हैं, सच तो पता ही नहीं। जबकि हमारे धार्मिक ग्रन्थ वेद, पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णीत है कि धार्मिक पथ पर अग्रसर भक्तों और धर्म प्रेमियों को धन का संग्रह नहीं करना चाहिए। जिसका मन विषय भोगों के प्रति आसक्त हो वह योगी, संयासी अथवा धर्मगुरुतुल्य हो ही नहीं सकता। ऐसे पाखण्डी मठाधीशों से मानव मोक्षदायी, कल्याणमयी हितकारक ज्ञान अर्जित नहीं कर सकता।

'श्री विश्वशान्ति आश्रम' जो त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद में स्थित है, उपर्युक्त पाखण्डी, अन्धविश्वासों और बाह्यआडम्बरों से पूर्णतः परे एक निष्काम भाव से प्रेरित और उस पर आधारित आश्रम है जिसका एक मात्र लक्ष्य मानव जीवन को सन्मार्ग पर लाकर उन्हें सच्चा ज्ञान बतलाना और ध्यान का पाठ सिखलाकर इसकी विधि का अभ्यास कराना है ताकि ईश्वर के सापेक्ष उनकी गति बन सके, उनसे साक्षत्कार हो सके। यह एक ऐसा आश्रम है जहाँ छल, कपट, ढोंग और ईर्ष्या-द्वेष का कोई स्थान नहीं है। सभी भक्तों और श्रद्धालुओं को समान दृष्टि से देखा और उनके साथ व्यवहार किया जाता है। शायद यह विश्व में ऐसा एकमात्र आश्रम है जहाँ पर गरीब-अमीर, ऊँच-नीच और विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच कोई भेदभाव अथवा ईर्ष्या-द्वेष नहीं रखा जाता। जो भी श्रद्धा-भक्ति, निष्कपटता और निष्कामता के भाव से आता है उन्हें समान आदर, भाव और सत्कार मिलता है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' यह महामंत्र श्री विश्वशान्ति आश्रम के संस्थापक ध्यानयोगाचार्य श्री आनन्द योगी जी महाराज द्वारा सिद्धस्त लोककल्याणकारी, समस्त संकटहारी अथवा परमंहितकारी है जिसका सच्चे भाव से जप, तप और ध्यान करने से मन में अद्भुत आनन्द और शान्ति का वेग उत्पन्न होता है और सभी ज्ञानेन्द्रियाँ प्रफुल्लित हो उठती हैं। शरीर के सभी विकार स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान को आदिकाल अथवा पुरातनकाल से ही महत्व दिया जाता है। समस्त ऋषि, मुनि ध्यान के द्वारा ही भगवान के दर्शन पाने में सफल हुए हैं। इसीलिए श्री विश्वशान्ति आश्रम में ध्यानयोग पर विशेष महत्व दिया गया है। अपने अराध्यदेव में ध्यान लगाने के लिए बहुत ही सरल विधि इस आश्रम में बतायी जाती है कि कैसे समस्त इन्द्रियों को एकाग्रचित करके अपने मनोभाव को अराध्यदेव अथवा भगवान में केन्द्रित करें। ऐसे दिव्य ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए आश्रम के सेवक विश्व के हर परिक्षेत्र में निष्काम भाव से प्रयासरत हैं। विभिन्न दिव्य ज्ञान से भण्डारित ग्रन्थों का सेट श्री विश्वशान्ति आश्रम में उपलब्ध हैं, जिसे आसानी से प्राप्त कर ज्ञानार्जन किया जा सकता है। **ॐ शान्तिमय**

—श्रीमती सीमा सिंह

महान गुरुचरणानुरागिनी श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी के सन्दर्भ में

प्राचीन काल की महान नारियों में सती अनुसुइया, अरुन्धती, गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, मदालसा, कुन्ती, द्रौपदी, गान्धारी और भक्तिमती मीरा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी एवं बहन आनन्द निधि जी के विषय में मैंने इन्हें उनसे ऊपर ही पाया है और इनके विषय में अपने हृदयोद्‌गार प्रकट करने का अल्प प्रयास कर रहा हूँ। वास्तव में तो इनके गुणवर्णन करने की मुझमें कोई सामर्थ्य नहीं है, किन्तु ॐ आनन्दमय भगवान की असीम कृपा एवं उनकी प्रेरणा से ही कुछ लिखने की धृष्टता कर रहा हूँ। बहन जी का जीवन चरित्र अप्रतिम, अनुपम, अद्वितीय तथा वर्णनातीत है। मेरा उनके सन्दर्भ में कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा ही है।

श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी श्रद्धेय डॉ॰ आनन्दमोहन जी की छोटी बहनों में बड़ी थीं उनके पश्चात श्रद्धेया बहन आनन्दनिधि जी थीं। पूज्यवर डॉ॰ साहब को जब महापुरुष भगवान श्री सद्‌गुरुदेव जी का संयोग प्राप्त हुआ और श्री गुरुदेव भगवान द्वारा अपने दिये वचनानुसार डॉ॰ साहब के साथ ही निवास करने लगे तब बहन आनन्द स्वरूपा जी एवं बहन आनन्दनिधि जी भी डॉ॰ साहब के साथ ही रहने लगीं। उस समय उनकी अवस्था मात्र १५-१६ वर्ष की ही रही होगी। उसी समय में पूज्य डॉ॰ साहब का प्रयाग में पी॰ए॰सी॰ बटालियन चैथम लाइन, इलाहाबाद में चिकित्साधिकारी के रूप में नियुक्ति रही और यहीं पर उन्हें आवास भी मिला था। उनका आवास ही आश्रम के रूप में परिणत हो गया था। श्रद्धालुजन नित्य सत्संग करते तथा ध्यान आदि का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहता था। भगवत् प्रचार कार्य भी तीव्रगति से आरम्भ हुआ। ***श्रद्धेया दोनों बहनों ने अपने बड़े भ्राता डॉ॰ साहब के संरक्षण में गुरुदेव भगवान की सेवा एवं प्रचार-प्रसार, सत्संग संचालन में अपने को पूर्णरूपेण समर्पित कर दिया।*** लड़कियों के रूप में प्रचार कार्य में कुछ दिक्कत प्रकट हुई तो दोनों बहनों के सिर के बाल उतरवा दिये गये और वह धोती-कुर्ता पहनकर प्रचार करने लगीं और लोग उन्हें जान भी नहीं पाते थे कि ये लड़के हैं अथवा लड़कियाँ। आध्यात्म की स्थिति ऐसी बढ़ी कि उनके परिजन उन्हें घर ले जाने आये तो इन लोगों ने घर जाने से साफ मना कर दिया और कहा कि हम लोग डॉ॰ साहब के साथ ही रहेंगे। जैसा वह कहेंगे वैसा ही हम लोग करेंगे। तब तक अल्प समय में ही गुरुदेव भगवान की कृपाशक्ति का उन्हें पूर्ण अनुभव प्राप्त हो चुका था। ॐ आनन्दमय भगवान पर उन्हें पूर्ण भरोसा एवं उनकी शक्ति का अनुभव प्राप्त हो चुका था। इसी बीच पारिवारिक जनों का घोर विरोध और उत्पीड़न प्रारम्भ हुआ। बड़ी बहन जी को एक बार वे लोग पकड़ कर दिल्ली घर ले गये परन्तु जैसे ही उन्हें मौका मिला वह घर से भागकर प्रतापगढ़ का रास्ता पूछते-पूछते डॉ॰ साहब के पास पहुँच गयीं। तत्पश्चात परिजनों ने दो-तीन बार घर

गृहस्थी की समस्त सामग्रियों को ट्रकों पर लादकर उठा ले गये थे, परन्तु उन्हें ॐ आनन्दमय भगवान की कृपाशक्ति पर पूर्ण भरोसा था। वह किंचित भी विचलित नहीं हुयीं। पुन: अल्प समय में ही सम्पूर्ण गृहस्थी ज्यों की त्यों संग्रहीत हो जाती थी।

प्रयाग में उन्हीं परिजनों ने उन्हें एवं डॉ॰ साहब को विचलित करने एवं इस मार्ग से विरत करने के लिए श्री गुरुदेव भगवान एवं दोनों बहनों पर चारित्रिक आक्षेप करते हुए वाद दाखिल किये। कोर्ट के आदेशानुसार डॉक्टरी जाँच हुई और श्रद्धेया बहन जी लोगों को परम पवित्र पाया गया। अत: वाद असत्य एवं निराधार होने के कारण खारिज हो गया। बहन जी लोगों ने अपने केशों को उन्हें अर्पण कर दिये और कहा इन्हें ले जाओ और शादी-विवाह कर दो। यह उनके अनुपम त्याग एवं बलिदान की पराकाष्ठा थी। सांसारिक शक्तियाँ उन्हें किंचित भी विचलित नहीं कर सकीं। धन्य हो ऐसे बलिदान की और गुरु-कृपा की।

आज मानव समाज इस जीवन के परम लक्ष्य से भटक गया है। सांसारिक भोग-ऐश्वर्य में निमग्न हो रहा है। भगवान एवं भगवान की कृपा प्राप्ति के वास्तविक मार्ग का लोप हो रहा है। बनावटी, मनगढ़ंत सकामी साधन विधियों का आश्रय लेकर अल्पफल का भागी हो रहा है। त्रिविध तापों से जल रहे हैं। इनके निवारण का उसे कोई पथ नहीं मिल रहा है। जब कोई भगवत्मार्ग पर चलने की इच्छा करता है तो बनावटी चमक-दमक वेष भाषा वाले गुरुओं के जाल में फँसकर अपनी और अधिक दुर्गति करा डाल रहा है। भगवत्प्राप्त, तत्ववेत्ता, आत्मज्ञानी महापुरुषों का संयोग नहीं हो पाता क्योंकि ऐसे महापुरुष बनावट-वेषभाषा के झूठे दिखावे से सर्वथा विरत ही होते हैं और परम वैराग्यवान होते हैं। उन्हें तो प्रभु की अपार कृपा से ही पाया और जाना जा सकता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है–

पुण्यपुञ्ज बिनु मिलहिं न संता।
सत्संगति संसृति कर अंता।।

महान संस्कृत ग्रन्थों में लिखा गया है–

''महत्संगस्तु दुर्लभो, दुर्गमो, अमोघश्च''

बिना पुण्यपुञ्ज के महापुरुषों का संयोग नहीं होता और यदि संग प्राप्त हो गया तो आवागमन से सदा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

ऐसे महाभाग्यवान श्रद्धेय डॉ॰ साहब एवं श्रद्धेय बहन आनन्दस्वरूपा जी एवं श्रद्धेया बहन आनन्दनिधि जी के विषय में क्या लिखूँ जिन्होंने अपने जीवन सर्वस्व को अर्पण कर ॐ आनन्दमय भगवान के तत्व, लीला, रहस्य को भलीभाँति महापुरुष भगवान के साथ रहकर जाना और लोगों को जनाने के लिए जीवन को समर्पित कर दिया। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

सोई जानहि जेंहि देहु जनाई।
जानत-जानत तुमहिं तुमहिं होई जाई।।

श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी ने अपने किशोर वय से लेकर ८२ वर्ष की आयुपर्यन्त निरन्तर निष्काम भाव से महापुरुषों के आदर्श, उद्देश्य एवं आदेशों का पालन करते हुए अपना जीवन कृतार्थ किया और कितनों का जीवन कृतार्थ करने की प्रेरणास्रोत बनीं।

कुछ वर्ष पूर्व बहन आनन्दनिधि जी ब्रह्मलीन हुई फिर श्रद्धेय डॉ॰ साहब ने विगत वर्ष में शरीर त्याग किया और जनवरी २०१२ में श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी ने नश्वर शरीर का त्याग किया। वास्तव में यह भगवत्कार्य के लिए ही इस धरती पर आये थे और अपना एवं भगवान का कार्य करके गये। परम श्रद्धेय महापुरुष भगवान के साथ निवास करने वालों में चार विभूतियों में तीन ब्रह्मलीन हो गये और अब चौथे श्रद्धेय आनन्दकिरन जी वर्तमान में महापुरुष भगवान की आज्ञानुसार गठित श्री विश्वशान्ति आश्रम, ट्रस्ट त्रिवेणीपुरम् , झूँसी, इलाहाबाद के अध्यक्ष के रूप में विराजमान हैं और पूर्णरूपेण भगवत् कार्य, सत्संग, प्रचार-प्रसार का संचालन कर रहे हैं। इन चारों विभूतियों में कोई अन्तर नहीं रहा है। सभी जन पूर्णकृपा के पात्र थे तथा अपना जीवन भगवत्कार्य हेतु समर्पित किया था, इसलिए किसी प्रकार के भेद की किंचित भी आशंका की गुंजाइश नहीं है। भौतिक ढाँचा अलग-अलग ज़रूर था किंतु आन्तरिक स्थिति एक ही रही है।

इन पंक्तियों के लेखक को भी अपने विद्यार्थी जीवन सन् १९७२-७३ में हरिद्वार स्थित आश्रम धाम में उक्त पाँचों

विभूतियों के संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आश्रम में सभी के जीवन चरित्र पर एक-एक ग्रन्थ लिखें तो भी अधूरा ही रहेगा। आज मात्र श्रद्धेया बहन आनन्दस्वरूपा जी के गुण-चिंतन का अवसर मिला है। मैंने बहन-स्वरूपा जी को प्रात: से लेकर शयन पर्यन्त श्री गुरुदेव भगवान के खान-पान सेवा वस्त्रों के रख-रखाव और गुरु भगवान के साथ-साथ छाया की तरह समस्त लीलाओं के समय गुरुसमर्पण, निष्कामता, सुहृदता, समता, शान्ति, आनन्द का प्रत्यक्ष दर्शन होता था। महान् तेजस्वी स्वरूप का दर्शन सदैव प्रदान करती थीं। बहन जी मृदुभाषण, दया, कृपा, करुणा, वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति थीं। निरहंकारिता कूट-कूट कर उनमें भरी हुई थी। मुझ पर सभी की पूर्ण दया-कृपा सदैव रहा करती थी। सभी ने जो विशुद्ध प्रेम और सेवायें प्रदान किया उसका मैं आजीवन ऋणी रहूँगा।

अन्त में मैं परमश्रद्धेय गुरुदेव भगवान सहित श्रद्धेया बहन आनन्द स्वरूपा जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए सादर चरणारबिन्दों में पुष्पाञ्जलि अर्पण करता हूँ। समस्त पूज्यजनों के चरणों में बारम्बार प्रणाम एवं ॐ आनन्दमय अनुरागी महाभाग्यवानों के चरणों में भी बारम्बार नतमस्तक प्रणाम करता हूँ।

लघु सेवक

दीनानाथ आनन्दमय

अ॰प्रा॰ सहायक निबन्धक, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

समय का महत्व

खोई हुई सम्पदा परिश्रम से पुन: प्राप्त की जा सकती है। भूला हुआ ज्ञान अध्ययन से पुन: प्राप्त हो सकता है, गँवाया हुआ स्वास्थ औषधिओं एवं संयम से लौटाया जा सकता हैं, परन्तु नष्ट किया गया समय तो सदा के लिए चला जाता है। अत: भूत भविष्य की अनावश्यक चर्चा करते रहना व्यर्थ है।

जो शेष समय है उसे महत्व पूर्ण कार्यो में लगाते रहना चाहिये। अन्यथा समय निकल जाने पर भारी पश्चाताप करना ही रह जाता है। जिन्होने समय का महत्व समझा है वे ही संसार में महापुरूष कहलाये हैं। अत: वर्तमान के समय का सदुपयोग करें, समय को व्यर्थ न गँवाकर ॐ श्री प्रभु पिता जी की भक्ति में अर्थात ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान को धारण करने में, एवं श्रेष्ठ सेवा-कार्यो में लगाने में ही मानव जीवन की सार्थकता है।

समय के महत्व को समझते हुऐ आलस्य रहित होकर प्रेम-पूर्वक अपना कर्तव्य करते हुऐ हर समय ॐ आनन्दमय भगवान का स्मरण-ध्यान करें और श्री गीता जी व श्री विश्वशान्ति आदि शास्त्रों के अध्ययन में व सत्संग में और सत्य कार्यो में अपने समय को लगावें। भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा!

सेवा में,
संपादक महोदय,
'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' वार्षिक पत्रिका

मुझे यह जानकर अतीव आनन्द की अनुभूति हो रही है कि मानव जीवन को नैतिक मूल्यों की ओर ले जाने वाली 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' स्मारिका २०१२-१३ का प्रकाशन होने जा रहा है। मैंने स्मारिका २०११-१२ के अंक का बड़े ही ध्यान से अध्ययन किया है। स्मारिका के अध्ययन से यह आभास हो रहा है कि जिस संस्था के द्वारा यह पत्रिका प्रकाशित की जा रही है उसके द्वारा मानव कल्याण हेतु कितना महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी लोभ एवम् स्वार्थ के किया जा रहा है, आज के युग में इसका उदाहरण दुर्लभ है। इस संस्था के द्वारा जो शिविर लगाए गए हैं, उनसे प्रभावित शिक्षकों तथा छात्रों के विचार इस स्मारिका के माध्यम से ज्ञात हुए, जिनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह संस्था मानव मन को अपने सत्संग के द्वारा कितना प्रभावित कर रही है।

मैं इस स्मारिका के अंक २०१२-१३ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कर रहा हूँ तथा आशा करता हूँ कि पूर्व की भाँति यह अंक भी आध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार के रूप में सामने आयेगी और लोगों के अंधविश्वास एवं ढोंग आदि को दूर करेगी। ॐ शान्तिमय

–प्रो॰ महेश सिंह
पूर्व सदस्य- उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उ॰प्र॰।
प्रबन्धक- सरयू प्रसाद सिंह इण्टर कॉलेज, हण्डिया, इलाहाबाद।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' वार्षिक पत्रिका सम्पूर्ण ज्ञान से परिपूर्ण है, जिसमें वर्णित ज्ञान सम्पूर्ण मानवजन की कल्याणदायिनी है। इसमें दिये गये अनुभव से आश्रम के ज्ञान और उसके प्रभाव की महत्ता साबित होती है। आज के युग में सत्यमार्ग पर चलना अति कठिन है, लेकिन इस पत्रिका में दिये गये ज्ञान को जीवन में धारण करने से यह कठिन मार्ग भी सुगम बन सकता है। हमें भगवद्प्रेमियों से आशा है कि वे ऐसे ही हम जैसे साधारण मानव को अपने ज्ञान से समय-समय पर ज्ञानरूपी गंगा से नहवाते रहें।

–सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव
स्पेशल ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी), इलाहाबाद।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' स्मारिका-२०११-१२ का अंक नन्द लाल सिंह के माध्यम से मुझे पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस संसार में मनुष्य जो भी कार्य या उद्यम कर रहा है, अपनी सुख और शान्ति के लिये कर रहा है, परन्तु भौतिक उपलब्धियों से वास्तविक शान्ति एवं आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। इस स्मारिका में अध्यात्म एवं योग आदि के व्यवहारिक मार्ग पर चल कर वास्तविक सुख शान्ति प्राप्त किया जा सकता है।

इस पत्रिका में विद्वद्जनों ने अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर मार्ग दर्शन किया है जो कि जन-साधारण के लिए आनन्द एवं शान्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मनुष्य जो बनना चाहता है और जो बन पाता है दोनों के बीच भयंकर असंतुलन है जिसके कारण समाज में हर जगह अशान्ति फैली हुई है। अशान्त जीवन आनन्दमय नहीं हो सकता। पत्रिका में दिये गये लेखों से मनुष्य अपने मन को नियंत्रित कर द्वन्द रहित हो सकता है तभी सच्चा आनन्द एवं सच्ची शान्ति मिल सकती है।

–एम॰एल॰ यादव
अधिशासी अभियन्ता– लोक निर्माण विभाग उ॰प्र॰
१३८७-ख, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम, 1/13 त्रिवेणीपुरम् झूँसी, इलाहाबाद की तरफ से मुरादाबाद लोदीपुर के श्री चिरंजीलाल इण्टरमीडिएट कॉलेज में दिनांक 25 नवम्बर 2011 से 27 नवम्बर 2011 तक चले तीन दिवसीय ध्यान योग शिविर में उपस्थित छात्र-छात्राओं और अध्यापकों के अनुभव, जो उन्होंने उस सत्संग के बाद जीवन में घटित अनुभव के सुखानुभूति को लिख भेजा है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मै शशी कुमार अपने को बहुत खुशनसीव समझूगाँ कि मुझे इस तीन दिवसीय सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ तथा मैं इस महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का बड़े प्रेम से उच्चारण करता हूँ तथा अपने मन में इस मन्त्र का जाप करता रहता हूँ और इससे जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है तथा मस्तिष्क में अपने को अच्छा महसूस करता हूँ चिरंजीलाल इन्टर कॉलेज मे चले तीन दिवसीय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के सत्संग से मेरे दिमाग में बहुत खुशी महसूस हुई तथा इस सत्संग उपस्थित भगवन् जन को मैने देखा, उच्चारण करते हुए वे बहुत मीठे स्वर में इस सत्संग के लाभ को बताते थे। मुझे इस मंन्त्र का जाप बहुत अच्छा लगता है तथा इसका जाप हर समय करता रहता हूँ इससे में दिमाग मे सुख-शान्ति मिलती है। एक बार मेरी इच्छा त्रिवेणीपुरम, इलाहाबाद आश्रम आने की है।

–शशी कुमार प्रजापति, कक्षा-11

हिंसक आततायी प्राणियों का विनाश करना वैर-द्वेष के अन्तर्गत नहीं है। तथा सूपनखा वाली, रावण-कुल अथवा कौरव-दल जैसे तामसी मनुष्यों को यथा-शक्ति दण्ड देना

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

महापुरूष भगवान आपकी जय हो। जब से मैने इस विद्यालय में प्रवेश लिया है, तभी से मैने अपने दैनिक जीवन में श्री गुरू वन्दना प्रातः काल विद्यालय की प्रेयर में उच्चारण करता हूँ तथा साथ ही मैं नियमानुसार महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का उच्चारण करता हूँ। और मुझे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप बहुत ही अच्छा लगता है। इस मंत्र से मेरे मन में शान्ति उत्पन्न होती है। और इस मंत्र को हर समय जपता हूँ। यह एक ऐसा मंत्र है जिससे हर समय, हर जगह आनन्द ही आनन्द और शान्ति ही शान्ति मिलती है। एक बार जब मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के आश्रम झूँसी त्रिवेणी पुरम् इलाहाबाद में अपना पेपर देने के लिए गया। तब मैने आश्रम में देखा तो आश्रम में आनन्द ही आनन्द और शान्ति ही शान्ति थी। मैं यह देखकर बहुत खुश हुआ और मन में अच्छे विचार आने लगे। मेरे ऊपर तो ॐ आनन्दमय भगवान की ऐसी कृपा हुई कि मेरा मन वहाँ से घर आने के लिए कर ही नहीं रहा था। वहाँ के गुरूजन बहुत ही अच्छे थे। हमारे स्कूल के नरेश जी भगवन जी तो बहुत ही अच्छे लगते है, क्योंकि वह अपने स्कूल में 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जाप कराते है। और स्कूल में सत्संग भी कराते है। जब मैं सत्संग सुनने के लिए आता हूँ वह मुझे अच्छी-अच्छी बाते गुरूजनों के बारे में बताते हैं और जब हमारे स्कूल मैं तीन दिन लगातार सत्संग हुआ था तब मैं प्रतिदिन सत्संग सुनने के लिए आया था और मुझे सत्संग सुनने से बहुत आनन्द और शान्ति प्राप्त हुई। जब मैं सत्संग में बैठा था तब मुझे सत्संग सुनने में बहुत आनन्द आ रहा था। और मैं हर समय इस महामंत्र का जाप करता हूँ।

–विपिनसैनी–11

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री महापुरूष भगवान आपकी जय हो, भगवन् श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ और श्री महापुरूषों का जो दिव्य ज्ञान है, बहुत ही अनोखा है। जिसका कोई भी मुकाबला पूरे विश्व में नहीं है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में, महापुरूषों का ज्ञान तो सारी उन्नतियों का एक निष्काम साधन है। ॐ आनन्दमय प्रभु जी कृपा से ग्रन्थों का स्वाध्याय और अन्य ज्ञान का अनन्त सागर दे दिया है। शान्तिमय भगवान की कृपा से उनके बचनों का प्रभाव मुझ पर पड़ने लगा। मैंने अपनी कामनाओं और क्रोध पर अंकुश लगाने का प्रयास करने लगा हूँ, अब कामनाएँ उठती है परन्तु पूरी न होने पर दिल दुःखता और क्रोध पर भी काफी नियंत्रण करने का प्रयास कर रहा हूँ। अगर क्रोध आता भी है तो कोई अद्रश्य शक्ति उसके बढ़ने से रोक लेती है और वातावरण विषाक्त होने से बच जाता है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जाप जब से करने लगे हैं तब हमे अपार आनन्द के साथ मानसिक शान्ति भी मिलने लगी और हमारे सभी कष्ट धीरे-धीरे दूर होने लगे। हमारे शरीर मे एक विलक्षण परिवर्तन होने लगा सभी कष्ट स्वतः दूर होने लगे। इस महामंत्र के जाप से नये रूप से रक्त का संचार होने लगा और हमारा शरीर ऊर्जावान होता जा रहा है।

मैं हमेशा इस मंत्र का जाप करता हूँ। और शान्ति प्राप्त करता हूँ। मेरा छात्र जीवन सुखमय शान्तिमय आनन्दमय से भरा है जिसमे मैं इस मंत्र का धन्यवाद तथा निरन्तर स्मरण करता हूँ।

–ब्रहनपाल सिंह- कक्षा-12

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब से मैंने इस विद्यालय में प्रवेश लिया हैं। तभी से मैंने दैनिक प्रार्थना में गुरू वन्दना का प्रतिदिन उच्चारण करता हूँ। तथा साथ में नियमानुसार 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का उच्चारण भी करता हूँ। इस मंत्र का उच्चारण करने से वास्तव में मेरे मन को शान्ति मिलती है।

हमारे विद्यालय में श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग की शाखा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ज्ञान योग शिविर में मैं प्रतिदिन प्रातः उपस्थित हुआ इस तीन दिवसीव ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे सुख शान्ति का अनुभव हुआ और मेरे मन को असीम शान्ति मिली जब मैंने भगवन् जी से मंत्र जाप सुना। उनकी वाणी से मेरे मन में प्रकाश का आगमन हुआ और जीवन को नई रोशनी प्राप्त हुई। छात्र जीवन में मन का एकाग्र होना अति आवश्यक है। पहले अध्ययन के समय मेरा मन इधर-उधर भटकता था परन्तु शान्तिमय भगवन के ध्यानमय महामंत्र से अपना समय तथा मन में एकाग्रता स्थापित हुई और जीवन को नई दिशा प्राप्त हुई। मैने आश्रम के विषय में बहुत सुना हैं। मेरी अर्न्तभावना है कि मन को शान्त करने के लिए यही उपयुक्त स्थान है। मेरी इच्छा है कि मैं एक बार आश्रम जाऊँ तथा वहाँ के सभी देवी-पुरूषो के साक्षात दर्शन कँरू।

मैं प्रभु जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपनी कृपा दृष्टि मुझ पर बनाये रखे तथा आश्रम में बुलाने का अवसर प्रदान करें।

–शशी सिंह सैनी - कक्षा 11

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं कक्षा 11 का छात्र हूँ मेरा नाम मनवीर सिंह है मैं चिरंजीलाल इन्टर कॉलेज में जब से प्रवेश लिया है तभी से दैनिक श्री गुरू वन्दना प्रातः काल विद्यालय प्रेयर में उच्चारण करता हूँ साथ-साथ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र को हर समय जपा करता हूँ इस मंत्र से वास्तव में मेरे मन को शान्ति मिलती है। एक बार जब मैं झूंसी इलाहाबाद गया था तो वहां मैंने देखा कि आश्रम में बहुत अच्छे गुरूजन तथा उनके विचार हैं। वहाँ के सुन्दर वातावरण को देखकर मेरे मन में अच्छे विचार आये तभी से मैं भी उसी आश्रम में रह कर भगवत उपासना में मग्न रहने लगा। योग सिद्ध महामंत्र का जाप करने से मन को बड़ा आनन्द मिलता है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र को बड़े प्रेम के साथ जपना चाहिए इससे हमारी मानसिक शक्ति प्रबल तथा हमारे शरीर निरोगी बनता है। उस आश्रम में बहुत गुरूजन हैं वे सदा इस पाठ का स्मरण करते हैं तभी से मेरे मन को शक्तिदायक मनोच्चारण करने लगा हूँ मंत्र से वास्तव मे मन को शान्ति मिलती है तथा मुझे विद्यलय मे जब उच्चरण करने के लिए बुलाया गया तब मुझे बहुत आनन्द ही आनन्द महसूस हुआ। जब गुरू जन उच्चारण कराते हैं तो मैं बड़े प्रेम से सुनता हूँ। जब तीन दिवसीय सत्संग हुआ तब मेरे मन को अच्छा आनन्द प्राप्त हुआ मैं इस महामंत्र का जाप पढ़ते-लिखते समय भी करता रहता हूँ। मन मे एक बार इलाहाबाद आश्रम जाने की है मैं वहां पहुँचकर अपने मन में आनन्द ही आनन्द प्राप्त करूँगा। मन सदा इसी में लगा कर रखूगाँ साथ-साथ उच्चारण भी करता रहूगाँ। मैं और अधिक से अधिक इस महामंत्र को अपने मन में हर समय जपता रहूगाँ। भविष्य में मेरा ज्ञान और भी बढ़ेगां।

–मनवीर सिंह कक्षा- 11

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं जौली सागर अपने को धन्य, भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज लोदीपुर की ओर से विद्यालय में चले तीन दिवसीय सत्संग ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। हमारे विद्यालय में सत्संग के प्रारम्भ से ही हमें शान्ति का अनुभव होने लगा। सत्संग में आये सभी महानुभावो ने हमे सत्य का ज्ञान कराया और आनन्दमय प्रभु की असीम कृपा दृष्टि के विषय में सप्रेम बताया मुझे इस सत्संग के माध्यम से बहुत शान्ति का अनुभव हुआ। मेरे हृदय में भी अनेको परिवर्तन हुए अब मैं शान्ति का अनुभव अपने जीवन में करने लगी हूँ। शान्तिमय भगवान के मार्ग पर चलने से मेरे मन के सभी संशय-भ्रम दूर हो जाते है एक छोटा सा अनुभव जिसने मुझे शान्ति का मार्ग दिखाया। इस महामंत्र का जाप और ध्यान करने से हमारे सारे कष्टो के साथ-साथ मानसिक विकारो से मुक्ति मिल गई। जब से में इस महामंत्र का जाप और ध्यान कर रही हूँ तब से मुझे अपार शान्ति प्राप्त हो गई है। इस महामंत्र का आश्रय लेकर एवं विश्वशान्ति सत्संग के सद्वचनों को जीवन में अपनाकर हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते है। ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''

कु0—जौली सागर - अध्यापिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैने इस विद्यालय में जब से प्रवेश लिया है। तभी से दैनिक श्री गुरू वन्दना प्रातः काल विद्यालय में मैं प्रेयर उच्चारण करती हूँ। तथा साथ में नियमानुसार महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का उच्चारण करती हूँ। इस मंत्र से वास्तव मन को शान्ति मिलती है तथा मुझे विद्यालय के बड़े सर जब ज्ञान उच्चारण कराते है तब मैं बड़े प्रेम से मन लगाकर सुनती हूँ। मैं ध्यानपूर्वक मन ही मन में इस महामंत्र का उच्चारण करती हूँ। मेरे मन को बहुत शान्ति मिलती है। जब हमारे विद्यालय में तीन दिवसीय सत्संग हुआ था। तब मन को बहुत शान्ति मिली थी। मेरी इच्छा एक बार आश्रम जाने की है। आशा करती हूँ कि भविष्य में मेरा ज्ञान और बढ़ेगा। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

—अंजू सैनी- कक्षा- 11

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं सोनिया सागर अपने को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ मुझे तीन दिवसीय चले इस सत्संग में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र से मुझे बहुत शान्ति प्राप्त हुई है। इस सत्संग से मेरे मन में बहुत आनन्द मिला। इस सत्संग का अवसर मेरे लिए बहुत अच्छे ढंग से प्राप्त होता है इससे हमारे मन में शान्ति और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय से मुझे सीख मिली है। यह मेरा सौभाग्य था कि यहां आकर इस मंत्र के सत्संग का बहुत अच्छा अनुभव कर रही हूँ। इससे बहुत आनन्द प्राप्त हुआ कि मैं एक प्रकार से भक्ति में मन लगाकर अपने को बहुत खुश नसीब समझती हूँ तथा इस महामंत्र से मेरे शरीर में बहुत शान्ति का प्रभाव पड़ा। मैं इस मंत्र का उच्चारण बहुत प्रेम के साथ करती हूँ। तथा सत्संग का आयोजन जब चिरंजालाल इन्टर कॉलेज में जब चला तो मैने इसमें बाहर से आये हुए अतिथि सभी महाजनों ने इस सत्संग का भनुभव कराया। आनन्दमय प्रभु की असीम दृष्टि के विषय में सप्रेम बताया मुझे इस सत्संग के माध्यम से बहुत शान्ति का अनुभव हुआ। मेरे हृदय में भी अनेक परिवर्तन हुए अब मैं शान्ति का अनुभव अपने जीवन में करने लगी हूँ। शान्तिमय भगवान की मार्ग पर चलने से मेरे को सभी संशय-भ्रम दूर हो जाते है इस महामंत्र का जाप और ध्यान करने से हमारे सारे कष्टों के साथ-साथ मानसिक विकारों से मुक्ति मिल गई। जब से इस महामंत्र का जाप और ध्यान कर रही हूँ। तब से अपार शान्ति प्राप्त होने लगी है। इस सत्संग का आशय लेकर हम अपने जीवन को बहुत सार्थक बना सकते है इससे हमें जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त करती रहूगी।

—सोनिया सागर- कक्षा- 11

जो-जो सकाम भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस-उस भक्त की श्रद्धा मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ।

—गीता, अ० ७ श्लोक २१

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ये शब्द हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करते है। मुझे भी चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज की ओर से इस दिव्य व आलौंकिक शिविर में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ जैसे ही मैं अपने विद्यालय जहाँ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय शिविर का आयोजन हुआ था। वहाँ पहुँची तब मुझे एक अद्भुत शान्ति का अनुभव हुआ वहाँ पर दिये गये दिव्य प्रवचनों व ध्यानयोग ने मुझे व हमारे विद्यालय परिवार को ईश्वर तथा उसकी असीम कृपा शाक्ति का अनुभव कराया। इस मंत्र का उच्चारण करने के लिये किसी विशेष समय की कोई आवश्यकता नही है। जब भी आप को समय हो आप इसका जाप कर सकते है। इस मंत्र के बोलने से आप अपने अन्दर एक नई ऊर्जा का अनुभव करेगें।

जब मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप किया तो मेरे मन में एकाग्रता का अनुभव होने लगा इस मंत्र को जपने से हमारे मूल्यवान समय में कोई बाधा नही आती है। इस मंत्र में एक ऐसी शक्ति है जो मुझे आत्मशक्ति प्रदान करती है। आत्मशक्ति के कारण ही हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति होती है। जो कि सभी के लिए महत्वपूर्ण है। हमारा विद्यालय परिवार पुनः ऐसे ही कार्यक्रम का हिस्सा बनकर ज्ञान अमृत की कुछ बूँदे अर्जित करने के इच्छुक हैं। अब ॐ आनन्दमय महानंत्र मेरी एक शक्ति बन चुकी है। मैं अपने कर्त्तव्य कर्मो के आरम्भ में इस मंत्र का मनन करती हूँ। इस मंत्र के जाप से मेरे अन्दर अक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। और मैं अधिक उत्साह से कार्य करती हूँ।

आनन्दमय प्रभु पिता के श्री ग्रन्थों से मधुर प्रवचन पढ़कर परमानन्द की अनुभूति हुई। एक ऐसी अनुभूति जिसे मैं कभी न भूलना चाहूँगी ॐ शान्तिमय।

–शिवानी विश्नोई- अध्यापिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब मैंने इस विद्यालय द्वारा अपने इस ध्यान योग कार्यक्रम का हिस्सा बनी तो मुझे ध्यानयोग वातावरण में मुझे बहुत सुख और शान्ति का अनुभव हुआ। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' के जाप से हमारे हृदय की इन्द्रियों को शान्ति और ज्ञान प्राप्त होता है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' इस महामंत्र को जपने से हमारे मूल्यावान समय में कोई बाधा और रूकावट नही आती। इस महामंत्र में एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो एक विद्यार्थी को आत्मशक्ति प्रदान करती है। इस महांमंत्र का जाप प्रत्येक मनुष्य को अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर ईश्वर के ध्यानयोग में लगाना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के ध्यान से हमारे मन को शान्ति मिलती है। इस मंत्र का उच्चारण करने से मन की समस्त दुविधाएँ दूर हो जाती है। मैं प्रातः काल उठकर श्री गुरू वन्दना की प्रार्थना प्रतिदिन करती हूँ इससे हमें सच्ची प्रेमभक्ति का आनन्द प्राप्त होता है। इस महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को हर समय प्रत्येक कार्य करते हुये मन से मनन तथा वाणी से उच्चारण करने का अभ्यास करती हूँ। इस महामंत्र के विषय में सबसे अच्छी बात यह है कि हमें किसी भी समय की कोई समस्या नहीं है, और न ही किसी स्थान की इस मंत्र का जाप कभी भी कर सकते है। इस ज्ञान योग शिविर के दिव्य वातावरण की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य को अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए और मुझे वहाँ पर कुछ बाते ज्ञान की सीखने को मिली तथा इससे हमे अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। अन्त में मेरा आनन्दमय प्रभुपिता को प्रणाम/ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–रजनी सागर- अध्यापिका

स्मृति रहे। जो मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करने के उद्देश्य से अर्थात् अपनी इच्छा को पूर्ण करने की कामना से इस ब्रह्म-सृष्टि में किसी के साथ वैर-द्वेष करता है, वह वैर-द्वेष ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के साथ किया जाता है। दण्ड-दायक विधान धारा श्री गीता अध्याय १६ श्लोक १८-१९ में प्रकाशित है

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ज्ञानयोग शिविर में मुझे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। उस शिविर में बहुत से ज्ञानी सन्त आए हुए थे। गुरूजी में अपनी वाणि द्वारा परमसत्ता के प्रति प्रेम और भाव उत्पन्न कराया वे ही ईश्वरीय सत्ताको आनन्दमयी प्रतीत कराते है। उन्होंने ध्यान योग को मुख्य आधार बतलाया है। परमात्मा से सयुक्त होकर मुक्ति की ओर आग्रसर होना है। मगर माया से लिप्त हुए मनुष्य योग को भी शरीर स्वस्थ रहने तक ही सीमित कर लेते है। आनन्दमय प्रभु पिता के मुख से मधुर प्रवचन सुनकर परमआनन्द की अनुभूति हुई। उनके द्वारा बताये गये ईश्वर प्राप्ति के जितने भी साधन है। उनमें भजन सर्वश्रेष्ठ है। भजन मनसा वाचा कर्मणा से होना चाहिए। भगवद् भाव से की हुई सेवां मन का भजन है। संत व गुरूजनों के बिना आत्माज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता आत्म ज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान व ध्यान नहीं है।

आत्म-ज्ञान, धर्म, काम, और मोक्ष बिना पुरुषार्थ के मिलना असम्भव है इसलिए सच्चे गुरू महापुरूषों संतो की शरण अति आवश्यक है। संतो का सत्संग मिलना कठिन है। संत समागम के लिए मानव को प्रयासरत रहना चाहिए क्योंकि संत महात्मा सद्गुरू की एक ऐसी सीढ़ी है जिसके द्वारा मनुष्य लक्ष्य तक पहुँच सकता है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ज्ञान योग शिविर में मुझे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस मंत्र का उच्चारण करने से मन में शान्ति का अनुभव होता है। हमें तो सिर्फ कर्म करना है फल तो भगवान को देना है बस जरूरत है सच्चे हृदय से परमात्मा में मन लगाने की 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–शोभना विश्नोई- वी0ए0

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप किया तो मेरे मन को बहुत शान्ति मिली इस मंत्र को जपने से हमारे मूल्यावान समय में कोई बाधा नही आती है। इस मंत्र में एक ऐसी शक्ति है, जो मुझे आत्मशक्ति प्रदान करती है। आत्मशक्ति के कारण ही हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति होती है, जो कि सभी के लिए महत्वपूर्ण है।

बहुत अधिक बोलने से व्यर्थ और असत्य शब्द निकल जाते है। इसलिए कर्म क्षेत्र में जितना कम बोलने से काम चले, उतना ही कम बोलना चाहिये और अपने सच्चे मन से ॐ आनन्दमय प्रभु का स्मरण करते रहना चाहिये।

–अनीता पाल- अध्यापिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं बी0ए0 भाग एक की छात्रा हूँ। जब चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज में 26, 27, 28 नवम्बर को सत्संग का आयोजन किया गया था तब मैं इस सत्संग में गई तो मुझे ऐसा लगा कि वहाँ पर शान्ति ही शान्ति छायी हुई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों जैसा कि में किसी एकान्त स्थान पर बैठी हुयी हूँ चारो तरफ आनन्द ही आनन्द छाया हुआ प्रतीत हो रहा था। इससे पहले मैं किसी शिविर में उपस्थित नही हुयी थी लेकिन इस सत्संग में आने से मेरे मन को एकाग्र शान्ति मिली। इस मंत्र को जपने के लिए किसी स्थान या समय की आवश्यकता नही है। इस मंत्र को हम किसी भी समय अपने मन में जप करते रह सकते हैं। इस मंत्र को जपने से हमारे दुःख दूर हो जाते है। जो इस मंत्र को मन से मनन करेगा उसके प्रत्येक काम सफल हो जायेगें। कर्म करना मनुष्य के हाथ में है। फल देना भगवान के हाथ में हैं। ॐ शान्तिमय

–रिंकी- अध्यापिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ तथा मैं बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा भी हूँ। चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज में 26, 27, 28 नवम्बर को सत्संग का आयोजन किया गया था तो मैं उस सत्संग में सम्मिलित हुई थी। उस सत्संग में 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का उच्चारण सुनकर मन को बहुत शान्ति का अनुभव हुआ उस दिन वहाँ पर विद्यार्थी जीवन के लिये महानुभावों द्वारा दिये गये उपदेशों से मुझे अच्छा ज्ञान मिला। ज्ञान योग शिविर में बताये गये मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का मन में जाप करने से एकाग्रता बढ़ती है। ज्ञान योग शिविर में मुझे सबसे अच्छा क्षण तब प्रतीत हुआ जब हमें ध्यान योग करवाया गया। अब मैं यह कह सकती हूँ कि जो व्यक्ति ज्ञान योग शिविर में बतायी गई बातों का पूर्णतः पालन करेगा, वह अपने जीवन में कभी असफल न होगा।

–किरन सैनी, अध्यापिका

दम्भी-पाखण्डी, स्वाँगी वाचालों की ॐ आनन्दमय प्रभु पिता सहायता नहीं करते।

–ॐ आनन्दमय सूत्र से

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं जब विद्यालय में आई और मैंने सत्संग में प्रवेश किया तो मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। ऐसा लगा कि मैं हर सत्संग में जाँऊ। क्योंकि सत्संग में आने से मेरा मन प्रसन्न रहता है। गुरू की वाणी सुनने से आत्म की शुद्धी होता है। मन तृप्त हो जाता है। इसलिए मैं यही कहूँगी कि प्रत्येक प्राणी को सद्गुरू शरण में जाना चाहिए। उसके बताये मार्ग पर चलना चाहिए। सत्संग में जाने से मन शुद्ध रहता है तथा इन्द्रियों पर संयम रहता है। मन में अच्छे-अच्छे विचार आते है। सेवा भाव उत्पन्न होता है। अन्त में, मैं यही कहूँगी की सत्संग अवश्य करना चाहिए।

भजन

1- तू कर वन्दगी और भजन धीरे-धीरे ।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे ।।
सुने कान मेरे सदा सन्त वाणी
तू कर संत वाणी मनन धीरे-धीरे
तू कर संत वन्दगी और भजन धीरे-धीरे
2- दमन इन्द्रियो का तू करना चला जा
आयगा काबू मैं मन धीरे-धीरे
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे
3- तू दुनिया में शुभ कर्म करता चला जा
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे
तूकर वन्दगी और भजन धीरे-धीरे
सफर अपना आसान करता चला जा
तो छूटेगा आवागमन धीरे-धीरे
तू कर वन्दगी और भजन धीरे-धीरे

–श्रीमती पुष्पा गुप्ता - अध्यापिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

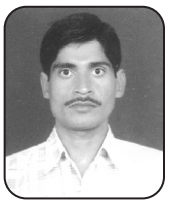

मैं भी शुरू में आम आदमी की तरह था। किन्तु जैसे-जैसे बाहर की दुनिया के सम्पर्क में आया तो मुझे भी अध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता का अनुभव हुआ। मैं बचपन से ही पूजा-पाठ तथा ईश्वर में विश्वास रखता चला आया हूँ। अपने घर पर समयानुसार ईश्वर की पूजा करता रहता हूँ। जिससे मुझे काफी सन्तोष मिलता है। परन्तु जब से मैं चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज के माध्यम से इस सत्संग के सम्पर्क में आया हूँ तब से मुझे महान शान्ति का अनुभव हुआ है। जब से मुझे 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र के बारे में जानकारी हुई है और इस महान सत्संग के बारे में जाना हूँ तथा इसको ग्रहण किया है, तब से और अधिक मन में शान्ति का अनुभव महसूस करने लगा हूँ। यह मंत्र बहुत लाभ दायक है। मन को शान्ति देने वाला है। यह मंत्र मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। मानो महान सत्संग ने भटके को रास्ता दिखाया है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र बहुत लाभकारी है। इसने मुझे अनेक कुमार्गो से बचाया है। तथा अच्छे मार्ग पर चलने को प्रेरित किया है। जब से मैने इस मंत्र का जाप करना शुरू किया है, तब से मैंने अपने मन तथा घर में सुख शान्ति की अनुभव किया है । इस दिव्यकारी मंत्र को जपने से मनुष्य को मन तथा आत्मा को शान्ति मिलती है। मैं भी इस मंत्र को सुनकर धन्य हो गया हूँ। विद्यालय के अन्दर सत्संग का आयोजन किया गया जिसे सुनकर मन को बहुत शान्ति मिली। अब मेरी यही इच्छा है कि आगे होने वाले सभी सत्संगो में अधिक से अधिक भाग लू।

–रामकिशन सिंह सैनी- अध्यापक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरा मन संसारिकता मे काफी व्यस्त था, परिणाम यह था कि मैं काफी व्यथित, असन्तुष्ट तथा परेशान थी। मन सदैव चंचल, निराश व हताशा से भरा रहता था। जीवन मुझे अन्धकारमय तथा कटु प्रतीत होता था। संसार की लोभ माया मे मैं काफी रमचुकी थी जिसका परिणाम मैं भुगत ही रही थी। मैने आध्यात्मिकता की ओर कोई प्रयत्न नही किया। मेरा लक्ष्य मात्र धन कामाना तथा झूठ से भरे आचरण वाला व्यवहार करना ही था, परन्तु मेरा जीवन, केवल एक दिन श्री भगवत ॐ आनन्दमय तथा ॐ शान्तिमय के आध्यात्मिक ध्यान में उपस्थित होने से काफी सुधर गया। ध्यान योग का मेरे मनविरल पर ऐसा प्रभाव हुआ कि ऐसा महसूस हुआ कि पृथ्वीलोक की बजाय मैं कहीं स्वर्ग जैसी शान्ति में आ गयी हूँ। मन को शान्ति तथा सन्तुष्टि का अनुभव हुआ । जो मन अन्य विषयों मे लीन रह कर इन सारी बातो से अलग तथा खोयी-खोयी थी, अब वह आध्यात्मिकता का गूढ़रहस्य समझ गयी थी। मैंने महसूस किया कि यह सब प्रभु पिता की

ही कृपा है, जो मैं ऐसी शान्ति तथा सरलता को प्राप्त कर पायी ।मैने इस सत्संग द्वारा अनुभव किया कि परमपिता पूज्य श्री प्रभुपिता ॐ आनन्दमय ॐ शानितमय ही सच्चे सुख दायक तृप्तिदायक व अपार आनन्द के भण्डार है। मैं पूर्णतया श्री प्रभुपिता के श्री चरण कमलों में नतमस्तक हूँ तथा भगवान से प्रार्थना है कि मेरा शेष जीवन श्री प्रभु पिता जी के आदेशों व नियमों का पालन करते हुए व्यतीत हो।

–श्रीमती - मिथलेश वर्मा
(छात्रा की माता, उम्र 53 वर्ष)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हम बचपन से ही ॐ श्री महापुरूष भगवान के सत्संग में सम्मीलित होकर बड़े प्रसन्न रहते थे, परन्तु कुछ दिन पश्चात् स्थान व संग परिवर्तन से भजन साधना छूट गया। भजन साधना छूटने से जीवन में दुःख, चिन्ता, अशान्ति बढ़ने लगी । सामाजिक कलह, क्लेश बहुत बढ़गया। बुद्धि इतनी भ्रमित हो गयी कि कोई रास्ता नही सूझता था, क्या करें, क्या न करें। इस सब अशान्ति से बचने के लिये कई मंत्रों का जाप किया, परन्तु कोई लाभ नही मिला, परेशानी ज्यों की त्यों रही। इस बीच अपने विद्यालय चिरंजीलाल इण्टर मीडिएट कॉलेज में आयोजित हुए श्री सत्संग में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हालंकि मैं काफी कमजोरी महसूस कर रहा था। ठीक प्रकार से बैठने में भी काफी दिक्कत पेश आ रही थी। परन्तु कुछ ही क्षणों में मन मे ऐसी अनुभूति हुई कि मानो मेरे पूरे शरीर पर मरहम का छिड़काव कर, शान्ति की हवा चल उठी हो, तब मुझे अपनी भूल तथा गलती का स्मरण हुआ तथा मैंने संकल्प लिया कि श्री 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र को हर समय मन से जपूँगा। इसके प्रभाव से मेरी सारी समस्यायें अपने आप ही समाप्त होती चली गयी। अब मैं अपने आप को सांसारिक तत्वों से अलग व प्रफुल्लित महसूस करता हूँ। प्रभु पिता की कृपा से सब कुछ ठीक ठीक है। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि इस संसार रूपी चक्रव्यूह से निजात दिलाने वाले एक मात्र प्रभु पिता ही हैं।

–गजेन्द्र कुमार

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

वर्ष 1984 में जब प्रथम वार घर से नाराज होकर हरिद्वार बाली रेलगाड़ी में बैठकर कनखल में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री आश्रम में रात के करीव 10 बजे पहुँचा तो मैं गेट के पास वनी कुर्सी पर बैठ गया उस समय मेरी उम्र लगभग 9से10 वर्ष की होगी बहन जी ने किसी सेवक को भेजकर बुलाया मैं भयभीत था। क्योंकि सामने वोर्ड पर लिखा था शरारती बालक आगे न पधारे। मुझे लगा कि मैं घर से नाराज होकर आया हूँ कही ऐसा ना कि मुझे पकड़कर मारने पीटने लगें और फिर धक्के मारकर वाहर कर दें। ये सब बातें मन में आरही थी। सेवा दार ने मुझे बहन जी के पास पेश किया और मैंने आप-बीती बताई। बहन जी ने एक सप्ताह श्री आश्रम में रखा मुझे एक सप्ताह में मेरे हृदय में मानो गागर में सागर जैसा ज्ञान प्राप्त हुआ। उस समय टेलिफोन या मोबाइल नही चलते थे बहन जी ने घर के पते पर पत्र भेजा। उसमें लिखा कि मान्यवर आप का पुत्र हमारे यहाँ आश्रम में सुरक्षित है आप के पुत्र की दिमागी स्थिति ठीक हो जायेगी तो हम उसे भेज देगें आप निश्चित रहें। उसके बाद से ही नियमानुसार भजन ध्यान पूजा स्मरण जो भी हो सका सो किया। वर्तमान समय में ॐ श्री प्रभु पिता जी ने मुझे जो सेवा सौंपी है वस वह ठीक प्रकार से नियमानुसार चलती रहे तथा भगवान का भजन, ध्यान, स्मरण, गुण, ज्ञान, जप, स्वाध्याय आदि की स्मृति सदैव बनी रहे।

–सेवक नरेश कुमार आनन्द- प्रबन्धक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब मैं इस विद्यालय में ध्यान योग शिविर के प्रातःकालीन शिविर में उपस्थित हुआ तो मेरे मन को बहुत शान्ति प्राप्त हुई। वैसे भी हमारे विद्यालय में दैनिक नियम के अनुसार प्रातः गुरु वन्दना का उच्चारण होता है। इससे भी मेरे मन को बहुत शान्ति मिली। हमें अपने गुरु की वन्दना सर्व प्रथम करनी चाहिए। गुरु-वन्दना से गुरु का आशीर्वाद बना रहता है। सब कार्यों में भी सफलता मिलती रहती है। मन और हृदय शुद्ध रहता है। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे पेट भरने के भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मा को शुद्ध करने के लिए भजन व सत्संग की आवश्यकता होती है।

जैसे-जैसे हमने सत्संग की ओर कदम बढ़ाये वैसे-वैसे ही हमें शान्ति प्राप्त हुई। हमारे हर कठिन से कठिन कार्य की सरलता से पूर्ण होने लगे। इसीलिए मेरा यह अनुभव है कि हर प्राणी को अध्यात्मिकता की ओर कदम बढ़ाने चाहिए। इससे गुरु की कृपा बनी रहती है। गुरु की कृपा से ही भगवान की प्राप्ति करने का रास्ता मिलता है।

–रमेश चन्द्र गुप्ता, अध्यापक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं चिरंजीलाल इण्टर कॉलेज का अंग्रेजी अध्यापक के पद पर अंशकालिक रूप से कार्यरत हूँ। मैंने अपने जीवन में काफी उतार चढ़ाव देखे हैं, इनमें से कुछ ने तो मुझे पूरी तरह से हिलाकर रख दिया था। मैंने अपने जीवन में कोई भी सत्संग का लाभ नहीं उठाया और न ही किसी सत्संग में सम्मिलित हुआ। ऐसी प्रभु की कृपा मानता हूँ कि अनेक विद्यालय में अध्यापन करने पर, मुझे ऐसा अवसर कहीं नहीं मिला कि मैं आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग ले सकूँ। परन्तु प्रभु की परम कृपा से ऐसा अवसर मुझे चिरन्जीलाल इण्टर कॉलेज लोदीपुर में प्राप्त हुआ, जिसके द्वारा मुझे काफी शान्ति प्राप्त हुई। ऐसी शान्ति की अनुभूति मुझे किसी अन्य कार्यक्रम में महसूस नहीं हुई, मैं यह सब ईश्वर की कृपा मानता हूँ कि मुझे ऐसा सुन्दर सत्संग प्राप्त हुआ। इस सत्संग द्वारा मेरे मन के अनेक विकार समाप्त हुए तथा मन को असीम सन्तोष व धैर्य प्राप्त हुआ। मेरी यही इच्छा है कि मैं भगवान श्री परम पिता ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय की चरण सेवा में जीवन पर्यन्त लगा रहूँ तथा सत्संग रूपी प्रसाद प्राप्त करता रहूँ। और प्रभुपिता की कृपा प्राप्त होती रहे।

–मोहर सिंह यादव, अंग्रेजी अध्यापक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैंने बचपन से आज तक कोई भी सत्संग या धर्म मिलन का लाभ नहीं उठाया। टेलीविजन पर भी अनेक सत्संग संगठनों को देखकर भी मन में नफरत का विचार व्याप्त रहता था। मन अनेक दुर्व्यसनों का शिकार था। मन अशान्त तथा अस्थिर था। ऐसा लगता था कि मानो सम्पूर्ण संसार मात्र छल का ही केन्द्र है। परन्तु एक रोज भगवन् श्री ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के श्री सत्संग में मुझे प्रभु पिता के दर्शनों का लाभ हुआ। ऐसा लगा मानों मैंने साक्षात ईश्वर को ही पा लिया हो मन जो काफी अशान्ति व चंचल था। अब वह पूर्व की भाँति चंचल नहीं है। मुझे प्रभु पिता की कृपा से काफी सन्तोष व शान्ति की प्राप्ति हुई। मन संयमित व निष्ठावान है।

मेरी तो यही कामना है कि प्रभु पिता के श्री आदेश व नियमों से मैं कभी विचलित न होऊँ तथा सत्कर्म करते हुए जीवन का निर्वाह करता रहूँ।

–हरि सिंह, क्लर्क

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं अपने को धन्य, भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे चिरंजीलाल में चले तीन दिवसीय सत्संग 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। हमारे विद्यालय में सत्संग के प्रारम्भ से ही हमें शान्ति का अनुभव होने लगा। सत्संग में आये सभी महानुभावों ने हमें सत्य का ज्ञान कराया और आनन्दमय प्रभु की असीम कृपा दृष्टि के विषय में सप्रेम बताया। मुझे इस सत्संग के माध्यम से बहुत शान्ति का अनुभव हुआ। मेरे हृदय में भी अनेकों परिवर्तन हुये। अब मैं शान्ति का अनुभव अपने जीवन में करने लगा हूँ। शान्तिमय भगवान के मार्ग पर चलने से मेरे मन के सभी संशय-भ्रम दूर हो जाते हैं। एक छोटा-सा अनुभव जिसने मुझे शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। इस महामंत्र का जाप और ध्यान करने से हमारे सारे कष्टों के साथ-साथ मानसिक विकारों से मुक्ति मिल गई। जब से मैं इस महामंत्र का जाप और ध्यान कर रहा हूँ तब से मुझे अपार शान्ति प्राप्त हुई है। इस महामंत्र का आश्रय लेकर एवं विश्वशान्ति सत्संग के एक वचनों को जीवन में अपनाकर हम अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।

–हरविन्दर सिंह, अध्यापक

जो मनुष्य ध्यानयोग–सेवा योग जनित आत्यिक अमृत का त्याग कर प्रेमी पदार्थों के संयोग से अपनी इन्द्रियों द्वारा पशुओं के सदृश राजसी प्रेम करते हैं उन मनुष्यों के हृदय में सर्व शक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी कामाग्नि प्रज्ज्वलित करते–रहते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

प्रभु पिताजी की असीम कृपा से मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम में लगभग दस वर्षों से आ रही हूँ। प्रभु पिताजी की अपार कृपा से प्रतिवर्ष महापुरुषों के दर्शन हो जाते हैं।

यहाँ आने पर मैंने अनुभव किया है कि मेरा मन समशान्त होता जा रहा है मन में किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष की भावना नहीं रहती, न ही किसी पर नाराज़गी रहती है। अगर क्रोध या द्वेष की भावना आती भी है तो शीघ्र ही प्रभुजी की कृपा से दूर होने लगती है। विपरीत परिस्थितियों में भी मन घबरा जाता है तो धीरे-धीरे ये अहसास होने लगता है कि इसमें भी कोई भलाई होगी। यह विश्वास दृढ़होता जा रहा है कि जो कुछ भी प्रभु पिताजी करेंगे उचित ही होगा और मेरे हित में ही होगा।

मैं प्रतिदिन सांयकाल पाँच बजे सत्संग के लिए जाती हूँ, जो मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। वहाँ जाकर हम सच्ची प्रेम भक्ति, भजन, ध्यान श्री गीता का ज्ञान पढ़ते हैं जो कि मुझे मानसिक शक्ति देता है, मन में स्फूर्ती बनी रहती है कितना भी मन निराश क्यों न हो वहाँ जाकर अच्छा लगता है आत्म शक्ति का विकास होता है।

प्रभु पिताजी की असीम कृपा से इस बार जुलाई माह में श्री विश्व-शान्ति आश्रम इलाहाबाद जाने का सौभाग्य मिला वहाँ हम एक सप्ताह ठहरे। वहाँ का वातावरण बहुत ही अच्छा था दोनों समय प्रातः सायं सत्संग होता था इसके अतिरिक्त सत्संग के एक घण्टे बाद पूज्य बड़ी बहन जी की अध्यक्षता में अन्य श्री ग्रन्थों का स्वाध्याय किया गया। ऐसा ज्ञान सुनने पढ़ने को मिला जो पहले कभी सुनने को नहीं मिला था।

सायं साढ़े चार बजे से साढ़े पाँच बजे तक आदरणीय किरन जी पूज्य आनन्दलता बहन जी की अध्यक्षता में ग्रन्थों का व श्री गीता का पुनः स्वाध्याय किया जाता था। ब्रह्मज्ञान (१,२) विश्व शान्ति ग्रन्थों के स्वाध्याय से हमें बहुत ही अच्छा लगा, बहुत कुछ सीखने को मिला। हमारी बुद्धि और मन पर इस चिन्तन-मनन का बहुत असर पड़ा। मन में हर समय इन बातों का चिन्तन चलता रहता है। उन्हीं बातों का और मन ही मन में इनका पालन करने का निश्चय करती रहती हूँ, कोशिश करती हूँ। प्रभु जी ने सबसे पहले अपना आचरण सुधारने की बात कही है। जिसके अन्तर्गत अपने जीवन में समता, सादगी, निष्कामिता, आज्ञाकारिता लाने का प्रयत्न करना है और क्रोध, कामना, अहंकार, ईर्ष्या आदि गुणों का त्याग करना है।

इस ज्ञान को धारण करने में हमें प्रयत्नशील रहना है। यदि आज हम सब मिलकर इस दिव्य ज्ञान को धारण करने में, उसका प्रचार करने में प्रयत्नशील हो जायें तो हमारा जीवन सुखी व आनन्दमय हो जायेगा। ॐ शान्तिमय

–सेविका
श्रीमती सुधा भण्डारी, (दिल्ली)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

हे प्रिय आत्मन् ! मनुष्य का यथा ज्ञान-शक्ति सेवा कार्यकरने में अधिकार है, परन्तु जड़-चेतन आदि प्रेमी पदार्थो का अध्यक्ष बन कर, आदेश दाता होने का अधिकार नहीं हैं

* हे प्रिय आत्मन् ! आदेश दाता बनने की ओर अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छ का नाम है कामः। अतः "कामसंकल्पवर्जिता" अन्यथा ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी प्रेमी-हितैषी मनुष्यों को द्वेषी-वैरी बना देते हैं, और वैरियो को दमन करने के ज्ञान और शक्ति का ह्रास कर देते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय, शरणम्

इस शुभ दिवस पर आपकी आज्ञा पालन करने की क्षमता मेरे अन्दर उत्पन्न हुई है। प्रभु मेरे जीवन में आपके द्वारा सभी कुछ निर्धारित होता रहता है। आप ही प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष इस जीवन के सभी कार्यों को सुचारु रूप से चला रहे हैं। आपकी दया से मन में अपूर्व शान्ति और धैर्य बनी रहती है। सदैव ॐ श्री प्रभु पिता के साथ-साथ भगवत् भाव की स्मृति बनी रहती है और भगवन जी मैं अपने बेटे को भी आपकी असीम कृपा के बारे में बताती रहती हूँ और हर समय अधिक से अधिक मंत्र जाप के लिए प्रेरित करती रहती हूँ। प्रभुजी मैं कुछ भी नहीं थी धूल में पड़ी हुई थी मेरा जीवन बर्बाद हो रहा था। आपने सद्गुणों को भरकर इसको सबके लिए और स्वयं् मेरे लिए उपयोगी बना दिया आपके पास तो भक्तों की कमी नहीं है परन्तु मुझ जैसे को आपकी शरण मिली, ये मेरे लिए आपकी दया का असीम प्रसाद है। आपकी स्मृति मात्र से मेरे समस्त संकट दूर हो जाते हैं। आपकी कृपा से मेरे समस्त सांसारिक कार्य जो की कठिन प्रतीत होता है आपकी स्मृति मात्र से पल भर में आसान हो जाता है। और मैं क्या लिखूँ मेरे जीवन में कुछ कष्ट ऐसे थे जिनका कोई समाधान नज़र नहीं आ रहा था परन्तु आपने समस्त संकटों को पल भर में दूर कर दिया है। अब आपसे प्रभु जी प्रार्थना है कि मेरी आँखों से जो अज्ञान रूपी अंधकार दूर हो गया है वो पुन: न छाने पाये, वाकी इस जीवन में आपके बताये हुए इस मार्ग पर सदैव आगे बढ़ती रहूँ और मैंने अपने जीवन के हर सुख दु:ख का मालिक सदैव आपको ही बना रखा है। और जब से मेरे विचार इस तरह से हो गये हैं मेरा जीवन सदैव प्रभु कृपा से भर उठा है। प्रभुजी आपकी शक्तियों का मुझे पल-२ अनुभव होता रहता है। मैने आपको गागर में सागर भरते हुए अनुभव किया है। इसलिए मेरा आपमें अटल विश्वास और श्रद्धा बनी रहे ऐसी आप कृपा सदैव बनाए रखें। अन्त में सभी प्रभु भक्तों की सेवा में यही प्रार्थना है कि इसको जितना ग्रहण किया जाय उतना ही कम प्रतीत होता है। ये तो आनन्द का असीम सागर है।

—आपकी सेविका

अर्चना सिंह, लखनऊ

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की जय

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की अपार अनुकम्पा से मुझे सभी श्री भगवत् स्वरूप देवी-पुरुषों के समक्ष अपने हृदय के भाव को विश्व के भाग्य को उदय करने वाले अमर 'श्री मानव भाग्य विधाता' एवं 'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ' के प्रकाशित करने की प्रेरणा देने वाले श्री आनन्दमय भगवान के श्री चरण कमलों में अर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। अत: इस अहैतुक कृपा से आज मैं ऐसे आनन्द सागर में डूबा जा रहा हूँ जिसका वर्णन मैं अपने मुख से नहीं कर सकता परन्तु उसका अनुभव अपने हृदय में कर रहा हूँ।

सच पूछा जाय तो यह दोनों श्री ग्रन्थ मनोवांछित सात्विक फल देने वाले हैं। मानव जीवन का कोई भी ऐसा बिन्दू न होगा जिस पर इस श्री ग्रन्थों ने अनुभव पूर्ण शोध न किया हो। मनुष्य के जन्म से लेकर मोक्ष पर्यन्त तक के सभी कर्तव्यों का पूर्ण रूप से विवेचन इन दोनों श्री ग्रन्थों में किया गया है। जहाँ एक ओर बालक का जन्म होते ही श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के सूत्रों का प्रतिदिन पाठ करने का आदेश देते हैं वहीं दूसरी ओर मानव शरीर के नाश होने के पूर्व ही अपने भक्तों को आत्मानन्द का पाठ पढ़ा करके मोक्ष का द्वार सहज ही खोल देते हैं। श्री गीता माता के तो यह दोनों श्री ग्रन्थ साक्षात् दो पुत्रों के ही सदृश हैं जो जीवन के दो चरम लक्ष्य शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति सहज ही करा देते हैं। मेरा तो यहाँ तक विश्वास है कि श्री मानव भाग्य विधाता 'एवं' श्री विश्वशान्ति नामक ग्रन्थों को यदि भारत एवं विश्व का बच्चा-बच्चा अपने जीवन के दो महान मार्ग दर्शकों के रूप मान करके सच्चे हृदय से इन्हीं श्री ग्रन्थों के आदेशों के अनुसार जीवन यापन करने में तत्पर हो जाय तो निश्चय ही उन्हें आत्मिक सुख की अनुभूति हो सकती है। तथा यह विश्व जिसे दु:ख धाम कह कर पुकारता है वास्तव में आनन्दधाम हो सकता है।

अत: हे विश्वप्रेमी भाइयों, यदि आप विश्व में पुन: वास्तविक रामराज्य की सी व्यवस्था के इच्छुक हैं तो मेरे कहे गये शब्दों पर ध्यान दें।

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा।
रामराज्य नहीं काहुँहु व्यापा।।

तो आप सभी को दृढ़ता के साथ 'श्री मानव भाग्य विधाता' तथा 'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों' में बताए हुए नियमों के अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा। **ॐ शान्तिमय**

—श्री माता प्रसाद अवस्थी

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

सभी आनन्दमय अनुरागियों व गुरुजनों को मेरा शत-शत प्रणाम। मैं आज अपना अनुभव आप सबके सन्मुख रख रहा हूँ। वैसे तो अपने सभी छोटे-बड़े अनुभव लिख पाना सम्भव नहीं है, फिर भी मैं प्रयत्न कर रहा हूँ। मैंने बचपन से ही कई सत्संग का लाभ लिया है, कई मन्दिर, गुरुद्वारों में जाना होता था, परन्तु जो आनन्द शान्ति का अनुभव विश्वशान्ति आश्रम के सम्पर्क में आने से हुआ, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। चिन्ता और भय का तो नाश ही हो गया है। क्योंकि ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के साथ होने का विश्वास है। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का भजन-ध्यान करना बहुत अच्छा और लाभकारी लगता है। जब कभी भजन-ध्यान में त्रुटि होती है, तो मन परेशान एवं व्याकुल हो जाता है। अब सांसारिक चीजों में लगाव कम हो गया है। सदैव ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप मन ही मन चलता रहता है। इसीलिए प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मन सम-शान्त बना रहता है।

आश्रम में होने वाले वार्षिक सत्संग का विशेष रूप से इंतज़ार रहता है। विश्वशान्ति आश्रम की याद आते ही मन करता है कि मैं आश्रम पहुँच जाऊँ। आश्रम में निवास करने वाले पूज्यजनों के वचनों को लगातार सुनते रहने का मन करता है।

मैं विशेष रूप से सत्संग प्रेमी श्री सेठी जी भगवन का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस मार्ग पर लगाया। पिछले साल में हुए सत्संग में मेरा परिवार भी शामिल हुआ, तथा उन्होंने भी आनन्द शान्ति का अनुभव किया। आनन्द किरन जी, आनन्दलता जी व अन्य आनन्दमय अनुरागियों द्वारा किया तथा यह सत्संग का कार्यक्रम मेरे परिवार को आने वाले कई वर्षों तक याद रहेगा।

आज भी आश्रम की पूज्यनीय ब्रह्मलीन छोटी बहन जी के वचन मेरे कानों में गुँजते हैं कि ''मार्ग तो मिल गया है, अब आप पर निर्भर करता है कि आप कितना तेज चलते हैं, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लीये।'' ॐ शान्तिमय

—आशीष, दिल्ली

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

गीता एक सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक कृति है। विश्व में इसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार है। भारत के पचासों विद्वानों ने गीता पर टीका और विवेचन लिखें हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने भी गीता के आधार पर राजयोग की महत्वपूर्ण विवेचना की। महत्वपूर्ण विषय यह है कि इन सभी विद्वानों ने अपने भाष्य में चिन्ता और क्रोध जो अत्यन्त भयावह मानसिक रोग है, उसका अत्यन्त सतही स्तर पर नगण्य रूप से विवेचन किया। इस न्यूनता का दिमागी रोगों के विशेषज्ञ कर्मयोगाचार्य, ध्यानयोग के विशिष्ट आचार्य ॐ श्री गुरुदेव भगवान श्री आनन्दमय देव जी ने अनुभव करते हुए संसार के व्यवहारिक धरातल पर प्रतिष्ठित करते हुए संसार के व्यवहारिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। पूर्व के आचार्यों ने चिन्ता और क्रोध को अपने भाष्यों में अत्यन्त हल्के स्तर पर लेते हुए इसकी नाम मात्र ही विवेचना की जब कि चिन्ता अत्यन्त भयावह मानसिक रोग है। कई कैदियों को फाँसी की सजा सुनाये जाने पर चिन्ता के कारण कुछ ही दिन में काले बालों के स्थान पर श्वेत बाल हो गये।

चिता चिन्ता इयोर्मध्ये चिन्ता नाम गरीयसी।
चिन्ता दहति निर्जिव। चिन्ता दहति सजीवकम् ।।

चिता और चिन्ता दोनों के मध्य में चिन्ता ही अत्यन्त गर्हित है। चिता निर्जीव शरीर को जलाती है और चिन्ता सजीव शरीर को जलाकर खाकर कर देती है। पूज्य गुरुदेव भगवान जी ने चिन्ता के विषय में बहुत सटीक और सारगर्भित व्याख्या की।

१- हे श्री शान्तिमय प्रभो! मैं शान्तिमय हूँ चिन्तामय नहीं।

२- हे श्री शान्तिमय प्रभो! मैं सहनशीलता भावमय हूँ क्रोध भावमय नहीं। (श्री विश्वशान्ति भाग-१) नाराज़गी का दर्शन काले नाग का दर्शन है। चिन्ता का दर्शन पापात्मा का दर्शन है। क्रोध का दर्शन महापापात्मा का दर्शन है। प्रसन्नता का दर्शन धर्मात्मा का दर्शन है। समता का दर्शन महात्मा का दर्शन है। (श्री मानव भाग्य विधाता)।

हे श्री आनन्दमय प्रभो! सम्पूर्ण जीव दुःख, चिन्ता, भय, कामना क्रोध, वैर, द्वेष, ईर्ष्या से रहित हों।

चिन्तित और क्रोधित मनुष्यों का समागम कैसा?

साँप और शेर के जैसा।

अत: हम सभी ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से इन मानसिक रोग चिन्ता, क्रोध से अपनी रक्षा करते हुए आनन्दमय बनें। ॐ आनन्दमय भगवान का जप ही इस रोग शमन का सशक्त माध्यम है।

–आशा राम आर्य, तिलक नगर, भूतेश्वर मन्दिर के पास, औरैया।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

भगवन् ! मैं सायंकाल प्रतिदिन बड़े ही उत्साह और साधनापूर्वक प्रभु पिता परमेश्वर जी की पूजा-अर्चना अपने पिताजी के साथ करता हूँ। जिससे मेरे हृदय में एक अद्भुत आनन्द की अनुभूति होती है। जिसे मैं अपने वाक्यों में बाँध नहीं सकता हूँ। वैसे तो प्रभु जी की कृपा मुझ पर बचपन से ही थी। लेकिन उसकी अनुभूति को समझने का अवसर प्रभु पिता परमेश्वर जी ने पिछले वार्षिक सत्संग में प्रदान किया था, श्री विश्वशान्ति आश्रम झूँसी (प्रयाग) में आयोजित सत्संग बड़ा ही प्रेरणादायक और आनन्द की अनुभूति कराने वाला था। सत्संग में पूज्यनीय आयुष्वानों के अतिरिक्त और भी अनेक आनन्दमय अनुरागियों द्वारा किया गया सत्संग का श्रवण करके ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चारो ओर अमृतरूपी वर्षा हो रही है। वार्षिक सत्संग में जब पूज्य बहन आनन्दलता जी भगवन ने मुझे 'सच्ची प्रेम भक्ति' के सात सूत्रों को उच्चारण करने को कहा तो मुझे उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं प्रभु पिताजी के चरणों के एकदम सामने बैठा हूँ और मुझे एक असीम शक्ति का अनुभव हुआ। इसके लिए मैं प्रभु पिताजी को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ कि उन्होंने मुझ जैसे तुच्छ प्राणी को इसके श्रवण-पाठन के योग्य समझा। जब भी मेरा मन अशान्त रहता है तो बड़ी 'बहन जी' के अनुसार मैं महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जाप करता हुआ मन मन्दिर में प्रभु पिताजी के दर्शन का अनुभव करता हूँ; जिससे मेरा मन शान्त हो जाता है। इस महामंत्र का जाप करने से एक आत्मशक्ति प्राप्त होती है और कभी भी न समाप्त होने वाली एक अद्भुत स्फूर्ति जागृत होती है। अत: हमें हर समय 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जाप करना तथा करवाना चाहिए। इस महामंत्र से मेरे अन्दर की सभी नकारात्मक सोच भी सकारात्मक सोंच में बदल जाती है। मन में जो दूसरे के प्रति ईर्ष्या की भावनाएँ थी अपने आप समाप्त हो जाती हैं। जब भी मैं महामंत्र का जाप करता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं अथाह आनन्द के सागर में तैर रहा हूँ। ॐ श्री आनन्दमय प्रभु पिताजी की शक्ति, महिमा, गुण-ज्ञान अपार है। मन बुद्धि की पहुँच से परे है। यह सब उनकी शरण में जाने से प्रतीत होता है।

अत: हम सब छात्र-छात्राओं को ॐ आनन्दमय भगवान के विधान के अनुसार अपने जीवन को सद्गुण-सदाचारी बनना तथा बनाना चाहिए। फिर हम सबके द्वारा कृत कार्य श्रेष्ठ होंगे। जीवन में नम्रता सरलता, सहनशीलता, समता, प्रसन्नता, समता, सन्तोष और आनन्द शक्ति की अनुभूति होगी। अत: मैं सभी विद्यार्थियों को कहना चाहूँगा कि– आपके एक पल का क्रोध, आपका भविष्य बिगाड़ सकता है। आपके एक पल का सत्संग, आपका भविष्य बना सकता है। अन्त में मैं प्रभु पिता को फिर से प्रणाम करता हूँ और चाहता हूँ कि वे अपने इस सेवक पर अपनी कृपा दृष्टि और अपनी सेवा करने का अवसर जीवन पर्यन्त दें।

ॐ शान्तिमय

–आपका सेवक- प्रतीश राय, इलाहाबाद

श्री दैवी-सम्पदावान् महात्माओं के शरीर को मन, वाणी और शरीर द्वारा कष्ट पहुँचाने का प्रयत्न करना ब्रह्म-हत्या है।

–श्री विश्वशान्ति भाग-२

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

श्री आश्रम से प्रेषित स्मारिका २०११-१२ प्राप्त हुई। अनायास ही जैसे कोई बहुमूल्य वस्तु प्राप्त हो गई हो। मैं सदाश्रम का आभारी हूँ जो मुझे इस योग्य समझा कि पत्रिका की एक प्रति मुझे भेजी। पत्रिका देखते ही पिछले १६ बरसों की बहुत सी बातें स्मरण हो आई।

भगवन ! मैं बहुत ज्यादा श्री महापुरुषों का संग नहीं कर सका फिर भी उनके ज्ञानपूर्ण पत्रों ने मुझे उत्साहित किया तथा मैं उसी प्रेरणा के बल पर सदाश्रम से जुड़ा रहा। मुझे आत्मिक लाभ भी हुआ। ऐसे अनुभव हुआ कि अगर श्री सदाश्रम की ज्ञानमय तथा सहृदयता प्रेरणा न मिलती तो मैं अपने आपको सम्भाल न पाता। दु:ख संताप बहुत ज्यादा होते-प्रतिकूलताओं के अम्बार खड़े होते रहते और मैं उनका समाधान न कर पाता। प्रतिकूलताएं तो अब भी उपस्थित रहती हैं लेकिन मुझे श्री विश्वशान्ति आदि दिव्य ग्रन्थों का लगातार स्वाध्याय करते रहने के फलस्वरूप उन बड़ी से बड़ी विडम्बनाओं का समाधान प्रभूजी स्वयम् करते करवाते रहते हैं– मुझे विचलित होने से बचा लेते हैं व आनन्द की भावना में मग्न रखते हैं।

भगवन ! मुझे हिन्दी भाषा का बहुत ज्ञान नहीं है, न बोलने का और न ही लिखने का। मगर श्री सदाश्रम से आए पत्रों से और श्री ॐ आनन्दमय प्रभुजी की अन्त:प्रेरणा से अब लिखने की शैली में सुधार हुआ है।

ये सत्य है कि प्रभुजी असम्भव को सम्भव कर सकते हैं पैरों से अपाहिज को पर्वत पार करा सकते हैं, गूँगे-बहरे का वाक् शक्ति व श्रवण शक्ति देकर सक्षम बना सकते हैं। आवश्यकता है उनके लगातार तैल धारावत स्मरण ध्यान की।

व्यवहार में दया, प्रेम के भाव रखना, राग-द्वेष, लोभ-मोह, अहंकार के भावों से यथा साध्य बचते बचाते रहना अपने करुणामय भावों को दूसरों के प्रति उजागर करते रहना अपनी आत्मा को प्रेम प्रसन्नता में मग्न रखने का सरल उपाय है।

मैंने सदाश्रम से बहुत कुछ सीखा है- बहुत सी बातों को तो शब्दों में कह पाना ही कठिन है। आत्मा उन भावों का अनुभव करने लगती है तथा व्यवहार में प्रतिबिम्बित होने लगते हैं। उन भावों का उल्लेख जो करने में संकोच होता है।

प्रभुजी अनेक व्यवस्थायें देते हैं– बहुत सी प्रतिकूलताओं का सामना करवाते हैं- डावाँडोल होने के साधन उपस्थित कर देते हैं- मानों परीक्षा ले रहे हों कि दास अभी कच्चा है या पक गया है। मेरे लिए समय निकाल पाता है या नहीं। इतना भर अहसास दासों के दास के लिए पर्याप्त होता है। इस भावना के साथ कि प्रभुजी मुझे देख रहे हैं अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं- नियमित उन प्रभुजी का ध्यान करने की, उनका स्मरण करने की प्रेरणा देते हैं।

भगवन! छोटे तथा बड़े विद्यार्थी समाज के जो अनेकों अनुभव अपने पत्रिका में छापे हैं यही प्रेरणा देते हैं कि आपका ये प्रयास कितना व्यापक है। ऐसा ज्ञानपूर्ण तथा जागरुक प्रयास कहीं और देखने सुनने को नहीं मिलता कि आप आने वाले कल को, विश्व के भविष्य को शक्तिशाली बनाने में कितने उत्साहित हैं। मैं अपनी ओर से जितना भी सहयोग कर सकता हूँ आजीवन करता रहूँगा। ऐसी श्री आनन्दमय प्रभुजी की प्रेरणा है। आपने निर्मल हृदय बालकों की वुद्धि के प्रवाह को श्री भगवान की और मोड़ दिया है जिसका लाभकारी परिणाम आने वाले समय में अवश्य दृष्टिगोचर होगा। ऐसी प्रभुजी की आज्ञा है।

जितने अच्छे व मार्मिक ढंग से छोटे-छोटे विद्यार्थी समाज ने अपने अनुभव प्रेषित किए हैं उतनी सहजता व सुगमता से मैं भी नहीं कह पाता। बेशक श्री सदाश्रम से जुड़े १६ बरस व्यतीत हो गए हैं- ये संग का ही प्रभाव है।

बस इतना ही अनुभव मेरे लिए प्रेरणादायक है कि अगर मैं इस श्री सदाश्रम से नहीं जुड़ता तो जो भी आनन्द शक्ति व शान्ति मुझे श्री ॐ आनन्दमय प्रभुजी ने दी है वो नहीं मिलती। अभी मैं जो हूँ जितना भी हूँ इन सतपुरुषों के संग व भावनाओं के फलस्वरूप हूँ।

–आपका दास
केवल कृष्ण, लुधियाना

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम, त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद की कानपुर शाखा द्वारा सोसाइटी धर्मशाला कानपुर में दिनांक 13 अक्टूबर 2011 तक चले चार दिवसीय ज्ञान योग शिविर में उपस्थित छात्र-छात्राओं और अध्यापकों के अनुभव–

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस संस्था में जाकर हमें बहुत शान्ति मिली। यह संस्था सचमुच में हमें सद्बुद्धि प्रदान करती है।यहाँ पर आकर हमारी इश्वर के प्रति श्रद्धा बढ़ती है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय इस मंत्र से मन में शान्ति, भाईचारा और सदगुणों के भाव को प्रकट करती है। इस मंत्र का उच्चारण करते समय जब हम ध्यान लगाते है, तब ऐसा लगता है कि स्वयं भगवान हमारे सामने प्रकट हो गये है और हमें आर्शिवाद दें रहें है। कभी भी हमारा मन भटकता है या परेशान रहता है तब इस मंत्र का उच्चारण करने से मन में बेहद शान्ति मिलती है और परेशानी से शान्ति मिलती है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का उच्चारण हमें अध्ययन से पहले करने पर आनन्द मिलता है। इस मंत्र ने मेरे मन में एक नया प्रकाश-सा डाल दिया है। जब से हम इस संस्था से जुड़े हैं, तब से मेरे जीवन में काफी कुछ उन्नति होती जा रही। मेरे अध्ययन में भी दिन पर दिन उन्नती होती जा रही है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र से केवल मेरे ही जीवन में प्रभाव नही पड़ा है बल्कि कई लोगों के मन में प्रभाव पड़ा है। मरी एक सहेली है वह पिछले वर्ष हाई स्कूल की परीक्षा दे रही थी तो उसके बहुत कम अंक आए तो मैंने उसे यह मंत्र बताया तो उसे लगा की जैसे उसका जीवन ही बदल गया उसके अंक हाई स्कूल की वोर्ड परीक्षा में ८८% आए। तब वह मान गई कि अवश्य ही इस मंत्र में कोई शाक्ति है। जब से मैं इस संस्था से जुड़ी हूँ तब से मैं बहुत खुश हूँ और मेरे जीवन में सफलता ही सफलता प्राप्त हो रही है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–स्वाती सिंह तोमर- ९

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' कहते-कहते जब हम आश्रम पँहुचें, मेरा प्रफुल्लित मन अन्दर ही अन्दर नाचे।।

आश्रम की सुगन्धित शीतल वायु मुझे लगी मलयज समीर।

भगवान के प्रवचन सुनकर यों लगा जैसे बोले सन्त कबीर।।

वहॉ के भजन कीर्तन मुझे लगे मनोहर,
अब हमारी संस्कृति की यही बची है धरोहर।
वहॉ हम सभी को अच्छे से बैठाया गया,
नेत्र बन्द करके परमपिता का ध्यान करवाया गया।।
उस ध्यान में मैंने पाए अपने प्रभु के दर्शन।
मैं भूल गया यह अपना झूठा तन।।
परन्तु अचानक ध्यान टूटा मेरा,
फिर मुझे वहाँ ऐसे सुख ने आ घेरा।
जिसका वर्णन बड़ा सुनहरा।।
उस सुख से मेरा मन रूपी कमल खिला।
मुझे आनन्द शान्ति का अनुभव मिला।।
अब मैं इस मंत्र का प्रतिदिन ध्यान लगाता हूँ।
भक्तजनों के चरणों में अपना शीश झुकाता हूँ।।
यदि प्रत्येक हिन्दुस्तानी इस सागरर्भित मंत्र को ले मान।
तो फिर से विश्वगुरू बन सकता है प्यारा हिन्दुस्तान।।
जब तन मन कष्टित हुए हमारे।
तब इस मंत्र ने मेरे कष्ट निवारे।।

–छत्रसाल कुशवाहा- कक्षा १०

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मेरे विचार- जब मैं विश्व शान्ति आश्रम में प्रवेश किया तो मुझे ऐसी अनुभूति हुई मानो मैं किसी मन्दिर मे आ गई हूँ। ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' मंत्र का जाप करने से मेरी अर्न्तआत्मा प्रसन्न हो गई और मुझे ऐसा लगा जैसे ईश्वर के पास पहुँच गई हूँ। जब हम लोगों को आश्रम में ध्यान लगाने को कहाँ गया तो पहले मेरे मस्तिष्क में एक प्रश्न खड़ा हो गया कि ध्यान लगाना क्यों जरूरी हैं और ध्यान लगाने से क्या होगा? मगर जब मैंने अपनी आँखे बंद की और एकाग्रता से अपना ध्यान चारों तरफ से हटाकर एक ओर केंद्रित किया और अपने गुरू को याद किया फिर उनकी छवि अपने हृदय में बनाई और इसके पश्चात् अपना ध्यान लगाना शुरु किया तो मानों मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा शरीर हल्का हो गया हो, मेरा शरीर घुमने लगा और मेरी आँखों के अन्दर मालें घूम रहें हों । इसके पश्चात् मुझे ऐसा प्रतीक हुआ जैसे मैं ईश्वर के समीप पहुँच गई हूँ और मुझे ईश्वर के दर्शन हो रहे हों ईश्वर ने मेरे सिर पर हाथ फेरा हो ओर वह मुझसे कुछ कह रहें हों। ध्यान लगाने के परश्चात जब मैंने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोली तो वहाँ चारो तरफ शान्ति ही शान्ति थी। वहाँ के शान्तपूर्ण वातावरण से मेरे मन, हृदय को बहुत शान्ति मिली और मुझे अपने अन्दर एक अद्भुत शान्ति और ऊर्जा का आभास हुआ। सम्पूर्ण वातावरण में दिव्य और शान्ति आने लगा। मुझे उनके (ईश्वर) होने का एहसास हुआ और मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला जैसे योग विद्या, ध्यान लगाना, आदि और जब मैं पाँच मिनट 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जाप करने बैठती हूँ तो मेरा मन पढ़ने में लगने लगता है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–ऐश्वर्या शर्मा और वृतिका गौड़- कक्षा- ९

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब मैं धर्मशाला गया तो सर्वप्रथम मुझे वहाँ का शान्तिपूर्वक वातावरण देखकर आनन्द की अनुभूति हुई क्योंकि आज वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य स्वयं से ही प्रतिस्पर्धा करने में लगा हुआ है और उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिलती है।

''मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के पुष्पों के साथ रक्त की प्यासी जोकें भी उत्पन्न होती रहती हैं।''

१- मंत्र का क्या प्रभाव है यह मैं नहीं जानता क्योंकि मैं मंत्र का सही उपयोग आज तक नहीं कर पाया हूँ। लेकिन पता नहीं क्यों मुझे सच्चे आनन्द की अनुभूति होती है कि मुझे इस महामंत्र का अनुभव होगा।

''जन्म के बाद मृत्यु, उत्थान के बाद पतन, संयोग के बाद वियोग, संयम के बाद क्षय निश्चित है। यह समझकर ज्ञानी हर्ष और शोक के वशीभूत नहीं होते।''

२- मैं एक वाचाल छात्र हूँ लेकिन फिर भी मुझे आश्रम का शान्तिपूर्ण वातावरण अत्यन्त आनन्दमय लगा, लेकिन मैं वाचाल होनें पर भी शान्तिपूर्ण वातावरण पसन्द करता हूँ क्योंकि-

''प्रभु का ध्यान करना ही स्वर्ग है।''

३- हम सभी जानते हैं कि बिना योग-साधना के हमारे आन्तरिक शक्तियों का उभार नहीं हो सकता और हम विद्यार्थियों को तो इसकी अत्यन्त जरूरत है क्योंकि योग-साधना से हमारा मन एकाग्र होता है, जो कि हमारे विद्याध्ययन के लिए लाभकारी है। ''साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है।''

४- निराकार ब्रह्म की उपासना की कठिनता समझाते हुए श्री सूरदास जी कहते हैं- ''अविगति गति कछु कहत न आवे। सब विधि अगम विचारहि ताते सूर सगुण पद गोवे''

५- ''असत्य सबसे बड़ा विष है।''

– मोहित सिंह- कक्षा- १०

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देव शरणम्

भगवन् ! मेरे पिता जी का लगाव श्री विश्वशान्ति आश्रम हरद्वार से ही हो गया था, वे बराबर सत्संग करते आ रहे हैं।

जब मैं तीसरे साल में सत्संग में गया था तब मेरा मन पूजा में नहीं लगता था। जब सत्संग होता था तब मैं शोर करता था और शरारती बालकों के साथ खेलने लगता था। मेरा मन हमेशा चंचल बना रहता था। जब मैं चौथे वर्ष में हरद्वार सत्संग में आया था तो सत्संग आरम्भ होने जा रहा था। तब मैं वाटिका में खेलने लगा, तभी वाटिका में एक भगवत प्रेमी मिल गए जिनको मैं जानता था पर उनका नाम मालूम नहीं था। उन्होंने मुझसे कहा कि जीवन खेल-कूद में ही नहीं बिताओ, भगवान की भक्ति में मन लगाओ तो तुम्हे भगवान सुख-शान्ति प्रदान करेंगे। मैंने उन पर विश्वास किया और चुपचाप जाकर सत्संग में बैठ गया। उस दिन सत्संग में इतना आनन्द मिला कि वर्णन नहीं हो सकता। आँखों से अश्रुओं की धारा बहने लगी। एक भगवान के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। तब से मेरा मन शान्त रहने लगा और राजस-तामस संकल्प शान्त होने लगे, शरारती बालकों के साथ खेलना बन्द हो गया।

भगवान की भक्ति करने से मेरा मन बहुत प्रसन्न रहने लगा। तब मैंने घर में सत्संग और ध्यान करना आरम्भ कर दिया, धीरे-धीरे मेरा ध्यान लगने लगा।

एक दिन मैं स्कूल से घर की ओर साईकल से जा रहा था, सड़क पार करते समय एक मोटर साईकिल ने टक्कर मारी और मोटर साईकिल गिर गई परन्तु मेरी साईकिल खड़ी रही। बाईक चालक को चोट भी लगी। प्रभु जी ने मुझे बचा लिया। मैं महामंत्र जपता रहा और महामंत्र की शक्ति से मेरे प्राण बच गए। उस दिन से मुझे महामंत्र पर पक्का विश्वास हो गया कि जो साधन करेंगे उनकी भगवान सब प्रकार से सहायता करेंगे। इस मंत्र की सिद्धि है शक्तिशाली, आत्मबल को बढ़ाने वाली। ॐ श्री आनन्दमय भगवान की कृपा से मुझे बहुत अच्छा ज्ञान मिला।

भगवन् ! अवसर मिलने पर मैं त्रिवेणीपुरम् आश्रम इलाहाबाद में जाता रहता हूँ। इस बार गरमी की छुट्टी में भगवान की सेवा और भजन-ध्यान का लाभ उठा रहा हूँ। मुझे प्रचार करना भी बहुत अच्छा लगता है। मेरा विश्वास होने के लिए श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ ही मेरा सहायक है।

–केशवानन्दन दास, कक्षा-७, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम प्रयाग, की कानपुर शाखा द्वारा

सोसइटी धर्मशाला कानपुर में कार्यरत चार दिवसीय ज्ञान योग शिविर के प्रात: कालीन सत्र में चल रहे शिविरों में एक दिन मुझे जाने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। जब मुझे उस शिविर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो मेरे हृदय में एक अद्भुत चेतना की अनुभूती हुई जिसका वर्णन करना लगभग असम्भव है। जब मैं उस ध्यान योग शिविर पहुँचा तो मेरे मन में उत्पन्न होने वाले नकारात्मक विचार सहसा नष्ट हो गये और अपने आप ही साकारात्मक विचारों का निर्माण होने लगा। मेरे पूरे शरीर में मानों कभी न खत्म होने वाली एक अद्भुत स्फूर्ति जागृत हो, ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे स्वर्ग-सा आनन्द आया। इस वातावरण का आनन्द मेरे मित्रों ने भी लिया। वहाँ का वातावरण मन को शान्ति प्रदान करने वाला, प्रसन्नचित करने वाला था। जब मैंने 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जाप किया तो मेरे मन में एकाग्रता का अनुभव होने लगा। इस मंत्र को जपने से हमारे मूल्यवान में कोई बाधा नहीं आती है। अत: इस मंत्र में एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो एक विद्यार्थी को आत्मशक्ति प्रदान करती है क्योंकि आत्मशक्ति के कारण ही विद्यार्थी के जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति होती है जो कि विद्यार्थियों के लिये सबसे महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो हमें ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय शिविर में प्राप्त हुई हैं। हम सबकी प्रभु जी के साथ चर्चा भी अत्यन्त स्मरणीय थी। मैं ऐसी अद्भुत अनुभूति कभी न भूलना चाहूँगा। अन्त में मेरा आनन्दमय प्रभुपिता जी को सादर प्रणाम। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय **– प्रभात- कक्षा- १०**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सर्व प्रथम इस कार्यक्रम से जुड़े सभी लोग मेरा प्रणाम स्वीकार करें और साथ में धन्यवाद भी कि आप लोगों ने ऐसे ध्यान योग शिविर का शुभारम्भ किया। मैं इस शिविर में उपस्थित हुआ और इस ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे असीम आनन्द की जो अनुभूति हुई उसे मैं जीवन पर्यन्त याद रखूँगा। यहाँ पर आकर मुझे एक ऐसा मंत्र मिला जिससे मेरा मन, मेरी सोच, मेरा ध्यान सभी कुछ बदल दिया, और वह मंत्र है '' ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''। पहले मैं पढ़ाई में कमज़ोर छात्र था परन्तु जब से मैंने इस शिविर में प्रवेश किया और यहाँ पर मिले मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का कुछ देर सुबह तथा कुछ देर शाम को स्मरण किया। तब से मेरी पढ़ाई भी अच्छी होने लगी। यहाँ पर बताए गए तरीके से मैं रोज सुबह १५ मिनट ध्यान लगाता हूँ, इससे मेरी स्मरण शक्ति काफी हद तक बढ़गई है, जिससे अब कक्षा में स्थान 'टॉप टेन' बच्चों में शामिल हो गया हूँ और अब बिद्यालय के सभी अध्यापकगण मुझसे प्रसन्न रहते हैं। मेरे विद्यालय के द्वारा मुझे ऐसे दिव्य ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यहाँ पर एक और चीज जो मुझे पसंद आई वह प्रार्थना की एक पंक्ति थी जो इस प्रकार है– ''मधुर-मधुर नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''। मैं जब भी चिंताग्रस्त रहता हूँ तब इस पंक्ति को गुनगुनाने लगता हूँ और कुछ ही समय में मेरी चिंना दूर हो जाती है। यहाँ पर हमें 'सच्ची-प्रेम भक्ति' नामक एक पुस्तक दी गई। जिसमें कई प्रकार की अच्छी बातें लिखी गई हैं और भगवान की कई सुन्दर प्रार्थनाएँ भी दी गई। इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से हमें आत्मज्ञान और सद्बुद्धि प्राप्त होती है और हमें दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। यद्यपि मैं एक मुस्लिम परिवार से संबन्ध रखता हूँ फिर भी मैं यहाँ बार-बार आना चाहूँगा । मेरे परिवार वाले भी मुझे इस कार्य में सहयोग देते हैं और सुबह वे भी मेरे साथ ध्यान योग करते है। इसी ध्यान की वजह से हमारी अनिद्रा, थकान, चिन्ता, तनाव आदि दूर हो गये हैं। मैं सदा इस दिव्य महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का इसी प्रकार से जाप करता रहूँगा और दूसरे लोगों को भी इस दिव्य मंत्र 'आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करूँगा।

– मो० साजिद अली अन्सारी- कक्षा- ९

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सत्संग में जाने का प्रभाव-

आश्रम में जाने से हमारे ऊपर एवं हमारे परिवार पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। हमें इस बात का ज्ञान हो गया है कि भगवान के नाम कि भी कोई चीज है या भगवान भी हमारे चारों ओर व्याप्त हो गये है। या कई वर्षो से व्याप्त है। हमें ऐसा लगता है कि इस संसार में भक्ति के अलावा कुछ नही है। यदि देखा जाए तो ईश्वर के अशिर्वाद से ही हमारी कामनाएँ एवं इच्छा पूर्ण होती हैं।

लाभ– हमें आश्रम जाने से यह लाभ हुआ है कि हमारे पड़ोस में एक परिवार रहता है जो कि कुशल नहीं था हमारे आश्रम जाने के बाद मुझे जो मंत्र प्राप्त हुआ वो मंत्र मैंने उनके घरवालों को दिया। पहले उनके घर में काफी लड़ाई-झगड़ा होता था। कभी भी आपस में पटती नहीं थी। जब मैंने उन्हें यह मंत्र दिया उस मंत्र का उपयोग जब उन लोगों ने किया तो सब कुछ कुशल मंगल हो गया। एवं वे आपस में भी काफी हँसी पूर्वक रहने लगे। जिनको देखकर हमें भी प्रसन्नता हुई एवं आगे भी होती रहेगी कि मैंने जो मंत्र प्राप्त किया वह किसी की भलाई के काम आया।

सदुपयोग– हमें अपने जीवन को कुशल एवं खुशनसीब बनाने के लिए हमें इस मंत्र का जाप करना चाहिए। (ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय) इस मंत्र को पढ़ने से हमारे परिवार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा, हमें बहुत खुशी हुई कि वहाँ बार-बार जाने को मिले। जीवन में इन चीज़ों के अलावा और कुछ भी नहीं है। मेरे पिताजी, माताजी एवं भाई, बहन सभी इसका हिस्सा बन गये हैं। इससे बहुत कुछ लाभ हम सभी को मिला है।

–प्रिया कुशवाहा- कक्षा- ९

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री ध्यान समाधि के आयार्य विश्वगुरू श्री महा-पुरुष भगवान के परम् पवित्र चरणों में मैं अपने सहित भगवान स्वरूपों की भावरूप पुष्पाजंली अर्पण करते हुए साष्टाँग दण्डवत प्रणाम करता हूँ। जैसे मैं ज्ञान योग्य शिविर में पहुँचा मुझे एक अलग वातावरण प्राप्त हुआ तो मुझे एक अद्भुत चेतना की अनुभूति हुई जिसका वर्णन करना लगभग असम्भव है। ॐ आनन्दमय भगवान की दया और कृपा से मुझे परमानन्द परम शक्ति और परमसुख प्राप्त होता है। मेरे जीवन का जो सबसे बड़ा उद्देश्य था वह श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ना था। मैं इसे सौभाग्यशाली मानता हूँ और हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। सभी भगवत भक्तों को जिन्होंने मुझे भी आश्रम से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। मुझे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप करने से बहुत लाभ हुआ इस महामंत्र का जापकरने से बहुत मानसिक बल मिलता है। इसका जाप करने से ध्यान केन्द्र में सहायता मिलती है। इस मंत्र का जाप केवल विद्यार्थियों को ही नही बल्कि सभी लोगों को करना चाहिए। इस मंत्र का जाप करने से शरीर में ताजगी आती है और मन को अत्यन्त ही शान्ति मिलती है। इसके जाप से हृदय के अन्दर बुरे विचार कभी भी प्रकट नही होते हैं यह एक सिद्ध मंत्र है। वर्तमान समय में विद्यार्थी एवं बहुत से लोग अनेक समस्याओं का सामना करते हैं। उनके भी इस महामंत्र का जाप करना चाहिए जिससे उनके सभी कार्य सफलता से हो सके और कोई भी बाधा न प्रकट हो। अत: मेरा विचार है कि इस मंत्र का जाप विद्यार्थियों को ही नहीं सभी को करना चाहिए। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

—मो० सद्दाम अंसारी- कक्षा- १०

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
(गुरू वन्दना)

गुरू पास रहे या दूर रहें हृदय में समाये रहते हैं।
उनकी वाणी रस पान करें, बस कृपा इसी को कहते है।
गुरू पास रहें या दूर रहें हृदय में समाये रहते हैं।
जीवन की घड़ियां थोड़ी हैं
दुनिया की मञ्जिल लम्बी है
छोड़ो गुरूदेव पे ज़िम्मेदारी-
वे पार लगाये रहते हैं। गुरूपास रहें
सुख आता आप नजरे आते
दु:ख में धीरज को बँधवाते
सुख-दु:ख में एक ही चेतस है।
ये ध्यान दिलाये रहते है गुरू पास रहें
जिस अंश से ये तुम संसार बना
उस अंश के ही तुम अंशी हो
माया में फँस कर भूलना
ये याद दिलाये रहते हैं।
जो छोटी-सी बात बुझानी है।
उस श्वाँस-श्वाँस को देखो तुम
ॐ आनन्दमय का निशदिन जाप करें
ये वाक्य सुनाये रहते हैं उनकी वाणी रस-पान करें
बस कृपा इसी को कहते?
ॐ आनन्दमय ॐ आनन्दमय

—अनिता

*** बनावटी (जाली) धर्म ग्रन्थ वह हैं जिनमें पाप-पुण्य का फल केवल मृत्यु के पश्चात बतलाया है।**

*** जो निष्काम तत्त्व की उपासना से अनभिज्ञ हैं वे सकामी भक्त जप-ध्यान, सेवा आदि पुनीत कर्मो द्वारा अल्प आनन्द और शक्ति के भागी होते हैं।**

—श्री विश्वशान्ति भाग-१

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
परम् पिता भगवान के पावन चरणों में मेरा शत् शत् नमन और पुष्पाञ्जलि।

भगवन्

मैं कक्षा 9 में पढ़ने के लिए जब गाँव से बनारस के पास एक कस्बे में गया, तो उसके लगभग एक साल बाद, मैं आर्य समाज संस्था के सम्पर्क में आया, और तत्पश्चात वेद, सत्यार्थप्रकाश, व्यवहारभानु नाम ग्रन्थों एवं पुस्तकों का अध्ययन प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त भी समय निकालकर अन्य कालजयी धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने लगा। इससे मेरे अन्दर व्यापक बदलाव आया और धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने की एक मनोवृत्ति जाग उठी और हर धर्म के सम्मानित ग्रन्थों एवं पुस्तकों का अध्ययन करना चालू कर दिया। इतना ही नहीं हमनें इन ग्रन्थों में लिपिबद्ध अमृत वचनों को और सद्गुणों को अपने जीवन में उतारना भी प्रारम्भ कर दिया। अपने अन्दर के तामसिक, राजसिक एवं अन्य विकृतियों को दूर करने लगा और धीरे-धीरे अपने को ईश्वर के सन्निकट समझने लगा। लेकिन जब मैं वहाँ से कक्षा-12 तक की पढ़ाई समाप्त करके इलाहाबाद में आगे की पढ़ाई के लिये आया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा तब मेरे अन्दर धीरे-धीरे वहीं दुर्गुण, विकृतियाँ फिर से हावी होने लगीं और एक दिन ऐसा आया कि दो-तीन साल में फिर पहले जैसा बन गया। या यूं कहिये कि पहले से भी अधिक राजसिक, तामसिक कार्यों में संलिप्त हो गया। हमने विधि और पत्रकारिता की पढ़ाई के पश्चात कुछ साल तक तैयारी की और कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठा लेकिन सफलता नहीं मिली। मैं अशान्त, चिंतित और विरक्त रहने लगा। फिर धीरे-धीरे कई आश्रमों एवं पठाधीशों के यहाँ भी मत्था टेका लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब घर से भी खर्च मिलना कम हो गया और एक समय ऐसा आया कि इलाहाबाद छोड़कर घर जाने की नौबत आ गयी, फिर हमने निश्चय किया कुछ करने की। मेरा दृढ़संकल्प काम आया और जल्दी ही मैं अपने परेशानियों से छुटकारा पा लिया। इससे मेरी आर्थिक परेशानी तो थोड़ी दूर हो गयी लेकिन मेरा अशान्त मन, शान्त न हुआ और तमाम बुराइयाँ व दुर्गुण मेरे अन्दर साँप की तरह कुण्डली मारकर बैठ गये और मैं भी उसी के अनुरूप चलने लगा। उसी भौतिक जीवन को वास्तव में स्वर्ग समझने लगा। पूजा-पाठ तो जरूर करता था इसका क्रम कभी नहीं टूटा, लेकिन इससे मन की विकृतियाँ और विषय भोग की लालसा सिवाय कम होने के बढ़ती ही गयी। अगरबत्ती जलाना, घण्टी बजाना, एक-दो श्लोक बोलना जारी रहा, भले ही उन श्लोकों का अर्थ न मालूम रहा हो। लेकिन एक अन्धी आस्था, जो हमेशा मेरे साथ रही।

तीन साल पहले जब मैं श्री ओम प्रकाश जी भगवन के माध्यम से इस आश्रम के सम्पर्क में आया तो मुझे कदापि इस बात का एहसास न था कि मेरे सारे सवालों का समाधान यहीं है। मैं बस उनके कहने पर कभी-कभी आता रहा। जब भी आता सच्ची प्रेम भक्ति के 21 सूत्रों का उच्चारण करवाया जाता और जिसके माध्यम से हम लोग प्रभु पिता जी से सन्मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करते। लेकिन मेरे मन में एक कुण्ठा और छल था और है भी कि मैं प्रतिज्ञा तो करता हूँ लेकिन इसका पालन मैं नहीं कर पाता। कभी-कभी मेरे अन्दर यह दृढ़संकल्प लेने की इच्छा होती है कि आज के बाद मैं इन सारे आदेशों का पालन करुँगा, परन्तु यह सोचकर रुक जाता हूँ कि कोई कार्य यदि दबाव या जोर-जबरदस्ती के साथ किया जाय तो वह स्थायी नहीं होते और जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं। गीता में कहा गया है कि सच्चे सन्तों की सेवा और उनके सानिध्य में रहने से, उनके वचनों को श्रवण और पालन करने से मन की चंचलता नष्ट होकर मन में अच्छे-अच्छे भाव स्वयं ही आने लगते हैं फिर किसी जोर-जबरदस्ती की आवश्यकता नहीं होती। निष्काम भाव से की गई सेवा से स्वतः ही मन के सारे विकार और विकृतियाँ समाप्त हो जाती हैं।

इन विचारों को समझने के बाद मैंने निश्चय किया कि किसी विचारों को अपने ऊपर जबरदस्ती नहीं लादेगें और न ही उसका पालन करेंगे। जब तक कि वे विचार, वे सद्गुण मेरे अन्दर स्वाभिक रूप से स्वतः ही नहीं प्रवेश कर लेते, मैं इनके साथ जबरदस्ती नहीं करुँगा। एक दिन श्री आनन्द किरन जी भगवन आश्रम में उच्चारण कर रहे थे कि जो कार्य आप से नहीं हो पाता है उसके लिए सिर्फ प्रभु पिता जी प्रार्थना कीजिए, सो इसके लिए मैं सिर्फ प्रभु पिता जी से नित्य प्रार्थना करता हूँ कि ''हे... परम् पिता भगवान, मेरे अन्दर के समस्त दुर्गुणों, दुर्विचारों और विकृतियों को नष्ट कर, मन में अच्छे-अच्छे भाव भर दो। मेरा यह जीवन अपने सेवा कार्यों के योग्य बना दो भगवान। मेरे अन्दर निष्काम भाव सेवा की भावना को प्रबल कर दो भगवान, मेरे भौतिक जीवन को आध्यात्म पटल

से रेखांकित कर दो भगवान।'' मुझे आशा है कि एक दिन प्रभु पिता जी मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे और मेरे जीवन को निष्कंटक कर मेरी भावना को निष्कामी बना देंगे। इस तरह जब मेरे अन्दर के भाव को प्रभु पिता जी जब स्वयं बदल देंगे तो मेरे ऊपर किसी बाहरी क्षणिक विचारों का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा, फिर चाहे कितने ही दुर्गुणों की काली छाया मडराये, मेरे अन्तर्मन को भेद नहीं पायेगी और मेरा मन प्रभु पिता जी के चरण रज में विलिप्त होकर असीमित आनन्द को प्राप्त हो जायेगा।

लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हमें निरन्तर ऐसे महापुरुषों के सम्पर्क में रहने की, जहाँ से हमें ध्यान और भक्ति की प्रेरणा तथा मार्ग मिलता रहे। पूज्यनीय आनन्द किरन जी भगवन के उच्चारणित ज्ञान, पूज्यनीया आनन्दलता बहन जी के मधुर वचनों से हमें हमेशा स्वयं को आत्मसात् करते रहना होगा। ॐ शान्तिमय

–सेवक- नन्द लाल सिंह, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
मेरा अनुभव– विद्यार्थी जीवन

श्री विश्वशान्ति आश्रम से प्रकाशित वार्षिक पत्रिका जो देश के छात्र-छात्राओं को परम-भाग्यवान बनाने के लिये, उनके अन्दर छिपी शक्ति को उजागर करने के उद्देश्य से पत्रिका में छात्र-छात्राओं के अनुभव प्रकाशित किए जाते हैं, जिसको उन्होंने श्री विश्वशान्ति आश्रम की तरफ से लगाये जाने वाले ध्यान-योग शिविर में जाकर अनुभव किया था।

मेरे सहपाठी विद्यार्थियों मुझे भी अपने विद्यार्थी जीवन में आश्रम की उपशाखा के प्रबन्धक जी से सम्पर्क हुआ जो इलाहाबाद तेलियरगंज की श्री विश्वशान्ति आश्रम के उपशाखा के प्रबन्धक थे। उनके सम्पर्क से मुझे एक बहुत बड़ी ऊर्जा-शक्ति मिली, जिसके प्रभाव से मुझे अपने अध्ययन कार्य विशेष रूप से मानसिक सन्तुलन मिलता रहा। मन हमेशा सम-शान्त स्थिर रहता था जिसके प्रभाव से मैं अध्ययन में प्रत्येक वर्ष अच्छी-सफलता प्राप्त करता रहा, मन हमेशा शान्त प्रसन्न रहता था। इंजीनियरिंग की ट्रेनिंग में प्रत्येक वर्ष श्रेष्ठ सफलता मिलती गई और अन्तिम वर्ष की ट्रेनिंग में ही मेरा सलेक्शन हो गया। इस समय में दिल्ली मेट्रो में इन्जीनियर पद पर कार्यरत हूँ। यह सब भगवत शक्ति का प्रभाव है और यह शक्ति सभी विद्यार्थी प्राप्त कर रहे हैं और यह विद्यार्थी जीवन के लिए पर आवश्यक है। तभी हम विद्यार्थी जीवन से ही देश के परम-भाग्यशाली नागरिक बन सकेंगे। ऐसी परम शक्ति प्राप्त करने का एक मात्र केन्द्र है। वर्तमान में तो 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र जपने के अभ्यास के साथ-साथ श्री विश्वशान्ति आश्रम के शिविर में बताये जाने वाले ध्यान-योग द्वारा अपने मन को सम-शान्त स्थिर करने वाली साधनायें।

अब मैं उस महान विभूति के विषय में बताना चाहूँगा, जिनके संग-सेवा के प्रभाव से एवं उनके द्वारा भगवत-पद-शक्ति को प्राप्त करने वाली ध्यान-योग के अभ्यास से मन की एकाग्रता बढ़ती गई। योगसिद्ध महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जप करते रहने से अनुकूल परिस्थितियों में मन प्रसन्न रहता ही था परन्तु प्रतिकूल परिस्थिति में भी मन के सम-शान्त-प्रसन्न रहने की भी शान्ति मिलती रहती थी। इस प्रकार मैंने विद्यार्थी जीवन में इतनी जल्दी उन्नति कर बिना रिसवत दिये दिल्ली मेट्रो में इंजीनियर पद प्राप्त हो गया। जबकि हजारों पढ़े-लिखे विद्यार्थी सर्विस के लिये भटक रहे हैं।

उप-आश्रम के प्रबन्धक जी भी जब आश्रम के सम्पर्क में आये थे उस समय उनका पहले का जीवन अत्यन्त विषयी था श्री गुरुदेव की उनपर कृपा हुई। उन्होंने भजन-ध्यान में जोरों से रूचि पूर्वक या श्रद्धा-प्रेम-पूर्वक तीव्र वैराग्य द्वारा अपने विषयी जीवन का विषयी प्रेमी पदार्थों का त्याग कर दिया और श्री गुरुदेव की बताये हुए महामंत्र शक्ति, ज्ञान-शक्ति और ध्यान-शक्ति के द्वारा साधनपरायण होकर, एकनिष्ठ, कठोर संयम-व्रत को धारण किया। संगीत का अध्ययन किया हुआ था, उसके माध्यम से १०-१२ वर्ष तक गाँव, गाँव में, शहरों में, बजारों में, मोहल्लों में प्रात:काल ४-५ बजे से प्रभाव फेरी कर दूर-दूर तक योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मधुर नाम का अपनी मधुर वाणी से बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को

सुनाकर उनको भगवत भावों की भक्ति से विभोर कर भगवान के प्रति श्रद्धा-प्रेम-विश्वास की लगन पैदा कर देते थे।

हर समय हर स्थिति में वातावरण में अपने मन को सम-शान्त, प्रसन्न रखते थे अपनी प्रिय-मधुर वाणी द्वारा श्री महापुरुष भगवान के गुण ज्ञान, पद-प्रभाव, ना-रूप की यश-कीर्ति की दिव्य ज्योति को सदा जगमग जगाये रखते थे, अत्यन्त विषयी समाज में भी कई बार सत्संग कराया। विषम से विषम परिस्थिति में भी व्यथित अधीर न होकर, सदा मधुर, प्रिय, विनययुक्त नम्रता की वाणी से ही व्यवहार करते थे। आश्रम के चारो तरफ का वातावरण भगवतमय बनाये रखते थे।

होनहार होने वाली घटना का समय आया- श्री रिक्क्षन जी का शरीर दिन प्रति दिन क्षीण और शक्तिहीन होता गया फिर भी इस अवस्था में स्वभाव पूर्ववत रहा। व्यवहार में वही नम्रता-विनयता, सहनशीलता, धैर्य, उत्साह वना रहा। २४ जनवरी २०१० में रात्रि में अपने पास सोये रक्षक-सेवक को बिना जगाये शरीर का त्याग कर दिया।

आज ऐसी देवमूर्ति या पार्थिव शरीर तो नहीं है, परन्तु गाँव-गाँव में, नगर में, बाजारों में सत्संग मण्डली में और उनके सम्पर्क में आने वाले दैवी-पुरुषों में छात्र-छात्राओं में आज भी उनके द्वारा किये भगवत-पद शक्ति के प्रचार-प्रसार से जो लोगों को आनन्द-शक्ति की अनुभूति हुई उसका यश-गान कीर्ति लोग करते रहते हैं। आश्रम के आस-पास गाँव में या शहर में जहाँ कहीं भी रहते थे, वातावरण भगवत भावमय बनाये रखते थे, यद्यपि पढ़े-लिखे नहीं थे फिर भी भगवत कृपा से असम्भव को भी सम्भव कर दिखलाया।

इनके सम्पर्क में आये हुए एवं उनके संग में परम लाभ का अनुभव करने वाले उनकी मधुर, सरल, नम्र, वाणी का पान करने वाले उनकी याद से ही सन्तुष्ट होते रहते हैं, क्योंकि उनके अभाव में कार्यरत से ऐसा व्यवहार सरलता, नम्रता-मधुरता का सहनशीलता का प्राप्त होना सम्भव नहीं है।

—अरविन्द गौहरी, देहली

आप स्वंय विचार करें। जो मनुष्य श्री विश्वपिता ॐ आनन्दमय प्रभु द्वारा तैयार किये हुये, अपने तन के स्वंय मालिक बन कर, इस ब्रह्म-सृष्टि के प्रेमी-प्रदार्थों को अर्थात् धन-जन आदि को अपने आज्ञाकारी बनाने के कर्म करते हैं उन मनुष्यों को युगल-जोड़ी बनाकर पारिवारिक पदाधीश बना देते हैं और किसी को राज्यपाल व मिनिस्टर भी बना देते हैं परन्तु उनके दिमाग को खाली कनस्टर कर देते हैं।

ईश्वरः सर्वभूतानां, हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानी, यन्त्ररूदानि मायया।।
(श्री गीता अ० १८ श्लोक ६१

ज्ञान-खण्ड

भगवत-पद पर चलने वाले साधकों के लिए सुगमतम साधन

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''भगवत-भक्ति के पात्रों की पहचान''

अनुकूला को ठोकर मारने-वाला ही प्रभु भक्ति करने का पात्र है, और यही सच्ची भक्ति कर सकता है।

प्रतिकूलताओं का आदर दे कर सम, शान्त, प्रसन्न रहने वाला ही प्रभु भक्ति करने का अधिकारी है, पात्र है।

भगवत-भक्त के जीवन में अनुकूलता का कोई महत्व नहीं, उसके शुद्ध मन में सारी अनुकूलताओं, कामनाओं, इच्छाओं और आशाओं की समाप्ती रहती हैं। हर समय भगवत आनन्द में मग्न रहने की शक्ति प्राप्त रहती है। जो सच्ची-प्रेम-भक्ति के आठवें आदेशों का पालन कर १९वाँ सूत्र की महावरदान रूप सिद्धि को प्राप्त कर लेता हैं श्री सच्ची-प्रेम भक्ति का १९वॉ मंत्र है कि हे समदर्शी भगवान। मैं लाभ-हानि, जीवन-मरण, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, अनुकूलता-प्रतिकूलता तथा सुख-दुःखों की प्राप्ति में राग-द्वेष एवं हर्ष-शोक रहित, सहनशीलता, धीरता, वीरता, गम्भीरता व निर्भयता और समता-प्रसन्नता, शान्ति सन्तोष पूर्वक, हर समय, निरहंकारी दया-प्रेम युक्त, भगवत आनन्द में मग्न रहूँगा।

तराजू की डंडी तभी सीधी होती है जब दोनों पलड़े पर समान वस्तु होती हैं इसी प्रकार मन की स्थिरता मन की शान्ति मन की शक्ति तभी प्राप्त होती है, जब १९वें मंत्र, की समानता के भाव मन में आ जाते हैं। श्री सच्ची प्रेम भक्ति पृष्ठ सं.१ में लिखा है कि ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की सच्ची भक्ति करने के लिये आठ तत्व हैं-नाम-रूप-गुण-ज्ञान-भाव-आचरण और प्रेमी-पदार्थ, इन आठ-तत्त्वों का ज्ञान ही २१ सूत्रों में प्रकाशित है, इनको दीर्घकाल तक प्रतिदिन ३ समय पठन करने का आदेश है, तात्पर्य कहने का यह है कि २१ मंत्रो का ज्ञान अपने दिमाग में धारण हो जायें।

ब्रह्मज्ञान शीर्षक ज्ञान में कथन किया है कि गुणों को धारण करना ही ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के परम-पद और मोक्ष की प्राप्ति का साधन है।

पुनः आगे श्री गुण-विद्या के प्रथम पाठ में भक्तों को मंत्र सूत्र सं.१२ मे सावधान किया कि लीलामय विराट-स्वरूप विश्व-भगवान पर दोष-दर्शन-श्रवण, कथन और मनन-विचार करने का आप के पास समय ही नहीं फिर १३मंत्र में भक्तों को, भगवन-आदेशों को पालन-करने में कैसी तत्परता रखनी चाहिये। कथन किया कि---

भगवन भक्ति के पात्रों को श्री महापुरूष देव की साधारण व महाघोर संकट-दायनी-आज्ञाओं को तत्परता के साथ प्रसन्नता-पूर्वक पालन करने में श्रद्धा-प्रेम-विश्वास रखना।

श्री गुण-विद्या आध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं के श्रद्धा का परिचय देते हुये कथन किया कि-

श्री गुण-विद्या के छात्र-छात्रयें भगवत आज्ञानुसार सेवा कार्य प्रसन्नता व वीरता के साथ विधि-पूर्वक करते हुये, फल स्वरूप लाभ-हानि, सुख-दुख जय-पराजय आदि द्वन्द्वों में समचिन्त रहने के पाठ को पक्का करने के

अभ्यासी हों, यही उनकी श्रद्धा का परिचय है। एवं पृष्ठ ११७ पर अपनी मानसिक स्थिति को ठीक रखने के लिये बताया। कि

जो सामता सिद्धि के उपासक मानव सहनशीलता के साथ धैर्य को धारण कर प्रसन्नता पूर्वक इस ग्रन्थ को पृष्ठ १३से१६ तक प्रकाशित सात नियमों के अनुसार अर्थात् श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ के अनुसार जप-ध्यान और सात्त्विक सेवा-संयम करेंगे, वही श्रद्धा सम्पन्न भक्त वीर विजयी होंगे, आसुरी ममता-अहंकार युक्त-प्रेम के कामी मनुष्यों का जीवन विभिन्न विपत्तियों से युक्त दु:खी-अशान्त रहने का विधान है। इस प्रकार अपने इष्ट ग्रन्थों में सद्-गुण-विद्या का महात्म्य बतलाते हुये अन्त में यह निश्चय दे दिया कि सद्गुण विद्या के बिना विश्व में जितनी भी विद्याएँ आनन्द-शान्ति दायक मानी जाती हैं, वह सभी चिन्ता, क्रोध, भय नाराज़गी दायक हैं अर्थात अमूल्य मानव देह को दु:खमय- शान्तिमय बनाने वाली हैं।

ब्रह्म-सृष्टि के प्रबन्धक श्री गीता ज्ञान के आचार्य ॐ श्री विधानाचार्य भगवान ने तो श्री गीता अ० ३ के ३२वें श्लोक में अपने सिद्धान्त एवं मत के विपरीत चलने वालों को पूर्ण रूप से श्राप ही दे दिया कि जो मानव मुझमें दोषारोपण करते हुये, मेरे मत के अनुसार नहीं चलते हैं, उन मूर्खों को तू सम्पूर्ण ज्ञानों में मोहित और नष्ट हुए ही समझ।

भगवन् । आज के पावन-पवित्र सत्संग-स्थल पर ''भगवत-भक्ति के पात्रों की पहचान की'' सुगम-सरल-शुद्ध पवित्र लेखनी श्रवण कर यदि अपने अन्दर यदि एक भी अवगुण का पालन-शोषण हो रहा हैं तो उसको अतिशीघ्र बल-पूर्वक समाप्त कर देने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिये अन्यथा बूँद को समुद्र बनते क्या देर लगती हैं, किचिन्तं अग्नि को भयकर जंगल भस्म करने में कितना समय लगता है, एक अवगुण के पीछे विशाल अवगुणों की फौज खड़ी है और जब अवगुणों का सम्राट अहं, अपने अहं-धारी अवगुणों की सेना को देख कर, फिर तो मनुष्यों की तो बात ही क्या भगवान को भी अन गिनत दोषों से भर देता है जैसे हिरण्यकश्यप, रावण, कंस आदि अनेकों हुये, कौरवों की सभा में जब भगवान कृष्ण को शिशुपाल, जब दोषों से मड़ने लगा, तब भगवान शान्त प्रसन्नचिन्त से सुनते रहे, जब कि उस समय अनेकों योद्धा जोश में भर गये थे अन्त में दोषों को माफ करने की सीमा थी जब सीमा पूरी हो गई फिर भी जब आवेश में भरा हुआ वह और दोष बताने लगा, तब भगवान ने सुदर्शन चक्र से उसके अहं सहित देह-दिमाग को नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

दण्ड-पद के दाता ॐ श्री न्यायकारी प्रभु पिता जी किसी के अहं को बढ़ने नही देते चाहे वह महल में रहने वाला हो चाहे झोपड़ी का हो चाहे धनपति हो चाहे करोड़पति हो या कंगाल भिक्षुक हो। चाहे पदाधीश हो या दास हो चाहे आश्रम-मन्दिर का पुजारी-महन्त ब्रह्मचारी हो अथवा घर-गृहस्थी हो या विष्ठाचारी हो।

अत: पाँचो उँगली एक समान न होने पर भी कर्म-क्षेत्र, कार्य-स्थल पर समान हो, एक साथ मिल कर प्रवृत्त होती है इस प्रकार हम लोगों को भी विचार-भिन्नता होने पर भी कार्य-क्षेत्र में एक होकर रहना चाहिये।

दिमागी शान्ति और आत्मिक आनन्द-शक्ति युक्त श्री भगवत पद प्राप्त करने -योग्य मुख्य ज्ञान निम्नांकित है—

ध्यानयोग द्वारा मन की एकाग्रता का अभ्यास करना। वैदिक सनातन ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुये अपने इष्ट भगवान के स्वरूप को मन से स्मरण करने के अभ्यास से मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती हैं।

संसार में फैलाये हुये माया-मरिचकाओं के जालों से अपने धैर्यता, सहनशीलता, प्रसन्नता और त्याग-वैराग्य की शक्ति से बाहर निकलें

एक निष्ठ, अविचल, अव्यभिचारिणी भक्ति की निर्मल-शुद्ध धारा में मन बुद्धि, इन्द्रियों को ॐ आनन्दमय प्रभु जी के विधान के अनुरूप बनाने में सतत्-प्रयत्न शील श्री प्रदीप जी एवं श्री दीप-शिखा जी भगवन्,

आप लोग सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान, परम-शक्ति-सम्पन्न, ॐ आनन्दमय भगवान के दया-प्रेम प्रभाव से, संसार में फैलाये हुये माया-मारिचकाओं के जालों को धैर्य-सहनशीलता, प्रसन्नता, समता-सन्तोष, त्याग-वैराग्य रूपी शस्त्रों से काटते हुये सदा के लिये परम सुख-शान्ति, आनन्द के धाम ॐ आनन्दमय परम-पद को प्राप्त करने के पात्र बन जायें यही हमारी शुभ इच्छा है।

ब्रह्म-सृष्टि निर्माण कर्त्ता और लय कर्त्ता, ॐ आन्दमय प्रभु पिता जी के गुण-ज्ञान पद-प्रभाव के अतिरिक्त समस्त जीवधारी मानव मंडल की बुद्धि का ज्ञान घनघोर अज्ञानमय है, तत्त्व ज्ञान रहित, मिथ्या, सदा पश्चातापमय जन्म-मृत्यु दायक है! श्री गीता अ०१६ श्लोक ७ से १८ तक, पुन: ७ से १८ तक के मिथ्या सिद्धान्तों भावों, आचरणों को धारण कर अहंवादी नारी-नरों को श्लोक १९-२० की कठिन दण्ड में स्वयं ही प्रवेश कराते रहते हैं।

शान्त-गम्भीर भावों में मनन-शील श्री प्रदीप जी एवं श्री दीपशिखा जी,-भगवत् विधान के विपरीत कर्म-धर्म करने वाले नारी-नरों में अहंभाव की जाग्रति रहती है, वह ॐ आनन्दमय भगवान के मत के अनुसार किये जाने वाले धर्म-कर्म को तुच्छ समझते हैं, ऐसे अहं-वादी के अन्दर राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ की चिनगारी निकलती रहती है।

ॐ आनन्दमय भगवान के मतानुसार कर्म धर्म कर्त्ताओं में नम्रता, विनयता, सहनशीलता, धीरता, वीरता, समता-प्रसन्नता आदि गुणों का समावेश बना रहता है, इस परम-सम्पत्ति के प्रभाव से प्रिय भक्त हर परिस्थिति में सम-शान्त-प्रसन्न रहते हैं, इस परम धन के प्रभाव से उनमें 'मैं' 'मेरा मन' का और मैं-मेरी बनाने की मनो-कामना का अभाव हो जाता है हृदय शुद्ध, निर्मल, सम-शान्त स्थिर का यही लक्षण है, हृदय में दृढ़-निश्चय रहता है,एक ॐ आनन्दमय भगवान के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं है श्री गीता अ.१८ श्लोक ६१ के विधान-अनुसार ही समस्त नर-नारियों को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी भ्रमण कराते रहते हैं इस उपरोक्त भगवत सिद्धान्त में जिस मानव की गुरू उपदेश वक्ताओं की मठ-मन्दिर-आश्रम संस्थाओं के पंडित महात्माओं में श्रद्धा नही हैं उनके समस्त ज्ञान को ब्रह्म-सृष्टि के विशेषज्ञ प्रभुपिता जी ने कठिन शाप दिया है श्री गीता अ. ३ श्लोक ३० से ३२।

भगवत-अनुकूल सात्विक गुणों-में श्रद्धा प्रेम करने वालों के सभी कर्म परमार्थमय होते हैं जिसके प्रभाव से हर समय भगवत आनन्द में मग्नता बनी रहती है।

राजस गुणों को धारणकर्ता नारी-नरों में कामनाओं की अनन्त तरंगे उठती रहती हैं, उनकी मन-बुद्धि, इन्द्रियाँ हर समय व्याकुल, अशान्त, परेशान रहती हैं-अनेक चित्त विभ्रान्ता:मोह जाल सम समावृत्ता। इस प्रकार मोह-जाल समावृत्ता: नारी-नर अपने ही कर्मों की तरफ खींचते हैं उन्हीं को श्रेष्ठ कथन करते हुये लोभ-भय दिखलाते रहते हैं।

सात्विक गुणों के श्रद्धालु जबरदस्ती, लोभ-भय नहीं दिखलाते, वह तो यही कथन करते हैं- यथेच्छासि तथा–कुरू–जैसे तेरी इच्छा हो, वैसे ही कर?

तामसी प्रकृति के, भगवान-विधान के द्रोही नारी-नर तो घोर-अन्धकार मय कर्मों में ही प्रवृत्त रहते हैं, वह बलपूर्वक, जबरदस्ती, भय-क्रोध से अपने आज्ञाकारी

बनाने के प्रयत्न में लगे, रहते हैं। इस प्रकृत्ति के नारी-नरों के समस्त कर्म-धर्म त्यागने, योग्य हैं–श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ पृष्ठ स. १९पर लिखे हुये ''स्मृति ज्ञान को'' पढ़कर अपने बुद्धि को सदा के लिये निर्भय और निश्चिन्त बना लेना चाहिये।

यह भगवान-सिद्धान्त का ज्ञान समस्त मानव के लिये, न्यायकर्त्ता, परम दयालू, ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी, का स्वंय का बनाया हुआ है। अपूर्ण ज्ञान-शक्ति प्राप्त करने के लिये श्री गीता अ. १५ श्लोक १५ को अवश्य अध्ययन करना चाहिये, श्री गीता ज्ञान के अतिरिक्त विश्व की अबादी में जो भी, जितना ज्ञान दर्शन-श्रवण पठन-पाठन में आता है सब अज्ञान-भय-ज्ञान है, श्री गीता अ. ३ श्लोक ३२, श्री गीता अ. १८ श्लोक ५८!

बहन दीप शिखा जी-आपके द्वारा प्रेषित पूर्व के अनुभव पत्र में आपके द्वारा लिखे गये वाक्य जो आपने पूज्य पिता जी से सीखा अर्थात् अपने जन्म दाताओं से सीखा, जो इस प्रकार हैं, ''कि अच्छे आचरणों से जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, और बुरे आचरणों से जीवन पर कैसा प्रभाव है।'' ''इससे मैंने सीखा कि जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थियाँ हों, मनुष्य को कभी गलत संगति व गलत कार्य नहीं करना चाहियें, क्योंकि उनका परिणाम बहुत ही गलत होता है।'' इन वाक्यों को सुनहरे-अक्षरों से भी अधिक महत्व-पूर्ण हीरे के अक्षरो में लिखने पर है!

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी द्वारा बनाये गये सिद्धान्तों की परवाह न करना, अवहेलना करना उसके विपरीत चलना चलाना ही गलत संगति व गलतकार्य करना है, और यही हमारे जन्मदाता, पालन कर्त्ता सगे-सम्बन्धी इष्ट, मित्र, समाज करने का लोभ, भय, देते हैं, और उनकी न मानने पर बल-पूर्वक, अन्याय-पूर्वक करने-कराने का विशेष प्रयत्न करते हैं।

हमको तो सदा निर्भय-निश्चिन्त रखने वाले ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजीकी ही अनन्य-शरण का आश्रय लेना है ससांरिक भोगों में आसक्त, यश, मान, प्रतिष्ठा के भोगी कठिन दण्ड के भोक्ताओं से क्या लेना-देना हैं उनके कर्मों का भुगतान तो स्वंय ही दण्ड-दाता जी करते करवाते रहेंगें श्री गीता अ.१६ श्लोक १९-२० देखना चाहिये। ''भक्तों की रीत क्या है२ श्री आनन्द किर्तन भाग१ पृष्ट १६ भजन १८'' ॐ शान्तिमय

शुभ चिन्तक– किरन

*** जो मनुष्य भगवान् के मार्ग में लगे हैं उनके साधनों में सुविधाएँ प्रदान करना तथा (अन्य-अन्य) को सत्संग में लगाना यही परम सेवा है। लाख आदमियों की भौतिक सेवा से एक आदमी की परम सेवा बढ़कर है।**

–तत्त्व चिन्तामणि भाग-७ (श्री विश्वशान्ति भाग-१)

*** जिनका मन समभाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है, क्योंकि सच्चिदानन्दघन परमात्मा निर्दोष और सम है, इससे वे सच्चिदानन्दघन परमात्मा में ही स्थित हैं।**

–श्री गीता अध्याय-५, श्लोक-१९

चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रातें !

प्रेमी-पदार्थ जन्य, समस्त दर्शन श्रवण से होने वाली संसार की खुशियाँ, उनकी रौनक, उनका हर्ष, उनकी प्रेम-प्रसन्नता का सुख, शान्ति और आनन्द संसार में अनादि-काल से, आज तक किसी का भी नहीं ठहरा।

जैसे दीपावली का दीपक कुछ समय पश्चात् बुझता रहा है और भविष्य में भी बुझता ही रहेगा। फिर भी अधंकार में चलने वाले ठोकर-खाते, रोते-विलपते ही रहतें हैं, प्राचीन काल से ऐसी स्थिति होती चली आ रही है। बड़े-बड़े बल, ऐश्वर्यवान-कीर्ति, धन-सम्पत्ति को भोगने वाले इस संसार से निराशा को लेकर ही बिदा हुये। सदा से हर्ष की तालियाँ शौक के समय शान्त हो जाती हैं फिर तो पश्चाताप के ही आँसू नेत्रों से बहते हैं।

''इस भौतिक जगत'' संसार में जितने भी प्रेमी-प्रदार्थ जन सुख है, एवं किसी विशेष प्रकृति जन शोभा का जो सुख शान्ति या प्रसन्नता है, उसके लिये विशेष चेतावनी दायक ब्रह्मविधान श्री गीता अ० ५ श्लोक २२ और श्री गीता अ० १८ श्लोक ३८-३९ में प्रकाशित है। श्री गीता अ० ५ श्लोक २२ का हिन्दी अर्थ है।

इन्द्रिय तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने-वाले सब भोग हैं, यद्यपि विषयी पुरूषों को सुख-रूप भासते है तो भी दु:खों के ही हेतु हैं, और आदि-अन्त वाले अर्थात् अनित्य हैं, इसलिये-हे मानव। बुद्धिमान् विवेकी पुरूष उनमें नहीं रमते।

श्री गीता अ० १८ श्लोक ३८-३९ में कथन किया– विषयों और इन्द्रियों के संयोग से जो सुख होता है, वह भोग-काल में तो अमृत की तरह लगता है, परन्तु उसका परिणाम विष हो जाता है अर्थात् -बल-वीर्य-बुद्धि, धन उत्साह परलोक अर्थात् -भविष्य-नाशक होने के कारण ही इसको विष तुल्य बतलाया है।

अत: अन्धेरी रातों से मुक्त होने के लिये श्री इष्ट भगवान के स्वरूप को याद करते हुये-ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का मधुर कीर्तन करने के अभ्यास से हमारे दिमाग में सोते हुये, ध्यान-योग-दायक ज्ञान-वैराग्य की जाग्रति होगी। अन्यथा शत्रु मैं की अग्नि से तपायमान होकर जीवात्मा चिन्ता-नाराजगी युक्त दु:खी अशान्त रहेगा! ॐ आनन्दमय! ॐ शान्तिमय

*** निष्कामी जन और मन, आनन्द-शान्ति दायक ज्ञान वैराग्य युक्त भगवत् प्रेम की जाग्रति कराता है।**

*** सकामी जन और मन, दु:ख-अशान्ति दायक आसुरी अहंता-ममता युक्त, इन्द्रिय-विषय जन्य प्रेम की जाग्रति कराता है।**

–ब्रह्मज्ञान भाग-१

ईश्वरः सर्वभूतानां, हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि मायया।।

''श्री गीता अध्याय १८, श्लोक ६१''

यन्त्रारूढानि माया के महान प्रबन्धक दण्ड-पद के दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी अपना न्याय दण्ड विधान लागू करने के लिये उसका भुगतान करने के लिये-प्रेमी-प्रदार्थ देश, काल, समय-परिस्थिति, स्थान-वातावरण आदि की व्यवस्था करते-कराते रहते हैं।

परन्तु इस गोपनीय तत्त्व-रहस्य से अनभिज्ञ, भगवत-विधान के ज्ञान से रहित मानव-मंडल दयामय जी के होने वाले विधान में दिमागी रोगों से अति विकराल हो जाते हैं इसमें तो भगवत विधान के ज्ञाता-स्थिर-सम-शान्ति एकाग्रता पूर्वक ॐ आनन्दमय भगवान का चिन्तन-मनन करने वाले एक निष्ठ भक्त ही प्रभु की लीला में प्रसन्न रहते हैं जैसे कि प्राचीन के शास्त्रों में कई नाम आते हैं श्री गीता में आरम्भ से अन्त तक में पद-दायक विधान और दण्ड दायक विधान का ही वर्णन किया है, जिस प्रकार पद-दायक विधान पर चलने पर महान-लाभ मिलता है इसी प्रकार दण्ड-दायक विधान पर महान हानि है। श्री गीता अ० १८ श्लोक ५८/

उमरिया बीती जा रही है, और प्रतिकूलता घनघोर होती जा रही हैं। निष्कामी भक्त की बुद्धि स्थिर और निश्चयात्मिक होता है।-इस रहस्य का अभी अनुभव नहीं हो पाया, क्योंकि अभी दर्शन-श्रवण-कथन में उत्तेजना, आवेश, जोश, रोष है, अन्दर से पापों की, चिन्ता नाराजगी राग-द्वेष, ईर्षा-कलह की चिनगारी प्रकट होती है। जैसा कि श्री गुण-ज्ञान सागर ग्रन्थ में ज्ञान सूत्र में प्रकाशित है, कि वेदना बाहरी शरीर के विकारों की सूचक है, और चिन्ता-नाराजगी, ईर्षा-कलह, अन्तः शरीर के पापों की बोधक है।

किसी व्यक्ति या जीव को, पदार्थ या परिस्थिति को अपने सुख-दुख का कारण नहीं मानना चाहिये क्योंकि अनुकूलता में हेतु मानने से राग हो जायगा और प्रतिकूलता में हेतु मानने से द्वेष हो जायगा और फिर-क्रोध की जाग्रति हो जायगी। इसलिये श्री गीता में भगवत आदेश है कि मनुष्यों को राग-द्वेष रहित हो कर कर्म करना चाहिये।

समय बड़ा मूल्यवान है, अतः ॐ आनन्दमय अनुरागियों को अपने स्वकर्म-रूप साधन में लगे रहना चाहिये, दूसरों की निन्दा में समय को व्यर्थ नहीं गॅवाना चाहिये-साधकों के लिये वाणी का संयम परम आवश्यक है।

ब्रह्म-सृष्टि के निर्माता शासन कर्त्ता ॐ श्री कृपामय अपने विधानानुसार ही ऋतुओं का परिवर्तन करते आये हैं और करते ही रहेंगें। इसी प्रकार मानव के दिमागी मनन-विचारों से भी देह दिमाग का परिवर्तन करतें आयें हैं, और भविष्य में भी करते रहेंगें।

मनुष्य को चाहिये कि बाहरी सुख-सुविधाओं में प्रेमी प्रदार्थों की अनुकूलताओं में एवं अन्य-अन्य प्रकार की इच्छाओं की अनुकूलताओं कि रक्षा-वृद्धि में एवं उसमें विघ्न करने वाली प्रतिकूलताओं में समय शक्ति न लगा कर अपने दिमागी मनन-विचारों को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के अनुकूल विधान के अनुसार ही बनाने में समय शक्ति लगावें।

जिसकी-जितनी दिमागी मनन-विचारों में शुद्धता आती जायेगी, वैसे-वैसे दिमागी रोग अर्थात् दिमागी-रोगों के मनन-विचार शान्त होते जायेंगे। और शरीर भी आरोग्य रहेगा। आपसी वातावरण में प्रेम-प्रसन्नता और शान्ति-सन्तोष छा जायेगा।

भगवत-आदेशों के त्याग से दिन-रात अनर्थ-कारी मनन-विचार का मनन-चिन्तन ही दैहिक और दिमागी रोगों और समाजिक रोगों की वृद्धि करता रहता है। पाँच प्रकार की ब्रह्म-हत्या में

१- प्रथम हत्या है श्री महापुरूषों के उपदेश-आदेश और आज्ञा की अवहेलना करना ब्रह्म-हत्या है। इस विधान को आदर देने वाले साधन सम्पन्न साधकों के लिये ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के नाम-रूप चिन्तन के अतिरिक्त अन्य अनर्थकारी विचारों के संकल्पों के लिये समय ही नहीं। ॐ शान्तिमय।

दण्ड-पद के दाता
ॐ आनन्दमय प्रभु-पिता जी की भगवत-सृष्टि में!

जन्म-दाताओं का, जन्म ग्रहिताओं का, भाई-बन्धु जनों का, भोग-विलास कामी-मन का, मान-बड़ाई प्रतिष्ठा के दाता-ग्रहिताओं का, कुर्सी-पद देने वाली डिग्रियों का, एवं मनोहर सुख रूप भासने वाली इस माया-मयी सृष्टि का एक दिन वियोग होना निश्चित है। किंश्चिंत मात्र एक बाल का भी संयोग नही रहेगा, पुन: बहुत काल तक वस्त्र हीन होकर मानव जीवन की प्राप्त सुविधओं से रहित होकर, जलचर, थलचर, नभचर योनियों में भटकते हुये भ्रमण करते रहना पड़ेगा। इस प्रकार की वाणी का श्रवण करते रहने पर भी कामनाओं की तरंगों बहते हुये बालक, बृद्ध, युवा, नर-नारी सभी इसको कायम रखने के लिये, स्थिर रखने के लिये ही, समय-शाक्ति ज्ञान का दुरूपयोग कर रहें हैं। शारीरिक-शाक्ति के ह्रास के साथ ही साथ सम्पर्क में रहने-वाले प्रेमी-प्रदार्थों का भी शनै:, शनै: सम्बन्ध छूटता जाता है, फिर भी इन्ही को बारम्बार पकड़ने का प्रयत्न बना ही रहता है, जैसे अज्ञानी शिशु मल-मूत्र को हाथ से फैलाता है, हानिकारक चाकू-कैंची, विच्छू जैसे घातक पदार्थों को पकड़ता है, छोड़ना नहीं चाहता, यही भोग-कामी मनुष्यों की है, पुराना स्वभाव बना हुआ है। अति दुर्लभ मानव-जीवन प्राप्त होने पर भी स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं करते बल्कि मनन-विचार और विपरीत कर्मो में जकड़ जातें हैं, जिस उद्देश्य की पूर्ती के लिये मानव जीवन प्राप्त हुआ उसमें प्रवृत्ति ही नहीं होती और न ही उसको जानने के लिये प्रयत्वशील ही होतेंहै।

अति अज्ञानता में डूबे हुये, भगवत-विधान विरूद्ध कर्म-धर्म करने वाले नारी-नरों का दर्शन-श्रवण करके उन्हीं धर्म-कर्मों में प्रवृत्ति कर लेते हैं और मन बुद्धि मे भी यह निश्चय हो जाता है कि जीवन में सुख शान्ति, आनन्द प्राप्त करने का एक मात्र साधन संसार की रौनक का अधिक से अधिक दर्शन-श्रवण करना, इन्द्रियों के द्वारा अधिक से अधिक भोग करना, संग्रह करना ही, श्रेष्ठ सुखी जीवन का साधन है, सृष्टि चलाने के लिये ही यह जीवन है, इस प्रकार के मनन-विचार, वालों का विस्तार से वर्णन श्री गीता अ० १६ श्लोक १५-१६ में किया है।

श्री गीता जी के इन दो श्लोकों में भगवान ने आसुरी-प्रकृति वालों के मनन-विचारों का कथन किया है एवं इस प्रकार-अपवित्र नकर की प्राप्ति का कथन किया है। (श्री गी० अ० १६–श्लोक १९-२०)

श्री गीता अ० १६ श्लोक १५-१६ का हिन्दी अर्थ उच्चारण किया जा रहा है।

भगवत-विधान के अश्रद्धालू, दैवी प्रकृति वालों के गुण-ज्ञान-भाव-आचरणों के त्यागी मनुष्य कहते हैं -कि मैं बड़ा धनी, बड़े कुटुम्ब वाला हूँ, मेरे सामान दूसरा कौन है? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा, और आमोद-प्रमोद करूँगा इस प्रकार अज्ञान से मोहित रहने वाले तथा अनेक प्रकार से भ्रमित-चित्त वाले, मोहरूप जाल से समावृत और भोगों में अत्यन्त आसक्त (आसुर-लोभ) महान अपवित्र नरक में गिरते हैं।

फिर पुन: २ श्लोक में अर्थात् १६-१८ में आसुरी-प्रकृति वालों को पहचानने के लिये उनके लक्षणों का वर्णन किया और पुन: श्लोक १९-२० में यह बताया कि-मैं संसार में बार-बार ऐसी प्रकृति वालों को आसुरी-योनियों में ही डालता हूँ।

करूना-कन्द, दयामय ॐ आनन्दमय भगवान तो जीवों को दारूण-दुखी-अशान्त-तड़पते हुये देखकर ही उसे भविष्य में होने वाले जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त होने के लिये ही मानव जीवन देते हैं।

मानव जीवन संसार चक्र में घूमने के लिये नहीं मिला है यह तो भविष्य में होने-वाले चक्र को समाप्त करने के लिये मिला है। अत: जन्म के पश्चात् पालन-कर्त्ताओं द्वारा परिवारिक जनो द्वारा समाज द्वारा जो दर्शन-श्रवण से स्वाभाव बन गया है उसको श्री ब्रह्मवेत्ता ध्यानमग्न महापुरूषों द्वारा बताये गये भगवत विधानों को श्रद्धा-प्रेम उत्साह पूर्वक धारण करते हुये हर समय योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का स्मरण-चिन्तन करते हुये श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के पृष्ठ १३ पर दिये गये, सात नियमों को पालन करने का तीव्र-अभ्यास करना चाहिये। अन्यथा दण्ड-पद के दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी को विवश होकर श्री गीता अ० १६ श्लोक १९-२० के विधान को लागू ही करना पड़ेगा। श्लोक-१९-२० का हिन्दी अर्थ- कि मैं संसार मे द्वेष करने वाले पापाचारी और क्रूरकर्मी नराधमों को (मैं संसार में) बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ।

वे मूढ़मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म-जन्म में आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं फिर उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर-नरकों में पड़ते है। **ॐ शान्तिमय**

वर्तमान के धार्मिक मानव का स्वभाव।
''तोता-रटन''

तोता विषय को रट लेता है रटा हुआ विषय सुना भी देता है, परन्तु करता क्या है? बहेलिये के जाल में डाले हुये दानों को चुगता हुआ, जाल के बन्धन में जकड़ जाता है!

इसी प्रकार धार्मिक कर्त्ता हो, उपदेश दाता हो अथवा उपदेश श्रोता हो, शास्त्रों का स्वाध्यायी हो, एवं अन्य प्रकार की विद्याओं का ज्ञाता हो, वह विषय रट लेते है अर्थात् कंठस्थ कर सुना भी देतें एवं नाना प्रकार के सुने-सुनाये हुये धर्म-कर्मों में प्रवृत्ति भी करा देते हैं। परन्तु करते क्या हैं, जैसे बहेलीया द्वारा जाल में डाले हुये दाने को चुगने के लिये पहुँचे-जाते हैं। इसी प्रकार माया द्वारा फैलाये हुये इन्द्रिय भोग जनित-प्रेमी-पदार्थों के भोग-भोगनें में रम जाते हैं और इसी को अपने कर्त्तव्यों का निश्चय कर उसी में तनमय होकर भविष्य के दु:खमय अशान्तिमय बन्धनों में जकड़ जाते हैं।

जब कि सर्वज्ञ-सर्व शक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का समस्त मानव मंडल के प्रति आदेश दिया है श्री गीता अ० ५ श्लोक २२?

न तेषु रमते बुधा:?

श्री गीता अ० १३ श्लोक ८-९-१०-११?

इस तत्त्व-रहस्य को सुगमता पूर्वक भगवान ने समझाने के लिये श्री गीता जी में प्रारम्भ में ही इस तत्त्वमय, रहस्यमय ज्ञान की प्राप्ति का साधन बताया, और उसका फल बताया कि तू योग को प्राप्त होगा अर्थात तेरा ॐ आनन्दमय परमात्मा से संयोग हो जायगा। जैसा कि अध्याय २ श्लोक ५१में कथन किया है!

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सद्गुण-सदाचार धर्मात्माओं के मन की सम्पत्ति है। यह धर्मात्माओं के मन में फूलते-फलते हैं।

दुर्गुण-दुराचार पापी मन की सम्पत्ति है। यह पापात्मओं के मन में फूलते-फलते हैं।

धर्मात्मा-ब्रह्मभूत प्रसन्न आत्मा, न शोचति कॉक्षति, ज्ञानविज्ञान तृप्त आत्मा?

पापात्मा–क्रोधाद्भवति-

सम्मोहा:- ज्ञान-विज्ञान-नाशनम्।

सदा अन्दर से राग-द्वेष-कलह-क्लेश की चिनगारियाँ निकलती हैं।

भगवत भाव रहने पर-हर प्रकार की सेवा में प्रसन्नता-सुख और आनन्द?

और भगवान भाव न रहने पर हर समय,हर प्रकार की सेवा में, हर प्रेमी पदार्थ में क्लेश-नाराज़गी, अप्रन्नता बनी रहती है और विपरीत ज्ञान का प्रवाह ही बहता है।

अनन्त जन्मों का कारण

अनन्त-जन्म बीत गये, परन्तु मर्ज़ ''बिमारी'' नहीं गई, सम्भव है पतित-पावन दीनदयालु प्रभु पिता जी ने बार-बार मौका भी दिया हो, परन्तु विधिवत् परहेज न करने से बिमारी ज्यौं की त्यौं बनी है

रोगों के विशेषज्ञ श्री विधानाचार्य भगवान श्री गीता अ० ३ श्लोक ३४ में सावधान करते हैं कि राग-और द्वेष यह दोनों ही कल्याणकामी मनुष्य के कल्याण-मार्ग में विघ्न करने वाले महान शत्रु हैं। यहीं दोनों महान शत्रु अनन्त जन्मों के दाता हैं, जब तक इससे पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होंगे तब-तक मर्ज़ से होने वाले महान-भय दायक दु:खों के जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नही हों सकेंगे।

मानव का मनुष्य जन्म में आना इस बात की पुष्टि करता है कि अभी ''मम माया दुरत्या'' से छुटकारा नहीं हुआ है। श्री गीता अ० ६ श्लोक १४। रोगों से मुक्त होने वाली औषधी का सेवन नहीं किया। केवल रोगों को बढ़ाकर जटिल करने वाला ही साधन किया। श्री गीता अ० ६ श्लोक १५- और २०-पुन: इसका फल श्लोक २३ में कथन किया।

ज्ञान की प्राप्ति में स्थिर मन-बुद्धि की प्रधानता

श्री गीता अ० २ श्लोक ५२-५३।

पुन: एक मात्र निश्चित साधन अ० २ श्लोक ६१ में कथन कर ६२-६३ में इसके विपरीत करने वालों की गति का वर्णन किया है।

ज्ञान कहाँ प्रगट होता है, ज्ञान का पात्र कौन है, हितकारी बुद्धि कब होती है, परमार्थी कौन है, हित भाव की शिक्षा कौन दे सकता है, मित्र कौन है, प्रेम-विद्या की पढ़ाई कब प्रारम्भ होती है। इत्यादि!

इस रहस्य का ज्ञान श्री अष्टावक्र जी को था, मनोविज्ञान के धुरन्धर तत्त्ववेत्ता तत्त्वदर्शी श्री गीता ज्ञान के आचार्य भगवान ने अ० ६ श्लोक २६ में कहा–प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमय्।

शान्त मन बुद्धि में ही ज्ञान प्रगट होता एवं ज्ञानी को तो श्री गीता अ० ७, श्लोक १८ में भगवान ने साक्षात् अपना ही स्वरूप बता दिया है एवं स्पष्ट कह दिया कि ऐसा मेरा-मत है, सिद्धान्त है। सबसे महत्व और हमलोगों के लिए भाग्यवान बनने का विषय तो यह है कि वर्तमान ऐसे ही ज्ञानी-ध्यानी, ब्रह्मवेत्ता, तत्त्ववेत्ता ध्यानयोग के आचार्य, समाधिमग्न श्री महापुरूष भगवान का दर्शन समागम के साथ ही साथ संकेत और इशारे भी मिलते रहे हैं।

शुद्ध-पवित्र भावों से पूर्ण, ज्ञान ध्यान के रत्नों का सागर श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ सदा हमारे हस्तकमलों में है। अन्य गुणों के सागर, ज्ञान के, श्री ग्रन्थों का स्वाध्याय दैनिक दिन चर्या में है। दिमागी रोग दमन-कारी योग-सिद्ध महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' हमारी वाणी में है।

यद्यपि–श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ में प्रकाशित है। ब्रह्मज्ञान के ४२वें ज्ञान-सूत्र के अन्तिम पैराग्राफ में लिखा है कि जिस भक्त की सद्गुण-धारण करने में श्रद्धा नहीं है, उसकी महात्मा और परमात्मा में कथन-मात्र की श्रद्धा है।

ब्रह्म-वेत्ता-तत्त्व-दर्शी महापुरूषों ने सदा से मानव, को सचेत किया, कर रहें हैं, और करते ही रहेंगें, कि उठो जागो और जानने योग तत्त्व को श्रेष्ठ महापुरूषों से जानों। क्योंकि अनादिकाल से मानव अज्ञान-निद्रा में सोता चला आ रहा है, अज्ञान-निद्रा में सोने-वाला हितकारी कर्मों को करने में स्वयं तो असमर्थ रहता है, फिर दूसरों के प्रति, उसके द्वारा हितकारी कर्म, दूसरों के प्रति होंगे, यह सम्भव नहीं!

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ में ३२० धाराओं अज्ञान निद्रा में सोने वाले को जगाने वाली हैं। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के त्याग से ठग धर्मियों के जाल से छूटना सम्भव नहीं! फिर जन्म-मरण के चक्र से छूट जायें यह कैसे सम्भव हो सकता है अत: श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ को ग्रहण कर श्रद्धा-प्रेम-विश्वास के साथ सद्गुणों को धारण करने में ही जीवन की सार्थकता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

*** जो भगवत् भक्त इन्द्रियों के संयम युक्त निष्काम भाव पूर्वक सात्त्विक सेवा और जप-ध्यान करने में तत्पर हैं, उस दिव्य-गुण उपासक सदाचारी भक्त की तपस्या के प्रभाव से नकली महात्मा का वियोग और योगदर्शी-ब्रह्मदर्शी श्री समाधिमग्न महात्मा का संयोग, ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की कृपा से हो जाएगा।**

–श्री विश्वशान्ति भाग-१

मन को वश में कैसे करें?

भगवन्! मन को वश में कैसे करें! क्या करें?

प्रेमियों–मन को वश में करने के लिये ॐ आनन्दमय भगवान से प्रार्थना करें कि हे प्रभो-इस मन ने मुझे हैरान कर दिया है, हे प्रभो-एक ही बात चाहता हूँ कि मन आप में लग जाये।

सबसे बढ़कर यही एक उपाय है। दूसरा उपाय है कि-सोचना चाहिये–मन में क्या बिमारी है–विचार के द्वारा दो ही प्रधान-दोष मालूम देते हैं–विक्षेप और आलस्य।

पाप करते समय निद्रा नहीं आती ! निद्रा और आलस्य हमारे शत्रु हैं। इस प्रकार **प्रमाद और पाप, निद्रा और आलस्य तथा संसार के भोग हमारे शत्रु हैं,** इसलिये इन सबसे बच कर रहना चाहिये, अपना सुधार चाहने वाले मनुष्य को इनसे बचकर रहना चाहिये। जैसा कि सचेत किया है कि–

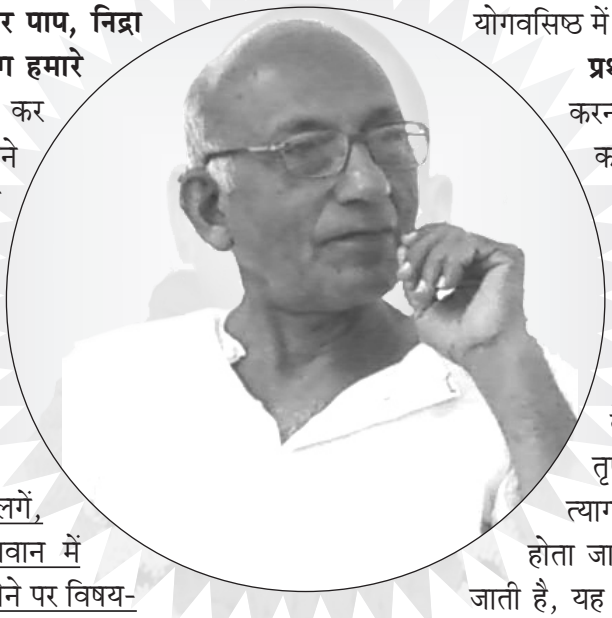

आनन्दमय प्रभु लगन में, ये पाँचों न सुहात।
विषय, भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति बहुबात।।

जब यह पाँच चीजें अच्छी न लगें, तब समझना चाहिये कि अब भगवान में हमारा प्रेम हुआ है, भगवान में प्रेम होने पर विषय-भोग, निद्रा हँसी-मजाक, संसार की प्रीति अच्छी नहीं लगती, बहुत बोलना भी अच्छा नहीं लगता।

आखिर में इन सब बातों को आगे छोड़ना ही पड़ेगा, पहले ही त्याग दें, छोड़ दें, जो पहले ही छोड़ देता है, वह सुखी हो जाता है, निर्भय हो जाता है। धन में हमारा प्रेम है, किन्तु वह चला जाता है, तो दुख होता है। यदि हम पहले ही विवेक और वैराग्य पूर्वक उसका त्याग कर दें, तो हमें रोना नही पड़ेगा। जिनका संयोग है उसका वियोग अवश्य होना है, यह समझकर वह पहले से ही उनका त्याग कर देना उत्तम है, तभी शान्ति मिल सकती है, मन से त्याग कर दो,

मन को वश में करने वालों को पहले यही करना होगा, संसार के प्रेमी-पदार्थों से प्रीति तोड़ने का नाम वैराग्य है। मन अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है, यह उपाय श्री भगवान ने श्री गीता अ०६ श्लोक ३५-३६ में बताया है।

और भी अनेंकों ग्रन्थों में मन को वश में करने के साधन बताये हैं, योग-वसिष्ठ में मन को वश में करने के साधन में बताया कि– **''मन बड़ा बलवान हाथी के समान है, यह अंकुश के बिना वश में नहीं हो सकता।''**

योगवसिष्ठ में मन को हाथी के समान बताया। और हाथी जो वह अंकुश से ही वश में किया जाता है।

इसी प्रकार मन रूपी हाथी को वश में करने के लिये श्री गीता के विधानाचार्य भगवान ने अध्याय ६ के ३६-३६वे श्लोक में अभ्यास और वैराग्य दो अंकुश बताये और योगवसिष्ठ में चार अंकुश बताये!

प्रथम अंकुश है– कि स्वाध्याय करना, एकान्त में बैठकर उसका मनन करना ध्यान करना!

दूसरा अंकुश– दैवी सम्पदावानों का संग करना, उनके संग से मन वश में होता है।

तीसरा अंकुश– वासना के संग का त्याग करना, इसी को तृष्णा का त्याग एवं आसक्ति का त्याग भी कहते हैं, मनुष्य जितना बूढ़ा होता जाता है, तृष्णा उतनी जवान होती जाती है, यह तो प्रभु-पिता जी की कृपा से ही शान्त होती है सम्पूर्णआसक्ति का नाश तो ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा से एवं ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति होने पर ही होती है, श्री गीता अध्याय २ श्लोक ५९।

आसक्ति का सूक्ष्म निवास अहंकार में रहता है। अहंकार का हेतु अज्ञान है, अज्ञान के नाश से सबका नाश हो जाता है और अज्ञान के नाश का उपाय है, ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा। श्री गीता अ० १० श्लोक १०-११।

ॐ आनन्दमय भगवान कहते हैं कि जो भक्ति करता है, उसे मैं वह तत्त्व-ज्ञान योग देता हूँ, जिससे वह मेरे को प्राप्त हो जाता हूँ!

अब चौथा अंकुश है– वैराग्य का
वैराग से मन वश में होता है।
विषयों में आसक्ति ही ख़तरे की चीज़
है! श्री गीता अ० २श्लोक ६२-६३!

विषयों में हमारी सुख-बुद्धि है, इसलिये उसमें आसक्ति है। जबकी वास्तव में उनमें सुख है ही नहीं, भूल से प्रतीत होता है, इसीलिये भगवान ने श्री गीता अ० १८ श्लोक ३८ में कहा गया है विषयों का सुख भोग काल में अमृत की तरह भासने वाला होने पर भी परिणाम में विष तुल्य है, अत: सुख को लात मार कर ॐ आनन्दमय परमात्मा के ध्यान में मस्त हो जायें! ध्यान-सुख के सामने त्रिलोकी का सुख भी तुच्छ है, ऐसे सुख को त्याग कर जो संसारिक सुख में रमण करते है, वह मूर्खों में महामूर्ख हैं। श्री गीता अ० ५ श्लोक २१ में ॐ श्री विधानाचार्य भगवान कहतें है कि भोगों में आसक्ति रहित अन्त:करण वाला पुरूष अन्त:करण में जो भगवद्-ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है, वह पुरूष सच्चिदानन्द-घन, पर-ब्रह्म–परमात्मा रूप योग में स्थिर हुआ अक्षय आनन्द का अनुभव करता है, अर्थात वह अक्षय सुख को प्राप्त हो जाता है। अक्षय सुख का तात्पर्य-जिसका कभी क्षय न होता हो अर्थात् नाश नहीं होता!

समस्त युक्तियों का यह राजा है कि जिस समय संसार से आपको वैराग्य होगा, उस समय मन स्वाभाविक ही ॐ आनन्दमय परमात्मा में लग जायगा! अनन्त, असीम आनन्द में डूब जायगा !

एक आदमी जाति से ब्राह्मण है, सन्यासी है, और विद्वान भी है, किन्तु कँचन-कामिनी में आसक्ति है, तो उसका कोई मूल्य नहीं। **जब तक हृदय में काम-क्रोध-लोभ है तब तक किसी भी साधन की सिद्धी नहीं हो सकती फिर मन वश में हो जाये यह कैसे सम्भव हो सकता है।**

इसलिये जिस प्रकार भी हो वैराग्य करना चाहिये, यही भगवत-आदेश है श्री गीता अ० २-श्लोक ५२,५३।-

संसार में आसक्ति है इसलिये–दौड़-दौड़ कर मन उसमें जाता है, इसलिये संसार से आसक्ति हटा दो, फिर स्वत: ही मन ॐ आनन्दमय भगवान के चरण कमलों में लग जायगा, जब-जब वैराग्य के भाव आते हैं, तब तब मन भगवान की तरफ खिंचता है। और चित्त में वैराग्य होने पर अभ्यास स्वाभाविक तेज होगा, अभ्यास तेज होने पर, वैराग्य में दृढ़ता आती जायेगी और मन सुगमता से भगवान में लगता जायेगा! ॐ शान्तिमय!

☒ जो महात्मा कहलाने वाला स्वयं कामी, क्रोधी, लोभी है; उसका संग-सेवा करने से आपको समता-सन्तोष की प्राप्ति नहीं हो सकती। ऐसे मनुष्य का दिया हुआ भगवन्नाम मंत्र का जप तथा ग्रन्थों का ज्ञान बनावटी नोटों के सदृश कार्य करेगा।

☒ श्री गुरु भगवान् के संगियों में जिस भगवत् प्रेमी का ध्यान अधिक लगता है, उसके भाव-आचरणों को ही आदर्श मानकर अनुकरण करें। गुरु के अनुकूल एक सप्ताह आचरण व श्री मंत्र का जप करने से यदि ध्यान नहीं लगा अर्थात् मन की एकाग्रता रूप आनन्द, शान्ति का अनुभव नहीं हुआ, तो समझ लें कि नकली पण्डित महात्मा की ही भक्ति की है।

–श्री विश्वशान्ति भाग-9

त्याग से परम-शान्ति और ब्रह्मानन्द की प्राप्ति

श्री गीता अध्याय २ श्लोक, ७१-७२.।

जीवन में त्याग-वैराग्य दया, प्रेम, विनम्रता, सहनशीलता, सेवा-भाव और निरहंकारिता होनी चाहिये! शरीर निर्माण-कर्त्ता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने शरीर को निरोग और स्वस्थ्य–रखने के लिये कई प्रकार के यंत्रो का सम्बन्ध बना रखा है, जहाँ कहीं त्याग में अवरोध आता है, वहीं विक्षेप-कष्ट पैदा हो जाता है।

ॐ आनन्दमय परमात्मा द्वारा दी गई सम्पत्ति भूमि, भवन, धन-दौलत, प्रेमी-पदार्थ, नाम, रूप, तन, मन, अंह सबके त्याग में ही शान्ति है, श्री गीता अ० २ श्लोक ७१!

त्याग में ही हमारा भविष्य निख़रता है, दिव्यता की प्राप्ति होती है, जीवन उज्ज्वल, निर्भयता, शान्ति-सन्तोष से प्रफुल्लित हो जाता है। त्याग में कितना लाभ है, यह मन-बुद्धि की सोंच के बाहर की बात है, जिसकी तुलना संसार की सम्पत्ति से नहीं की जा सकती। ऐसी परम सम्पत्ति के लिये ही प्राप्त करने के लिये मानव, तन प्राप्त हुआ है।

यह जीवन संसार के कारोबार कर उस पर अहंता-ममता जमाने के लिये नहीं मिला है, घर, परिवार एवं समाज का सम्राज्य बढ़ाने के लिये नहीं मिला है, यह तन, हाथी या शेर की तरह बलशाली बनाने के लिये नहीं मिला है, यह मानव-जीवन प्राप्त हुआ है, ब्रह्मवेत्ता- तत्त्वदर्शी, श्रेष्ठ महापुरूषों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को धारण कर, उनके महान-भावों को, उजागर करने के लिये, न की अपने दम्भ-दर्प-कपट के मलिन, भाव-आचरणों द्वारा उनको कलङ्कित करने के लिये।

परन्तु भगवत विधान के त्यागी, धन, जन, विद्या, मान, बड़ाई के रागी, बहुमूल्य सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट कर सदा के लिये पश्चाताप के भागी बन जाते हैं, थोड़े समय तक किये–गये सत्संग की छाप को सदा स्थिर रखने की आवश्यकता है अन्यथा छाया की तरह डोलती रहेगी, जैसे वायु-युक्त स्थान पर दीपक की लौ डोलती है

श्री महापुरूषों के गुण-ज्ञान का, ध्यान का, शुद्ध आचरणों का, महान प्रभावों का, यश, मान, कीर्ति का, पवित्र उज्ज्वलता का प्रचार-प्रसार कर विश्व में जाग्रति तभी हम रख सकेंगें। जब हमारे भावों में, हमारे आचारणों में सात्विकता के गुण-ज्ञान की धारा प्रभावित होती रहेगी। हमारे हृदय में हर समय परमार्थमय कर्मों के मनन-विचारों की तार-तमता बनी रहेगी अर्थात् सेवा-भाव की भावना की करेन्ट की धारा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ में प्रकाशित मानसिक चिकित्सा के १२५ सूत्रों द्वारा प्रवाहित होती रहेगी। एवं हमारे मन, बुद्धि में श्री गुण विद्या के २१ मंत्रो में दृढ़ता पूर्वक, श्रदा-प्रेम, विश्वास स्थिर रहेगा। इस नियम-विधान से अपनी भी स्थिति सम-शान्त के साथ उत्साह-वर्द्धक बनी रहेगी! अत: अपने अन्दर-बाहर एक सी स्थिति बनाये रखने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

हमें लाइटर नही बनना है, लाइटर ऊपर से बहुत सुन्दर चमक-दार मन को आकर्षित करने वाला होता है। जरूरत के समय जब बाजार से लेने जाते हैं,तब अच्छा से अच्छा हो या साधारण हो अधिक मूल्य का हो या कम मूल्य का, उसमें से आग ही निकलेगी, कभी शीतलता नही निकलेगी! इसी प्रकार बाहरी आचरण कितना भी अच्छा हो, वेश-भूषा-गुण-ज्ञान-की रौनक हो, चमक हो, चाहे वह भौतिक क्षेत्र में पद-कुर्सी, माननीयता को लेकर हो, या आध्यात्मिक वातावरण में कण्ठी, माला-तिलक अथवा रंगीन वस्त्रों को लेकर हो, परन्तु अपने अन्दर के भावों में, मानसिक विकारों में शुद्धता नही है,तो बाहरी वेश-भूषा काम की नहीं, अन्दर से राग-द्वेष-इर्ष्या-कलह चिन्ता-नाराज़गी भय-शौक, विषाद- रूदन की ही चिनगारियाँ निकलेगी! निरन्तर देह-दिमाग कामनाओं से पीड़ित रहेगा! अत: परम शान्ति और परम-पद की प्राप्तिके लिये जीवन में त्याग-वैराग्य की परम-आवश्यकता है।

-श्री गीता अ० २ श्लोक ५५, ७१, ७२।

ब्रह्मवेत्ता-तत्त्वज्ञानी समाधिमग्न श्री महापुरूषों के उपदेश, आदेश

आज्ञापालन के समान न कोई,
तीर्थ, ब्रत है, न यज्ञ, दान, तप है।
न, कोई भगवत पद-शक्ति है,
न भक्ति है, न ज्ञान है, और न सुख-शान्ति
बस आनन्द ही आनन्द है। न मोक्ष है।

इन सब बातों को सुनकर भी जानकर भी, हमारी दुर्गति हो, तो बड़े लज्जा की बात है, मालूम हो गया यह कुँआ है, फिर भी उसमें गिरतें हैं, तो फिर हमारे समान मूर्ख कौन होगा।

महापुरूषों ने चेतावनी दी, ज्ञान दिया, साधन बतलाया, उसे यदि हम काम में नहीं लाते, तो महपुरूषों की तो कोई हानि नहीं। न मानने वालों का स्वभाविक पतन हो जाता है। हमें पतन की ओर जाना नहीं चाहिये, पतन की ओर हमें प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं, आवश्यकता है, पतन को मिटाने की, दु:ख बुलाने की आवश्यकता नहीं दु:ख को बलात् भोगना ही पड़ता है, इसलिये हमें अपना उद्धार करने के लिये प्रयत्न करना चाहिये। श्री गीता अ०६ श्लोक ५.६।

श्रवण-पठन करने के आधार से ज्ञान होता है कि अंसख्य जन्म होने वाले हैं उन सबको हम मिटा सकते हैं कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है, जो दु:ख का सर्वथा नाश कर सके। मनुष्य ही कर सकता है, इसलिये हम लोगों को वह प्रयत्न करना चाहिये जिससे हमें सदा शान्ति मिलती रहे हमारी सदा वह स्थिति होनी चाहिये जो स्थिति सर्व शक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने श्रीगीता अ० ६ श्लोक २२ में कथन की है-(श्लोक उच्चारण)

श्लोक का हिन्दी अर्थ–ॐ आनन्दमय भगवान कहते हैं-हे प्रेमियों-ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति रूप लाभ को प्राप्त होकर फिर उससे अधिक दूसरा कुछ भी लाभ नही मानता और परमात्मा की प्राप्ति रूप जिस अवस्था में स्थित योगी बड़े भारी दुख से भी चलायमान नहीं होता।

ऐसी स्थिति इस मनुष्य शरीर में प्राप्त हो सकती है, उस आनन्दमय केन्द्र को प्राप्त कर सकते हैं, उसको प्राप्त कर लेने की कसौटी है कि फिर भारी से भारी दु:खों की प्राप्ति होने पर वह विचलित नही होता, मानसिक सन्ताप बढ़ाने वाले, मानसिक उत्तेजना के ब्लड प्रेशर को हाई करने वाले एवं आत्म-बल नाशक, सभी दर्शन-श्रवण से होने वाले दु:खों का अन्त हो जाता है। इसके लिये हम लोगों को तत्परता पूर्वक साधन करना चाहिये! श्री गीता अ० ६श्लोक२३। ॐ शान्तिमय

*** सब इन्द्रियों के द्वारों को रोककर तथा मन को हृद्देश में स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्मा-सम्बन्धी योगधारणा में स्थित होकर जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षररूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप निर्गुण ब्रह्म आनन्दमय भगवान का चिन्तन करता हुआ शरीर का त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।**

–श्री गीता अध्याय-८, श्लोक-१२-१३

हार्दिक कृतज्ञता के भावों को अनुराग पूर्वक आदर देने के श्रद्धावान उपस्थित

ॐ आनन्दमय अनुरागियों!

गत सप्ताह में श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ के श्री मानसिक चिकित्सा का ज्ञान से दो सूत्र अचारण किये गये थे।

उसमें आठवाँ सूत्र था कि हे श्री शान्तिमय प्रभो। मैं सहनशीलता भावमय हूँ, क्रोध-भावमय नहीं। और छबीसवां सूत्र था कि मैं सत्य भावमय हूँ, कपट भावमय नहीं!

मैं सत्य भावमय हूँ, कपट भावमय नहीं! इस पर मनन विचार कर ज्ञान उच्चारण किया गया था आज के मंगलकारी शुभ दिवस पर– मैं सहनशीलता भावमय हूँ, क्रोध भावमय नहीं। इसपर श्री गीता-शास्त्र, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ और अपने अनुभव को लेकर ज्ञान-पूजा प्रारम्भ की जा रही है! ॐ आनन्दमय-ॐ शान्तिमय सुखी जीवन का एक ही मूलमंत्र है–सहनशीलता

श्री गीता अ० २ श्लोक १५।

महादु:खी जीवन का एक ही मूलमंत्र है–क्रोध

श्री गीता अ० २श्लोक ६३ अ० १८ श्लोक ५८।

श्री ध्यानार्चाय योगेश्वर भगवान का परम प्रिय शास्त्र श्री गीता जी की मान्यता के अनुसार एवं अपने अनुभव के अनुसार *सुखी और नर बनने का एक ही मूलमंत्र है–''सहनशीलता''* यह एक ही गुणों को आमंत्रित-करता है, जिससे परम-शक्ति को प्राप्त कर सदा के लिये दु:खालय स्वरूप जन्म-मृत्यु के बन्धनों से मुक्त होकर परम धाम को प्राप्त हो जाता है।

पाठ पक्का करते, समय अमृत का भास होता ही है, फिर बूँद-प्राप्त होने लगता है, और जब पाठ-पक्का हो जाता है तब तो अमृत पान ही नहीं होता बल्कि स्नान हो जाता है श्री गीता अ० १४ श्लोक २७।।

इस दिव्य गुण को प्राप्त करने वालों में प्राचीन शास्त्रों में इन्हे-गिने ही लोगों के शुभ नाम आते हैं, शेष साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या बड़े-बड़े तपस्वी साधू, महात्मा तो हर समय क्रोध के संयम-वेग से श्राप ही दिया करते थे वर्तमान के लिये क्या कहा जाये। सहनशीलता का पूर्ण अभाव एवं काम-क्रोध ने कितनों को कचहरी और हाइकोर्ट में भ्रमण करा दिया कितनों ने अनशन पर बैठ सत्याग्रह की धूम मचाई है, एवं कितनों को बैण्ड-बौजों वालों ने मधुर माया की मोहनी संगीतों में बहा दिया। शेष कपट भावों से इन्द्रिय-विषय जन्म भोगों में रमण कर रहें हैं!

अपने प्रिय भक्तों की निष्ठा, अचल भक्ति भाव से तत्परता पूर्ण साधना के विषय में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी कहते हैं कि– ''जो करे हमारी आस, उसका करता हूँ मैं सर्वनाश। इस पर भी जो मेरी आस नहीं छोड़ता। उसका फिर मैं बन जाता हूँ-दासानुदास''

यह है सहनशीलता गुण को धारण करने का प्रभाव ऐसे भक्त सर्वशक्तिमान प्रभु पिता जी की यश कीर्ति को, उनके गुण प्रभाव को पद-प्रतिष्ठा को उज्ज्वल करते हैं, परन्तु ऐसे भक्त मानव-मंडल की अबादी में कोई-कोई होते हैं इसलिये गीता कहती है अ० ७ श्लोक ३ में मनुष्यांणा सहस्त्रेषु। और श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ १ के ब्रह्मज्ञान सूत्र ४२ में प्रकाशित हैं कि श्री समाधिमग्न महात्मा में पूर्ण श्रद्धा विश्वास!

महात्मा-परमात्मा के अतिरिक्त विश्व में जो भी श्रद्धा-प्रचलित है, वह सम्पूर्ण श्रद्धा–अन्धश्रद्धा के अन्तर्गत है!

जिस भक्त की सद्गुण धारण करनें में श्रद्धा नहीं है, उसकी श्री महात्मा और परमात्मा में कथन मात्र की श्रद्धा है, एक गुणों से जो अर्वणनीय सुख-शान्ति-आनन्द प्राप्त होता है, वह संसार की समस्त सम्पत्ति-मिलकर भी नहीं दे सकती। फिर भी समस्त बालक-वृद्ध, युवा नर-नारियों की दौड़ मरूभूमि में पानी की तलाश में भागते हुये मृगों की तरह है!

आनन्दमय प्रभु की लगन में, ये पाँचों न सुहात।
विषय-भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति, बहुबात।।

यह है परम-धाम, मंजिल पर पहुँचने का मार्ग और इसके विपरीत है, ठोकर खाने का मार्ग अर्थात आसुरी योनिमा पन्ना मूढ़ा जन्मनि-जन्मनि।

श्री गीता अ० १६ श्लोक १९ और २०।।

अकारण, अनवरत दया, प्रेम की कृपा करने वाले ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने मुझे मंजिल पर पहुँचने के लिये दो शक्ति रूप सहारे दिये।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय- इनके सहारे से मन-बुद्धि में श्रद्धा-प्रेम-विश्वास हो गया है, कि मंजिल तक मैं पहुँच जाऊँगा।

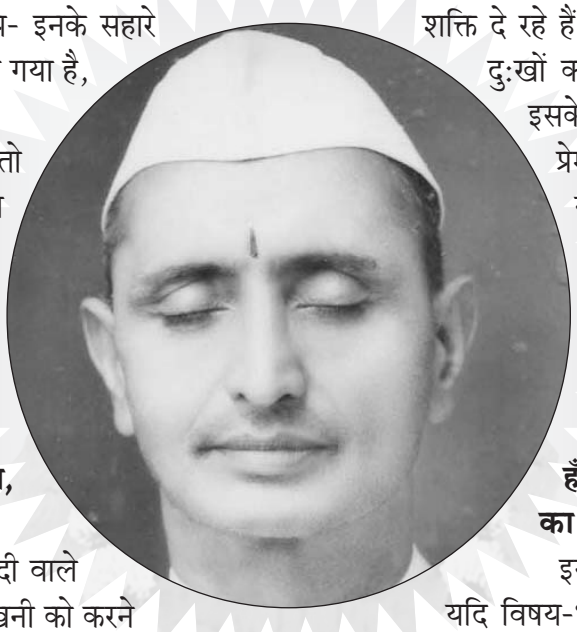

कल्याण-कामी मानव के लिये तो ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने गीता में जगह-जगह त्याग-वैराग्य का परम हितकारी ज्ञान दिया है।

परन्तु सन्तों ने भी कड़ी चेतावनी दी है जैसे–धन यौवन सब जायेगा, जा विधि उड़त-कपूर।

कहे दास आनन्दमय भज, क्यों चाटे जग धूर।।

परन्तु आज इस घनघोर आबादी वाले मानव-मंडल में इस कथनी और लेखनी को करने वालों का दर्शन असम्भव है, **आज तो सभी ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान के विपरीत धन, मान, यौवन के नशे में चूर लोगों ने सभी विपरीत विधानों को ही परम-सुख का साधन माना हुआ है अर्थात् यही जीने-जिलाने का एक मात्र साधन माना है। और जब जीवन में इन पाँचों को भोगने का एक दिन आता है, जिसको भगवान की बहुत बड़ी कृपा समझी जाती है, और इस दिन को सबसे महत्वपूर्ण एवं परम भाग्यशाली समझा जाता है। जो कुछ घण्टे लाइटों की मनोहर सुन्दरता में घर-परिवार, समाज को प्रीति में, बहुबात में एवं कानों को परम प्रिय लगने वाले बैन्ड-बाजों की मधुर संगीतों में लुभाकर, माया को सौंप कर बिदा हो जाता है!** कुछ घन्टों के लिये बनने वाले परम भाग्य शाली जीवन के लिये श्री गीता शास्त्र कहता है न रमते बुधा ५/२२,। मोघं पार्थ स जीवति। ३/१६ एवं और विस्तार पूर्वक इस विषय को अ०१३ श्लोक ८-९ में कथन किया है।

ब्रह्मवेत्ता तत्त्वदर्शी महापुरूषों का तत्त्वरहस्यमय ज्ञान को समझने-समझाने वालों का अभाव है।

यहाँ तो ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की महान कृपा है, जो रहस्यमय सत्य ज्ञान को पठन-श्रवण-कथन करने की शक्ति दे रहे हैं ! ऐसा परम-पद दायक, समस्त दु:खों का नाश करने वाला जो ज्ञान है, इसके विषय भोगी, जगत के नाशवान प्रेमी-पदार्थों में आसक्ति रखने वाले-राग द्वेष, कलह-क्लेश करने वाले पात्र नहीं हैं। **इस विशुद्ध ज्ञान को प्राप्त करने का अधिकार उन्हीं को है जिनको आनन्दमय प्रभु की लगन में यह पाँचों न सुहात-क्या विषय भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति और बहुबात! का त्याग कर दिया।**

इसीलिये यह सत्संग हाल खाली है, यदि विषय-भोगों की सामग्रीयों, और कृपालु महाराजजी, की तरह, थाली, लोटा गिलास एवं खाद्य पदार्थों का यहाँ भी भंडारा खोल दिया जाये, तो सत्संग हाल की तो बात ही क्या, त्रिवणी पुरम आश्रम के सामने तीन बहुत चौड़ी सड़कें है इनपर इतनी जन-संख्या इकठ्ठी हो जायगी कि रास्ता जाम हो जायगा।

परन्तु इससे भगवत् लाभ क्या होगा? लाखों, करोंडों जनसंख्या इकठ्ठा कर ली परन्तु सभी की लगन है विषय भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति और बहुबात की, तो एक भी परम-पद की प्राप्ति का पात्र नहीं बन सकता। तो क्या हुआ, लोगों को गुमराह किया, अमृतपान कराने के बजाय, विष ही पान कराया। इसलिये कहा है-

नर तन पाइ विषय मन देही।
पलटि सुधा, सठ विष लेही।।

महापुरूषों की वाणी हैं कि लाख आदमियों की भौतिक सेवा से, एक आदमी की परम सेवा बढ़कर है, आज के ज्ञान की पूर्ण आहूति करते हुये, भगवत आदेश को और प्रतिज्ञा के मंत्र को उच्चारण किया जा रहा है!

श्री गीता शास्त्र का और श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का आदेश कोई अलग नही हैं। तत्त्वज्ञानियों का आदेश है, सात्विक ज्ञान है। १८-२० आदेश का आठवाँ मंत्र, श्री गीता का अ० ६/३० अध्याय १३/३०/ प्रत्रिज्ञ मंत्र १५/ **ब्रह्म-सृष्टि में निष्कामी भक्त की शक्ति के समान कोई शक्ति नहीं है अनादिकाल से इस भूमण्डल में बड़ी बड़ी शक्तिशाली शक्तियाँ हुई, परन्तु भक्त की शक्ति से नष्ट-भ्रष्ट होती गई। सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी स्वयं अपनी विषम से विषम प्रतिकूल शक्तियों का प्रयोग कर रहें, जो प्राणों का हरण करने वाली है, परन्तु भक्त की कोई कम्पलेन नहीं, वह अपनी धैर्य-शान्त सहनशीलता की शक्ति से 'ब्रह्मभूत प्रसन्न आत्मा-न शोचति न कक्षाति' में प्रभु पिता जी की कृपा का दर्शन कर रहा है।** अन्त में अपनी सभी शक्ति की निष्फलता देखकर श्री भगवान को रण-क्षेत्र में स्वंय आना पड़ा और अपनी करनी का प्रायश्चित करने के लिये भक्त से क्षमा याचना की । इस प्रकार निष्कामी भक्त की शक्ति भगवान की शक्ति से बड़ी हुई।

परन्तु **निष्कामी सच्चा भक्त तो अपने परम-हितैषी सदा कृपा रूपी छाया करने वाले प्रभु पिता जी की ही अपरम्पार दिव्य शक्ति को ही आदर देता है, ॐ आनन्दमय निष्कामी प्रिय भक्तों के योगक्षेम के वहन कर्त्ता, दण्ड, पद के दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी अपना न्याय दण्ड-विधान लागू करने के लिये-कर्मो का भुगतान करने के लिये प्रेमी-पदार्थ, समय, परिस्थिति, स्थान, वातावरण, दिन, रात आदि की व्यवस्था बहुत समय से करते-करवाते आये हैं** जैसे भगवान को बनवास दिलाने और इस निमित्त से बहुत से कार्य करने के लिये वर्षो से तैयारी करनी शुरू कर रखी थी, कार्य होने के लिये कारण तो बनता ही है, तभी कार्य होता है। अब जैसे खाने के लिये रोटी बनाई जाती है तो आटा चाहिये, तो आटा के लिये कितने समय से उसका प्रबन्ध करना पड़ता है, अब उसके लिये पहले बीज बोया जाता है, मौसम, समय, स्थान, जल, खाद की व्यवस्था की गई साथ ही साथ ज्ञान की भी आवश्यकता रहती है बीज बोया गया। समय पर अंकुर फूटा पौध बन गया। समय हुआ सिंचाई का प्रबन्ध किया गया। अब फल देने की स्थिति में आ गया, विधि-विधान अनुसार बालियाँ आई गेहूँ के दाने पड़ गये अभी कच्चे हैं, समय बीता दाने पक गये, सभी अवस्था में पशु-पक्षीयों से रखवाली की व्यवस्था की गई, दाने पक जाने पर प्रबन्ध कर्त्ताओं ने काँट-छाँट पर बोरी में भर-भर कर बाजार में भेज दिया। बाज़ार से ख़रीद कर घर में लाये, आटा बनाने के लिये चक्की पर ले गये, आटा तैयार हो गया, घर में ले आये। अब क्या किया पानी डालकर आवश्यकतानुसार गूँथा फिर चकले पर बेलन की सहायता से बेला, अभी कमी है, फिर आग और तबे के सहयोग से सेंका तब वह खाने योग्य तैयार हुई, इस प्रकार रोटी तैयार करने में कितने प्रकार के कर्म करने पड़े, इसी प्रकार मानव-मात्र कार्य को सम्पन्न करने के लिये उसके कारण को अर्थात् उसके अनुरूप कर्म करने पड़ते हैं।

इसी प्रकार सम्पूर्ण भूत प्राणियों को भगवान उनके कर्मो के अनुसार भ्रमाते हैं, इस कार्य को करने के लिये कारण तैयार करते हैं अर्थात देश-काल, समय-वातावरण, स्थान, जन-समाज दिमागी विचार इत्यादि इनेकों माध्यम से अपना कार्य सम्पन्न करते हैं

परन्तु इस तत्त्व से रहित अज्ञानी मानव सब कारणों में मानव को लेकर राग-द्वेष-कलह क्लेश मार-पीट-झगड़ा आदि दुष्कर्मो की आग लगा देते हैं-इसमें सम-शान्त-रहने के बजाय संयम वेग रूपी पेट्रोल और डालकर मानसिक उत्तेजना को विकराल कर जहाँ-तहाँ द्वेष की चिनगारी छोड़कर अन्य की भी मानसिकता की शाक्ति को नष्ट कर डालते हैं वर्तमान में तो इस महामारी को फैलाने में वायु से भी तीव्र साधन हो गये हैं मोबइल तो मिन्टो में हज़ारों मिल दूर रहने वालों में राग-द्वेष, भय-सन्ताप, ईर्षा-कलह की चिनगारी से उनके दिमाग में भूचाल पैदा कर देता है, जबकि वायु को भी सैकड़ों मिल पार करने में कुछ समय लग जाता है, परन्तु ऐसा करना दयामय जी के विधान में घोर अपराधी बनना है, प्रभु पिता जी ने तो अपने विधान अनुसार करना ही करना है, जैसे भूकम्प, भूचाल, ओला, वर्षा, आँधी, तूफान, जन्म-मरण, फाँसी ,जुर्माना इत्यादि।

ध्यानयोग के पारदर्शी तत्त्ववेत्ता महापुरूषों की दिव्य-वाणी।

मूर्ख अध्यापक द्वारा शिक्षा-प्राप्त होना सम्भव नहीं, वैसे ही दुर्गुण सम्पन्न–व्याख्यान दाताओं द्वारा सद्गुण-सम्पन्न होना सम्भव नहीं।

जैसे बनावटी पदाधीशों द्वारा लाभ होना सम्भव नहीं,वैसे ही ध्यान-समाधि रहित वाचाल-पण्डित महात्मओं से हानि के अतिरिक्त (श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु से) लाभ होना सम्भव नहीं।

जिस समय साधक राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों से प्रभावित न होने की योग्यता को प्राप्त कर लेगा। उसी समय मोक्ष प्राप्ति के योग्य हो जायगा। समदु:खसुखंधीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते।

''श्री गीता अ० २ श्लोक १५''

कपटी मनुष्यों द्वारा प्राप्त औषधियों से कितनी हानि-होती है, ऐसे ही गुण रहित सद्गुण-सदाचार के वक्ताओं से महती हानि हो रही है।

जहाँ जल की गहराई कम होती है, कंकड़, पत्थर अधिक होता है, वहाँ जल छलकता हुआ तेज बहता है, परन्तु जहाँ जल की गहराई होती है वहीं जल शान्त, गम्भीरता से बहता है, इसी प्रकार जहाँ ज्ञान की, श्रद्धा की कमी होती है, धन, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा, राग, द्वेष अहंता, ममता, कामना, आसक्ति रूपी कंकड़-पत्थर होते हैं, वहाँ ज्ञान, श्रद्धा, प्रेम छलकता हुआ मनमोहन लगता है, परन्तु अन्दर की तली खाली रहती है। वह समय पर सूख जायेगी।

ऊपरी रौनक की पालिस सदा नहीं रहती पालिस की चमक-दमक समाप्त होते ही, अन्दर के जैसे भाव होते हैं, मनन-विचार होते हैं, वह सब प्रकट हो जाते हैं फिर वास्तविक स्थिति की जानकारी का पता चल जाता है, इसलिये भगवत विधान है–गहना-कर्मणो गति-कर्मो की गति गहन हैं ४/१६,

*** मैं बड़ा धनी और बड़े कुटुम्बवाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और आमोद-प्रमोद करूँगा। इस प्रकार अज्ञान से मोहित रहने वाला तथा अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवाले मोहरूप जाल से समावृत और विषयभोगों में अत्यन्त आसक्त आसुर लोग महान् अपिवत्र नरक में गिरते हैं।**

–श्री गीता अध्याय-१६, श्लोक-१५-१६।

दीन-बन्धु ॐ आनन्दमय भगवान की दयालुता का प्रभाव

सदा दया-प्रेम से द्रवित स्वभाव वाले आनन्दमय प्रभु पिता जी, जीवों को दारूण-दु:खों से सदा के लिये मुक्त करने के लिये परम भाग्यशाली मानव तन अनेकों प्रेमी-पदार्थों के संयोग के साथ जीवों को भगवत-आनन्द-शान्ति की मग्नता, मग्न महापुरूषों की संग-सेवा प्राप्त करने के लिये श्री तत्त्वदर्शी, ध्यान समाधि प्राप्त करने के पुनीत शुभ अवसर भी प्रदान करतें हैं परन्तु अहंता, ममता के बन्धनों का भोगी-प्राणी दी गई शक्तियों का पूरा उपभोग नहीं करता इसी से देखा जाता है कि दीर्घकाल तक सत्संग करने के पश्चात् भी सत्संग का रंग चढ़ता नहीं और श्रेष्ठतापन का, अहं वेग बढ़ जाता है, इसी से सत्संग का जैसा लाभ होना चाहिये वह नहीं होता। इस तत्त्व के ज्ञानी-महापुरूषों ने निर्णय किया, कि क्यों नहीं लाभ होता–

मन दिया कहीं और ही, तन सज्जनों के संग।
कहे दास कोरी गजी, कैसे लागे रंग।।

बस सत्संग का रंग न चढ़ने का कारण यही है! **सत्संग का रंग चढ़ाने के लिये ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी द्वारा दिये गये तन-मन-धन तीनों को अच्छी प्रकार सत्संग के ज्ञान रूपी रंग में डुबोना पड़ेगा, तब रंग चढ़ सकता है,** जैसे कोरे कपड़े को डूबो दिया तो रंग पूरे पर नहीं चढ़ेगा फिर क्या किया, उसको आधी तह को खोल कर डुबोया, फिर भी अच्छी तरह रंग नहीं चढ़ेगा, फिर क्या अब उसको पूरा खोल कर सारे कपड़ो को अच्छी प्रकार डुबोया अब क्या हुआ पूरे कपड़े पर एक साथ रंग चढ़ गया। इसी प्रकार तन को, मन को और धन को तीनों को सत्संग रूपी ज्ञान-रंग में डुबो दो तो तीनों पर एक साथ रंग चढ़ जायेगा, सबको अच्छा लगेगा। फिर ज्ञान रूपी रंग से रंगा मन, तन और धन का ठीक, सदुपयोग भगवत कृपा से होगा! हाँ-इनमें से यदि किसी को डुबोया, किसी को नही, फिर तो ख़तरा हो जायगा फिर तो धब्बा आ जायेगा एक सार चढ़े हुये रंग का कपड़ा अच्छा लगता है परन्तु धब्बा वाला कपड़ा किसी को अच्छा नहीं लगता। पूरा लाभ सत्संग का तभी होगा, जब तीनों को सत्संग रूपी ज्ञान धारा में डूबा रहें! अन्यथा तत्त्वज्ञानियों ने क्या कहा है।

मन के मारे बन गए, बन तज बस्ती माहीं।
कहे दास क्या कीजिये, यह मन ठहरे नाहीं।।
फिर क्या करना होगा इसके लिये बताय।
आनन्दमय प्रभु की प्राति में, जाको तन-मन चूर।
ताहीं न ममता और सो, निकट रहो वा दूर।।

बस दु:ख पैदा करने वाली ममता की समाप्ति अर्थात् ममता की हथकड़ी-बेड़ियों से मुक्ति। धन का सदुपयोग करने के लिये **श्री गुरू देव भगवान का सदा आदेश-संकेत रहता था कि समय का सदुपयोग ज्ञान के ग्रन्थ प्रकाशन में और ज्ञान के प्रचार-प्रसार में करो। यह सेवा का कार्य ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का सबसे प्यारा कार्य है,** जैसा कि श्री गीता अ० १८ श्लोक ६८-६९ में स्पष्ट रूप से अपना निर्णय दे दिया है लाख आदमी की भौतिक सेवा से एक आदमी की परम-सेवा बढ़कर है।

जिस प्रेमी भक्त की सद्गुण धारण में श्रद्धा नही है तो उसकी श्री महत्मा और परमात्मा में कथन मात्र की श्रद्धा है। श्री विश्वशान्ति भाग १ पृष्ठ ९२। अन्त

और यह तो निश्चय है कि यदि भगवत आज्ञा-अनुसार तन-धन का सदुपयोग नहीं तो उसका दुरूपयोग है और फल अवश्य भोगना पड़ेगा इसीलिये श्री गुण विद्या का प्रथम पाठ के तीसरे सूत्र की टिप्पणी में सावधान किया और आदेश दिया कि–

हे प्रेमियो! ममता के भाव चिन्ता-भय के दाता है, श्री ध्यान-योग दायक महापुरूषों के आदेशानुसार तन-धन से सेवा करते रहने से ममता रूपी अपराध के प्रायश्चित होने का विधान है अर्थात् निश्चिन्त रहने का साधन है।

अनावश्यक तन, मन, धन, का उपभोग से तो दण्ड मिलता ही है यदि उसका दुष्कार्यों में उपयोग किया तो फिर उसके लिये तो क्या मिलेगा कुछ नहीं कहा जा सकता।

दिमागी रोगों की शान्ति हेतु हितकारी इन्जेक्शन लगाने का ज्ञान

जीवन में आने वाली विषम् परिस्थितियों में अर्थात प्रतिकूल परिस्थितियों में एवं हर्ष दायक अनुकूल स्थितियों मे दिमागी मनन-विचारों को सम-शान्त स्थिर बनाये रखने के लिए श्री गीता अध्याय २ श्लोक १४ का इन्जेक्शन लगा लेना आवश्यक है इस इन्जेक्शन का क्या प्रभाव होगा वह १५वे श्लोक में बताया।

दिमागी रोग दमनकारी इस इन्जेक्शन को नहीं लगाया तो हर समय राग-द्वेष चिन्ता-नाराज़गी, भय, शोक, व्याकुलता बनी रहेगी, चित्त विक्षिप्त रहेगा अमृत की जगह विष और पुनरावृत्ति धारा के योग्य जीवन बन जायेगा।

श्री इष्ट ग्रन्थ विश्वशान्ति भाग-१ मे इस पाठ को पक्का करने के लिए सतर्कता पूर्वक रहने के लिए चेतावनी दी कि सन्तान उत्पन होने पर रुदन करना और देहान्त होने पर भगवत कृपा समझकर प्रसन्न होना।

इस प्रकार देखने वाली प्रतिकूलतामय परिस्थिति मे मन को अधीर उत्तेजित न कर सम-शान्त प्रसन्न रहने की बात बतायी फिर साधारण परिस्थिति की तो बात ही क्या।

भगवन् ! मानसिक पुष्पाञ्जली अर्पण करते हुए प्रचार पूजा विषयक वाणी उच्चारण की जा रही हैं। एकाग्रता पूर्वक श्रवण करना और हितकारी वाणी को आदर देना श्री पूज्यजनों का स्वभाविक गुण है। अस्तु हे प्रिय आत्मन् ! ॐ आनन्दमय अनुरागी ध्यानामृत सेवन करने के भागी भक्तजन सदैव ही यथा-शक्ति प्रचार पूजा में उत्साही रहे हैं। घनश्याम नगर मे निवास के समय सन १९५४-५५ मे हरिजन आश्रम के पण्डाल मे नकल-असल वर्ण-धर्म की वाणी उच्चारण की थी अब नकली वर्ण-धर्म की रक्षा करने की किसी में सामर्थ्य नहीं है। अपितु हरिजन पण्डित और नारी सबको बना रहे हैं समान पदाधिकारी।

हाँ! सन १९५६ मे गुलाब भवन मे निवास के समय से मेला भूमि पर राज कार्य कर्ताओं की कृपा से कैम्प लगाया जा रहा है परन्तु कैम्प-पण्डाल द्वारा सेवा-कार्य वही स्वस्थ वक्ता कर सकता है, जिसके १०-२० उत्साही भक्त आज्ञाकारी हो और भक्तों की अर्थ द्वारा पूजा करने मे सामर्थ्य और श्रद्धा ही। किसी भी कर्म को प्रारम्भ करते समय अपनी और अपने सहयोगी जनों की सामर्थ्य पर विचार करना अनिवार्य है।

स्मृति रहे! ब्रह्मज्ञान द्वारा पूजा करने के पात्र वे भक्त हैं, जिनके दिमाग में दूसरों का दर्शन-श्रवण कर उत्तेजित वाणी उच्चारण न करने की और नाराज़ न होने की शक्ति हो। अन्यथा–

उत्तेजित वाणी की और नाराज़गी की अग्नि द्वारा दिमाग को उबालेंगे कब तक?

– अपने दिमागी कोष मे धन, जन और मान के अध्यक्ष बनने की इच्छा रखेंगे तब तक।

और उत्तेजित वाणी की नाराज़गी की अग्नि को शान्त करेगें कब?

– ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की सर्वथा शरण होकर उनकी आज्ञानुसार सेवा-स्मरण आदि द्वारा १२५ दिव्य गुणों की माला धारण करेगें तब!

हे प्रिय आत्मन! भागत की मेला भूमियों में अधिकांश धर्म प्रचारक देवी-देवताओं को आकाश-पाताल में बतलाकर उनके नाम-रुप की पूजा आराधना कराते हैं परन्तु अब सूचना पत्र पठन करने वाले कथन कर रहे हैं कि चन्द्र लोक के सदृश ऊपर दीखने वाले अन्य लोकों में भी अमृतपान करने वाले देवी-देवताओं का निवास नहीं है केवल रंग-बिरंगे पृथ्वी पिण्डों को तैरा रहे हैं। उन लोगों को यह ज्ञान करवा दिया कि सूर्य-चन्द्र के साथ राहू-केतु के संग्राम् की वाणी-लेखनी हौआ मात्र है। श्री गीता अ० ३/३२ अ०१८/५८।

देश के सेवा कर्त्ता पण्डित जन भी आकाश मे स्थित स्वर्ग-नरक की श्रद्धा को समाप्त कर रहे है ''अस्वर्ग्यम''।

हाँ! **ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का दण्ड-दायक-विधान और पद-दायक-विधान अनादि है। उस विधान का मुख्य शास्त्र श्री मद्भगवद्गीता है और श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ श्री गीता शास्त्र का युवराज है।**

हे प्रिय आत्मन् ! जो श्री समाधिमग्न ब्रह्मपदाधीशों की ब्रह्माविधान युक्त वाणी लेखनी को आदर नहीं देते वे

बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी कठिन दण्ड के भागी होते आए हैं भारी। यह ब्रह्महत्या की दण्ड धारा अनादि है।

स्मृति रहे ! अस्त्र-शस्त्र द्वारा अथवा कठोर वाणी द्वारा ब्रह्मपदाधीश बनाने का विधान नहीं है। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का पद प्राप्त करने में मनुष्य की स्वतन्त्रता है। पारुष्यम् नामक कठोर वाणी द्वारा अथवा बल पूर्वक आदेश दाता मालिक बनकर अपने आज्ञाकारी बनाने वाले गुरुजन ब्रह्मवादी नही अपितु अहंवादी हैं।

हाँ ! अब भारत देश को अपना आज्ञाकारी बनाने के इच्छुक समाजवादी शंख ध्वनि कर रहे हैं। समाजवादी उद्योग धर्म के उपासक हैं और राक्षसी धर्म के शत्रु हैं। समाजवादी पुरुषार्थ शिक्षा के गुरु हैं और व्यक्तिगत धन संग्रह के वैरी हैं। समाजवादी कर्मशीलता के मित्र हैं और आलस्य अकर्मण्यता के दुश्मन हैं। समाजवादी नारी नरों द्वारा सेवा-कार्य करातें हैं और दिमाग को उबालने वाले परिवार के मालिक नहीं बनने देते। परन्तु समाजवादी देशों के प्रधानाचार्य निकिता खुश्चेव साहब भी अपने आज्ञाकारी बनाने मे असमर्थ हुए। अन्ततोगत्वा निकि-ता खुश्चेव साहब का भी तिरस्कार कर दिया। यह आदेश दाता-ग्रहीताओं का संग्राम अनादि है। यह विधान ''जीव ब्रह्म का संग्राम'' नामक लेख 'दु:खों की खेती का त्याग' ग्रन्थ के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित है।

हे प्रिय आत्मन् ! ब्रह्मबल दायक विधान ही उपासना करने योग्य विधान हे

मर्त्कम कृन्मत्परमो मद्भक्त: सङ्गवर्जित:।
निर्वैर: सर्वभूतेषुय: स मामेति पाण्डव ।। ११/५५ ।।
कर्मजं बुद्धियुक्त: हि फलं त्मकत्वा मनीषिण:।
जन्म बन्ध विनिर्मुक्ता: पदं गच्छन्त्यनामयम्।। २/५१ ।।

हे प्रिय आत्मन् ! देह और दिमाग की शत्रु अकर्मण्यता को, आलस्य को और प्रमाद को भगाकर ॐ आनन्दमय भगवान के अनुकूल कर्मशील बनना है अ० ३/३० सात्विक कर्मो मे लज्जा, भय नही करना है। सात्विक कर्मो में लज्जा, भय करने से ॐ आनन्दमय प्रभु जी दमनकारी समाज द्वारा अनुशासन कराते है। ॐ शान्तिमय

*** ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुए अर्थ स्वरूप आनन्द-शान्ति युक्त प्रकाशपुञ्ज की भावना से आकाशवत् ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के निराकार स्वरूप का स्मरण-ध्यान भी कर सकते हैं परन्तु आकाशवत् निराकार प्रभु का चिन्तन करना सबके लिए अति कठिन है और श्री साकार विग्रह को याद करना सबके लिए सुगम है। फल दोनों का एक है।**

–श्री गीता अध्याय १२, श्लोक १-५ तक

विद्यार्थी समाज में विद्यार्थी समाज का जीवन अधिक ख़तरे में है

ॐ श्री महापुरूष भगवान ने समस्त विद्यार्थी समाज को चेतावनी दी, उनको सजग किया क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थी समाज में विद्यार्थी समाज का जीवन अधिक खतरे में है, इसीलिये पतंगो का दृष्टान्त दिया।

परन्तु पतिंगे जाति के समस्त पतिंगों लोभ-मोह बस दीपक के पास जाने का त्याग नहीं कर सकते हज़ारों में एक भी नहीं मानता। यदि पतंगों को ऐसे बन्द स्थान पर रख दिया जाये, जहाँ से वह न जा सकें, तो देखने में आता है कि वह पतंगे वहाँ से निकलने के लिये व्याकुल हो जाते हैं, तड़पते हैं, सैकड़ो प्रकार के उपाय करते हैं प्रयत्न करते हैं, और यदि उनको निकलने का कोई सूराग मिल जाता है, तो वह निकलकर दीपक की लौ के पास पहुँच जाते हैं और दीपक की प्रकाशित ताप में अपने शरीर को शान्त कर लेते हैं, इसी प्रकार संसार की चमक-दमक से प्रभावित छात्र-छात्रायें अँधाधुँध अपनी सारी इन्द्रियों के द्वार खोलकर तत्परता-पूर्वक उनको प्राप्त करने के लिये दृढ़ता-पूर्वक प्रयत्न-शील हो जाते हैं, अर्थात् मेरा-मेरी बनाने के कर्मो में आसक्त हो जाते हैं एक भी इस बात को मानने के लिये तैयार नही होता कि मन-इन्द्रियों का संयम करना चाहिये मन को एकाग्र करना चाहिये, ध्यान करना चाहिये, सद्गुण सदाचारों को धारण करना चाहिये, इसी में सुख है आनन्द है शान्ति हैं।

फिर क्रम-क्रम से ॐ श्री न्यायकारी जी उनको भगवत विधान के विपरीत कर्मो मे ही प्रवृत्ति कर देते हैं (ईश्वर सर्व भूतानी-यन्त्ररूढ़ानि मायया। जिसके परिणाम स्वरूप भंयकर दारूण दु:ख भोगने के पात्र बना देते हैं। और न्यायकारी जी पुन: सृष्टि चलाने वालों को सृष्टि चलाने के लिये नीच योनियों में उपन्न करते हैं (श्री गीता अ० १६ श्लोक १९-२०)

अज्ञानमय, ज्ञान के कर्मों में रमते हुये छात्र-छात्राओं का भविष्य अत्यन्त दु:ख-दायक एवं अशान्तिदायक बन्धनों में जा रहा है।

मानव अपने बहुमूल्य जीवन के समय को जिस प्रकार रौंदता हुआ चल रहा है, उसका परिणाम बहुत भयंकर होगा!

दुर्लभ जीवन की कीमत आँकी नहीं जा सकती जिसका एक एक श्वाँस अविनाशी पद को प्राप्त करता है और वहीं अनन्त जन्मों के कष्टों एवं दु:खों को भोगने का पात्र बना देता है श्री गीता अ० १६ श्लोक १९-२०।

*** निषिद्ध और काम्य कर्मों का तो स्वरूप से त्याग करना उचित ही है, परन्तु नियत कर्म का स्वरूप से त्याग करना उचित नहीं है। इसलिये मोह के कारण उसका त्याग कर देना तामस त्याग कहा गया है।**

*** जो कुछ कर्म है, वह सब दु:खरूप ही है– ऐसा समझकर यदि कोई शारीरिक क्लेश के भय से कर्तव्यकर्मों का त्याग कर दे, तो वह ऐसा राजस त्याग करके त्याग के फल को किसी प्रकार भी नहीं पाता।**

–श्री गीता अध्याय१८, श्लोक ७-८

मनन–विचार

हे श्री आनन्दमय प्रभो! मैं आपके विधान की परवाह न करके–

१- देह का मालिक बना और दिमाग का मालिक बनता गया, पश्चात्

२- चिन्ता दायक विवाह-शादी कर आपकी सम्पति का पति बना, तत्पश्चात्

३- श्री आपने मुझे कलह-कारक पिता जी बना दिया, परन्तु

४- मैंने 'मैं' का और 'मेरा-मेरी' की रक्षा-वृद्धि की कामना का त्याग नहीं किया अपितु मैं कामी, लोभी और क्रोधी भी बना रहा, अब

५- श्री आप मेरी देह का विनाश कराने की घोषणा करवा रहे हैं। अस्तु,

६- हे श्री शान्तिमय प्रभो! अब मुझे ज्ञान हुआ कि श्री आपके विधान में उपरोक्त कर्म-धर्म 'मैं' की और 'मेरा-मेरी' की रक्षा-वृद्धि करने वाले थे, जिनकों मैं जन्म से लेकर अभी तक श्री गीता अ० १८/३४ आदि के अनुसार करता-करवाता रहा, अत:

७- अब मुझे अति प्रसन्नता हैं कि श्री आपकी कृपा करके दु:खालय स्वरुप इस नश्वर देह का त्याग करने की योजना बना रहा हैं।

८- हे श्री आनन्दमय प्रभो! मैं इस दुश्मन देह को निरोग नहीं बना सकता, जब अपनी देह की रक्षा नहीं कर सकता तब श्री आपकी आज्ञा के बिना, जो 'मेरा-मेरी' बनाया हैं उनकी रक्षा किस बल से और किस बुद्धि से करूँगा।

हे श्री शान्तिमय प्रभो! नारी-नरों की नौ द्वार वाली देह गीली मिट्टी की प्रतिमा है और इस यंत्र के अन्दर सफेद रंग की कच्ची लकड़ी हैं। नश्वर देह को सदा निरोग, सुडौल और बलवान बनाएँ रखने की इच्छा करना यह सर्वथा अज्ञानमय तामसी ज्ञान के विचार हैं।

हे श्री आनन्दमय प्रभों! श्री आपकी रची हुई देह का आप त्याग करवाने की कृपा करें, यहीं मेरी कोटिश: बार सविनय प्रार्थना है। मैं श्री आपका स्मरण-चिन्तन करता हुआ, इस देह का प्रसन्नता पूर्वक त्याग कर दूँ।

९- हे श्री शान्तिमय प्रभो! देश के धनी-मानी नारी-नरों के अतिरिक्त अहंकारी बल-बुद्धि द्वारा देशपति प्रसिद्ध होने वाले मंत्रीमंडल के नारी-नरों की दीन-दशा को और उनकी व्याकुलताओं को भी आप मुझे श्रवण करा रहे हैं।

१०- हे श्री आनन्दमय प्रभो! श्री आपकी दण्ड दायक चातुरी नीति है-कैसी?

–स्वार्थी प्रेमयुक्त हर्ष के हाथी पर सुशोभित कर शोक दायक कलह के गदहे पर भ्रमण कराने के जैसी।

अहंकारी प्रेम का फल द्वेष और हर्ष का फल शोक हैं। यह दण्ड दायक विधान धारा सत्य हैं।

हर्ष शोकान्वित: (श्री गीता अ० १८/२६)

११- हे श्री शान्तिमय प्रभो! गीता अ० १८/३३ मे प्रकाशित आपके परमपद दायक कर्म धर्मो में श्रद्धा न करना और श्लोक ३४ में प्रकाशित वर्जित ममता-सम्मान दायक कर्म-धर्मो में श्रद्धा करना तथा श्लोक ३५ आदि में प्रकाशित दण्ड भोगना, यह नास्तिकवाद का नशा अनादि हैं परन्तु यही 'मेरा-मेरो' की जीवनचर्या है।

१२- हे श्री आनन्दमय प्रभों आपकी आज्ञा के विरुद्ध चाहे–

(क) बनो पति-पत्नी, मात-पिता एवं दादा-दादी परन्तु बिना सात्विक सेवा और जप-ध्यान के कराएँगे चिन्तायुक्त नाराज़गी।

(ख) बनो पदाधीश धन के स्वामी, कर लो मन को क्षण भर राजी परन्तु, बिना, सात्विक सेवा और जप-ध्यान के कराएँगे चिन्ता युक्त नाराज़गी।

चिन्ता अग्नि में जलना और कलह-क्रोध आदि की ज्वाला द्वारा उबलते रहना, यह श्री आपके न्याय विधान की मुख्य दण्ड-धारा है इसके विपरीत दिमागी बलदायक ध्यान अमृतपान कराना और समता-प्रसन्नता में मग्न रखना यह श्री आपका मुख्य पुरस्कार हैं।

ॐ शान्तिमय!

श्री गीता अध्याय १४ का १०वाँ श्लोक का सरांश ज्ञान

भगवन! इस दसवें श्लोक का अर्थ बिजली की रोशनी के उदाहरण से उच्चारण किया जा रहा है। एक कमरे में तीन बल्व लगानें के लिए तीन होल्डर और तीन स्विच लगे हुए हैं। उनमें से एक में यदि १००० पावर का सफेद बल्व, दूसरें में १००० पावर का लाल बल्व और तीसरे में १००० पावर का काला बल्व लगा दिया जाए तो सफेद बल्व के स्विच को दबाने से कमरे में सफेद रोशनी होगी। जिसमें सभी पदार्थ यथार्थ रुप में दिखेगें! उसे बन्द करके यदि लाल बल्व का स्विच दबा दिया जाए तो सभी पदार्थ लाल दीखेंगें। और उसको बन्द कर यदि काले बल्व का स्विच दबा दिया जाए तो सब पदार्थ काले दीखेंगे।

इसी प्रकार सात्विक दर्शन-श्रवण और मनन विचारों की जाग्रति करने से अन्त:करण में भगवत् विधान के ज्ञान का प्रकाश हो जाता है जिससे संसार के सभी विषयों का यथार्थ रुप दिखाई देने लगता है और मनुष्य कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के ज्ञान से सजग रहता है। वहीं मनुष्य जब राजसी दर्शन-श्रवण और मनन विचारों को आदर देने लगता है तब उसके अन्त:करण में रजो गुण जागृति होकर विभिन्न प्रकार के दु:ख-अशान्ति दायक कर्मों में प्रवृत्ति हो जाती है! जब मनुष्य तमोगुणी दर्शन-श्रवण मनन-विचारों को अपनी उन्नति का साधन समझ लेता है तो जीवन भगवत् मार्ग से सर्वथा विपरीत महाघोर दु:खमय अशान्तिमय हो जाता है!

हमारे हृदय रुपी कमरे में जो भगवत विधान युक्त सात्विक ज्ञान का कोष है वह सफेद बल्व की रोशनी है! और हमारे हृदय में जो भगवत विधान विरुद्ध राजसी ज्ञान का कोष है वह लाल बल्व की रोशनी है! तीसरा हमारे हृदय में राज विधान के विरुद्ध तथा भगवत विधान के विरुद्ध जो तामसी ज्ञान का कोष है वह काले बल्ल की रोशनी है। हमारा मन विजली की करेन्ट देने वाला है और हमारी वुद्धि स्विच के रूप में है। सात्विक, राजसी और तामसी तीन प्रकार की बुद्धि रूपी स्विच हैं। इनमें से जिस प्रकार के बल्ब के स्विच को दबाया जाएगा अर्थात् बुद्धि में जिस प्रकार के ज्ञान को धारण करने का निश्चय किया जाएगा वैसी ही संकल्प शक्ति मन में जाग्रत हो जाएगी और तदनुसार विभिन्न प्रकार के कार्य होंगे और उनके परिणाम में मनुष्य सुखी-दु:खी होगा!

भगवन! जप् ध्यान और सत्संग स्वाध्याय जनित पुनीत कर्मों के प्रभाव से ॐ आनन्दमय अनुरागी भक्तों की श्रद्धा मिश्रित हुई है। अव एकनिष्ठ श्रद्धासम्पन्न होकर अपने जीवन को सात्विक कर्मों में प्रवृत करके अपनी आत्मा को आनन्दमय-शान्तिमय वनाना है जो परमपद दायक भगवत् शक्ति का केन्द्र है और मोक्ष दायक हैं।

ॐ शान्तिमय

*** अति निन्द्रा, आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता, झूठ, कपट, धोखा, बेईमानी, रिश्वत, चोरी, डकैती, अभक्ष्य-भक्षण आदि हिंसामय तामसी कर्म हैं और इन्हें करने वाले मनुष्यों का जीवन अवश्य ही चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन और नाराज़गी युक्त दु:खमय-अशान्तिमय होगा।**

–श्री विश्वशान्ति भाग-२

अखण्ड ज्योतिमय वैधानिक ब्रह्मवाक्य

श्री पूज्यजन भगवत् भक्तों के समक्ष श्री गीता अ० १४ श्लोक २७ में प्रकाशित अखण्ड ज्योतिमय वैधानिक ब्रह्मवाक्य उच्चारण किये जा रहे हैं। (बड़ी गीता पृष्ठ संख्या ३५८ लघु गीता पृष्ठ संख्या २५४)।

* * * *

हे प्रियवर बालक-बालिकाओं! सभी मनुष्य किसी न किसी अहंकार के बल पर दूसरों के प्रेमी अथवा प्रेमस्पद बनने के इच्छुक मनुष्य कुछ समय के लिये किसी अंश में दूसरों के प्रेमास्पद बनने में सफल भी होते आये हैं परन्तु परिणाम में उनका जीवन पश्चातापमय हो जाता है। सभी मनुष्य शोक युक्त द्वेषमय हो जाते हैं कारण कि गुण विद्या के पारदर्शी हुऐ बिना प्रेमी अथवा प्रेमास्पद बनने वाले मनुष्य कुछ ही समय पश्चात् एक दूसरे को मूर्ख, पागल, शक्तिहीन, दुराचारी, शठ, धूर्त और पापी आदि तामसी नामों द्वारा घोषित कर उनकी निन्दा तथा तिरस्कार करते हुये स्वंय शोकातुर व भयातुर हो जाते हैं। दूसरे के प्रेमी अथवा प्रेमास्पद बनना प्रथम अ० १८ श्लोक ३८ के अनुसार ''तदगे अमृतोपमम् लगता है परन्तु शीघ्र ही'' परिणामे विषमिव'' हो जाता है।

हे विचारशील बालकों। नीम के फल अंगूर के फलों के सदृश दीखते हैं परन्तु नीम के फलों पर मधुर रस किंचित मात्र है शेष सब कड़वा रस है। जो मनुष्य भगवत् दर्शी गुणवानों के अतिरिक्त सुन्दर मनुष्यों को अपना प्रेमी-प्रेमास्पद बनाते हैं अथवा स्वंय उनके प्रेमी प्रेमास्पद बनते हैं वह उसी प्रकार पश्चाताप करते हैं जैसे नीम के फलों को चबाने वाला पश्चाताप करता है, अस्तु।

प्रेमी अथवा प्रेमास्पद बनने बनाने की जो विद्या है उसका नाम है गुण विद्या। वह गुण विद्या श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित है। उस आनन्दमयी शान्तिमयी विद्या के पारदर्शी हुये बिना प्रेमी-प्रेमास्पद की प्रतिष्ठा सर्वत्र मीठे विष के सहश कार्य करती है।

हे प्रियवर बालकों! विश्व में सैकड़ों प्रकार के आसुरी अहंकार अनादि काल से विद्यामान है उनमें से किसी भी अंहकार के बल प्रेमी-प्रेमास्पद बनना अथवा प्रेमी प्रेमास्पद बनाना दुःख-अशान्ति दायक है।

हे सत्संग अनुरागी बालकों! परिवारिकजनों के अहंकार की रौनक पुष्पबाटिका की रौनक के सहश है। आप स्वयं विचार करें पुष्पवाटिकाओं में मौसम के अनुसार सुन्दर पुष्प खिलते हैं और कुछ समय पश्चात् कुम्हलाकर अशोभित हो जाते हैं। वही पुष्प सड़कर जब दुर्गन्धयुक्त हो जाते हैं तो अप्रिय लगते हैं।

हे प्रियवर बालकों! जैसे पुष्पों द्वारा अमाशय की तृप्ति नहीं होती वैसे ही पति-पत्नी के अहंकार की रौनक से लेकर चार पीढ़ियों तक के सैकड़ों अहंकारों की रौनक से हमारी तृप्ति नहीं होती। अपितु अहंकारों की वृद्धि के साथ-साथ जीवात्मा चिन्ता-शोक और द्वेष-क्रोध युक्त दुःखमय-अशान्ति-मय होता जाता है!

परिवारिक पदों के भोक्ता हमें अपने-अपने दुःखों का अशान्तियों का और अनेकों प्रतिकूलताओं का दर्शन-श्रवण करा रहे हैं।

ॐ श्री विधानाचार्य भगवान ने अ०१३ श्लेक ९ में जो चेतावनी दायक आदेश दिये हैं वह सर्वथा सत्य हैं।

''असक्तिनभिष्वङ्गः पुत्र दास गृहादिषु''
निर्ममों निरहंकार स शान्तिमधिगच्छति।

यह ब्रह्मवेत्ताओं के ब्रह्मवाक्य अखण्ड ज्योतिमय हैं।

हे प्रियवर बालकों! जैसे नभ-आकाश की पोल को भरने में कोई समर्थ नहीं ऐसे ही हृदय आकाश के आसुरी नामक अहंकार को पूर्ण करने की समर्थ न किसी में हुई है, न वर्तमान में है और न भविष्य में होगी।

हे गुण उपासक बालकों! जैसे सागर को मिट्टी-पत्थरों द्वारा भरने में कोई सामर्थवान नहीं हुये ऐसे ही आसुरी बुद्धि के मनोमय कोष ममता के भावों की पूर्ति करने में भी कोई समर्थ नहीं हुये।

हे सात्त्विक गुण उपासक बालकों! यद्यपि देहान्तपर्यन्त भूमि, भवन, घन, जन आदि पदार्थों को संग्रह करते रहने पर तथा आसुरी अहंकार की वृद्धि करते रहने पर भी इनमें संतोष होने का विधान नहीं है तथापि ॐ आनन्दमय प्रभु पिता द्वारा रचित पदार्थों को मेरा मानकर असुरी ममता अहंकार की रक्षा-वृद्धि के उपासक मनुष्य अमूल्य मानव शरीर को नष्ट-भ्रष्ट कर दुःखी अशान्त होते आये हैं। इस प्रकार असम्भव को सम्भव करने में प्रयत्नशील मनुष्य मूर्खों की गणना में आते हैं।

हे गुण उपासक बालकों! ''मैं अनन्त, अपार, असीम भावमय हूँ'' यह सात्त्विक अहंकार है। इस दिव्य अहंकार की प्राप्ति भगवत् पदाधीशों को होती आयी है। इसलिये श्रद्धावान भक्त जन इस दिव्य अहंकार की प्राप्ति करने में प्रयत्नशील रहते हैं।

हे प्रियवर बालकों! ध्यान-समाधिमग्न महात्मा पद के अहंकार को प्राप्त करने के अतिरिक्त अपनी चार दिवारी में पति-पत्नी के अहंकार को धारण करने, दादा-दादी के पद को प्राप्त करने अथवा राज्यपाल व देश के मिनिस्टर बनने पर, दिमाग खाली कनस्टर के सदृश हो जायेगा।

ॐ शान्तिमय

आनन्दमय-शान्तिमय-दायक भगवत:शाक्ति का शुभ सन्देश

मनुष्य अपनी सम्पूर्ण आनन्द शान्ति दायक स्थाई शक्तियों का विकाश सुगमता पूर्वक ध्यान-योग द्वारा ही कर सकता है।

आनन्द शान्ति दायक परम-सिद्धि की प्राप्ति में संकटहारी युगल जोड़ी योग-सिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय अपनी अद्भुत शक्ति का प्रभाव दिखलाता है।

दिमागी रोगों की शान्ति में योग-सिद्ध महामंत्र का आश्चर्य जनक प्रभाव है।

दु:खालय-स्वरूप जन्म-मृत्यु दायक संसार-सागर पार करने में ध्यानयोग अर्थात् अनन्य-भक्ति की ही प्रधानता है, ध्यानयोग के द्वारा परम-शक्ति प्राप्त हो जाने पर फिर अन्य और शक्ति प्राप्त करने की इच्छायें समाप्त हो जाती हैं। जैसे गर्मी-शक्ति दायक प्रकाश पुन्ज सूर्य के उदय होते ही गर्मी-शक्ति देने-वाले समस्त यंत्रो के प्रति उपेक्षा वृन्ति हो जाती है उसकी आवश्यकता, समाप्त हो जाती है।

मनुष्य जीवन की सार्थकता ध्यानयोग की प्राप्ति में ही है। अन्तिम समय में ध्यान-योग की स्थिति ही दु:खालय स्वरूप जन्म-मरण के समस्त संकटो से मुक्त कर संसार-सागर से पार कर देती है। श्री गीता अ० १२ श्लोक ६-७-८,।

विश्व-आनन्द-शान्ति दायक भगवत कार्यालय श्री विश्वशान्ति आश्रम की सेवाओं को अखण्ड-पुरूषार्थ करते-रहना ॐ आनन्दमय अनुरागी-प्रेमियों का लक्ष्य, रहना चाहिये यही जीवन की सार्थकता है

परन्तु-हिंसायुक्त स्वार्थमय कर्मो के प्रभाव से मनुष्य का स्वाभाव राग-द्वेष-काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार से अति अशान्ति को प्राप्त होता रहता है। अत: हमें अपने स्वभाव को राग-द्वेष रूपी घुन अथवा दीमक से, बचाना चाहिये।

घुन का स्वाभाव होता है वह अनाज जैसे गेहूँ, चना आदि दाने के अन्दर पौष्टिक तत्त्व को खा जाती है, उसके ऊपर का आकार वैसा ही बना रहता है, हॉ अब दाने से नवीन पौधा नहीं बन सकता, क्योंकि जो ऊँकुरित होकर पौध बनने की जो शक्ति थी वह घुन ने समाप्त कर दी, इसी प्रकार इच्छा रूपी राग मनुष्य की दिमागी शान्ति को छलनी कर डालती है, फिर उसके द्वारा परम सुख-शान्ति आनन्द प्राप्त कराने वाले परमार्थ रूपी पुण्य-कर्म करने की शक्ति ही नहीं रह जाती और पुण्य कर्मो से भाग्य ही नही, इसके बिना सन्तों का संग नही मिलता।

इसी प्रकार दीमक अपने स्वभाव वश साधारण काष्ठ की तो बात ही क्या अच्छे-अच्छे काष्ठ द्वारा निर्मित फरर्नीचर को भी अन्दर-अन्दर खोखला कर मिट्टी मय कर देती हैं। परिणाम क्या होता है समय आने पर उसकी रक्षा-पौषण करने वाला स्थान खोखला होने से आधार शक्ति क्षीण होकर टेढ़ा हो जाता है या फिर गिर जाता है। जब ज्ञाताओं को ज्ञान होता है तो उनको नष्ट करने के लिये जहरीली दवा अथवा मिट्टी के तेल का प्रयोग कर उनको नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं।

ऐसे ही मनुष्य के अन्दर जब अहंता ममता, कामना, भोग रूपी स्वार्थमय, पापमय कर्मो के प्रभाव से द्वेष भाव की जाग्रति हो जाती है तब दिमागी शक्ति-आत्म-बल को बढ़ाने वाले पौष्टिक सर्व-हितकारी परम-पद-दायक गुण-ज्ञान भाव आचरणों को धारण करने की, मनन-चिन्तन करने की शक्ति क्षीण हो जाती है सर्व भूत हिते रता: के भावों का, भगवत आदेश के ऑठवे मंत्र की प्रतिज्ञा के १५ वे मंत्र उपासना का त्याग होकर हरसमय राग-द्वेष काम-क्रोध चिन्ता-नाराजगी कलह क्लेश मय जीवन बनता जाता है। और अन्त में श्री गीता अ० १५ श्लोक ५-६के परम-पद, परम-धाम से सर्वथा के लिये वंचित होकर-जन्म-जन्मान्तर तक श्री गीता अ०१६ श्लोक १९-२० के अनुसार जन्म-जन्म में आसुरी-योनि की प्राप्ति हो जाती है।

यह अपनी मन-बुद्धि को मित्र न बना कर शत्रु बनाने का परिणाम। फिर तो समस्त धर्म-कर्म गुण-ज्ञान-भाव-आचारण सब शत्रु का रूप हो जाता है श्री गीता अ०६ श्लोक ५-६।

उपरोक्त बतलाये गये श्री गीता के श्लोक का पठन-श्रवण और मनन-विचार कर धारण करने मे तत्परत्ता पूर्वक श्रद्धा प्रेम उत्साह के साथ प्रयत्नशील होना चाहिये।

ॐ शान्तिमय

श्री सत्संग सुधा

हे प्रिय आत्मन् ! आनन्द-शान्ति और दु:ख-अशान्ति दायक वाणी-श्रवण करने की पूजा है। और अनुभव करना है कि विश्व की जन संख्या में मानवों के हितार्थ धार्मिक ग्रन्थों की पुस्तकालय अनेकों विद्यमान हैं। परन्तु झगड़ालू मैं की रक्षा-वृद्धि कर्त्ता-श्रोता-वक्ता सभी झगड़ा करने में प्रयत्नशील रहते हैं कैसे?- देश के विकाश कर्त्ता मंत्री मण्डल के जैसे तथा घर-घर में झगड़ा और रोना।

इन राक्षसी कर्मों के हम सभी दर्शन-श्रवण और पठन करते आये हैं। अहंकारी पशु-पक्षी भी झगड़ा और रोना करते हैं कैसा जलचरों के जैसा। अस्तु

हे प्रिय आत्मन्! श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में जो आनन्द, शान्ति दायक ३२० विधान प्रकाशित है और इसके विपरीत दु:ख-अशान्ति ३२० विधान धारा प्रकाशित है हाँ! विश्व के पुस्तकालयों में सग्रंह किया हुआ है, सब कोई सद्गुण-सदाचारों की महिमा श्रवण कराते हैं।

स्मृति रहे। जेल दण्ड से मुक्त होने की और परम-पद को प्राप्त करने की विद्या का दैनिक पाठ और कर्म करने का ज्ञान श्री विश्व-शान्ति ग्रन्थ भाग १ के १३ से १६ तक प्रकाशित है, इन कर्मों के द्वारा दिमाग को परम् भण्डारमय और शान्तिमय बनाते रहना है।

''उपसंहार''

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग २ के पृष्ट १५४-५५ में श्री श्रीगीता के सार श्लोक ५२ प्रकाशित है, उनको श्री गीता-तत्त्व-विवचेनी द्वारा एक श्लोक का दैनिक पाठ करने से झगड़ालु राक्षसी मैं दुर्बल बना रहेगा अन्यथा श्री ध्यानाचार्य से विपरीत आचरण करना होगा, ॐ श्री प्रभु पिता जी की सम्पत्ति का मालिक बनने वाला मैं ब्रह्महत्या के विधान का भय नहीं करेगा।

पृष्ठ १३ से १६ तक बार-बार उच्चारण करने की पूजा करनी है।

–ॐ शान्तिमय

तीर्थ-रहस्य

प्राचीन काल के ब्रह्मदर्शी महापुरूषों ने तीर्थों का तत्व इस प्रकार बतलाया है कि सत्य तीर्थ है, क्षमा तार्थ हैं, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ हैं।

सात्विक दान करना, मन को सयमिंत रखना और सन्तोष रखना भी तीर्थ है। प्रिय वचन वोलना भी तीर्थ हैं।

ब्रह्मज्ञान निष्काम सेवा और धैर्य को भी तीर्थ कहा जाता है, किन्तु इन सभी तीर्थों में सब से बड़ा तीर्थ हैं अन्त:करण की शुद्धि, जो ध्यान समाधि से होती है। जब अर्न्तमन पवित्र हो जाता है तो ये सारे तीर्थ उसमें समाहित हो जाते है।

जिज्ञासु भक्तों को आश्रम से दिये गये पत्र की प्रतिलिपि

तत्त्वज्ञान की जगमग ज्योति जलाकर
अज्ञानमय ज्ञान का नाश करने वाले, ॐ श्री महापुरूष भगवान शरणं

वर्तमान की स्थिति में भी भगवत-कृपा-शान्ति प्राप्त करने वाले भाग्यशाली श्री भगवत प्रेमी एवं अन्य सहपाठियों–ब्रह्म-सृष्टि के सभी नर-नारी अनादिकाल से नाशवान, अनित्य, सुख रहित प्रेमी-पदार्थों में, भोगों में इच्छा द्वेष करके, सुख-दु:खादि द्वन्द-रूप मोह से, अत्यन्त अज्ञानता को प्राप्त हो रहे हैं, श्री गीता अ० ७ श्लोक२७।

तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ताओं की अमर-वाणी है कि-

यह संसार है, दुख की खाईं।
तड़पत है नर, मीन की नाई।।

सन्तों ने संसार की दशा को देखकर रो दिया अर्थात् आँसुओं की धारा बहाई। क्यों–

चलती चक्की देखकर, दिया दास ने रोय।
दो पाटन संसार मे, साबत रहा न कोय।।

फिर समझाया कि–

हाड़ जले ज्यूँ लाकड़ी, केश जले ज्यूँ घास।
सब जग जलता देखके, करो भोग का त्याग।।

इसके बाद भी और सावधान किया कि-------

काल करे सो आजकर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होगी, फिर करेगा कब।।

प्राचीन-काल से ही मानव-मंडल इस प्रकार सत्य ज्ञान की वाणी पठन-श्रवण करते आ रहें हैं। परन्तु इस वाणी को आदर देकर धारण करने वाले और धारण कराने वालों का अभाव है, केवल मात्र ब्रह्मदर्शी, तत्त्वदर्शी ध्यान-समाधिमग्न श्री महापुरूष ही, तत्त्व-ज्ञान का आदर करते हैं और दूसरों को भी धारण करने की ही प्रेरणा देते हैं।

सर्वशक्तिमान दयामय ॐ आनन्दमय भगवान की अत्यन्त महान-कृपा से ऐसे तत्त्वज्ञानी श्री महापुरूष भगवान का, हम लोगों को संयोग-प्राप्त हुआ, दर्शन श्रवण मिला, साथ ही साथ, सदा के लिये शक्ति-मुक्ति देने वाले ज्ञान को पठन-श्रवण करने के लिये शुभ अवसर प्राप्त होता रहता है। हाँ–हम लोगो ने उनको आदर देकर कितना धारण किया और दूसरो को धारण कराने में कितने प्रयत्न शील रहे हैं–यह मनन विचार करने का विषय है। क्या हम भविष्य के लिये निर्भय और निश्चिन्त हो गये हैं? क्या भविष्य में ऐसा अमोघ दुर्लभ-संयोग पुन:प्राप्त होगा। इत्यादि

हाँ, इतना तो अब भी, जो कमी है, उसको पूरा, तो कर ही सकते हैं यदि तीव्रतर लगन लग जायें लगन तो लगानी ही पड़ेगी। तभी भविष्य में आने वाले, महान दु:ख दायक कर्मो से मुक्ति मिलेगी। क्या लगन लगानी पड़ेगी तो बताया कि–

आनन्दमयप्रभो लगन में, यह पाँचो न सुहात।
विषय भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति, बहुबात।।

और श्री गीता कहती है–न तेषु रमते बुध: ५/२२,

एवं विस्तार से ज्ञान का उपदेश श्री गीता अ० १३ श्लोक ७ से ११, तक में दिया हैं। दिमाग को सम-शान्त-तर बनाये रखने के लिए इन श्लोकों को पठन करना आवश्यक है।

भगवत कृपा प्राप्तकर सत्य ज्ञान के अनुभवी
श्री प्रेमी, श्री शास्त्रों की ज्ञाता

एवं श्री गीता शास्त्र के रचयिता विधानाचार्य भगवान ने अध्याय १५ के श्लोक ३ मे कथन किया है कि संसार के स्वरूप का जैसा कथन किया है वास्तव में वैसी इसकी स्थिति नही हैं इसका अनावश्यक उपयोग जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है।

जैसे फूल की सुन्दरता और आकर्षण की, शोभा की, स्थिति वास्तविक नही रहती। क्योंकि जब बढ़िया, खूब सुन्दर सुगन्ध से पूर्ण फूल तोड़ा जाता है, वह क्रम-क्रम से शोभा-हीन हुआ मुरझाता-जाता है एवं कुछ समय पश्चात वह सदा के लिये शोभा-हीन होकर अशोभित हो जाता है फिर तो उससे त्याग वैराग्य ही किया जाता है। यही स्थिति संसार के समस्त प्रेमी-पदार्थो की है, परन्तु आज्ञानी-विषयी भोगी मनुष्य ही संसार की शोभा सुन्दरता रमणीयता के सुख भोग के आनन्द का वर्णन करते रहते है और जीवन पर्यन्त पश्चाताप के आँसू बहाते रहते हैं। श्री गीता अ० ९/१२/,

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की अनुपम कृपा है एवं मेरे अहोभग्य का विषय है कि आप लोगो की प्रेम-स्मृति करते हुये अपनी आयु के ७५ वर्ष में होने वाले अनुभव का कुछ अंश लिखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ ! ॐ शान्तिमय !

विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य क्या होना चाहिये

ॐ श्री सदगुरू देव भगवान शरणंम्

हम विद्यार्थी लोगों का गुरू दरबार में लक्ष्य सिद्धान्त एवं ध्येय सीमित नही रहना चाहिये कि केवल भौतिकं विद्याओं का ही अध्ययन करें फिर माननीय पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर डाक्टर इंजीनियर और वकील बनें, एवं उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर और फिर विवाह सन्तान भोग करते हुये जीवन को सुखमय बनाने के लिये अधिक भोग सामग्री संग्रह करें। सर्वश्रेष्ठ सुखमय जीवन इन्हीं उपरोक्त विचारों से होगा, यह धारणा मन से निकाल दें। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता महापुरूषों के 'अनुभवों से , अध्यात्मिक दृष्टि से, भविष्य में यह हमारे लिये महान दु:खों का कारण होगा।

हम लोगों को ॐ आनन्दमय भगवान के विधान के अनुसार अपने जीवन को सद्गुण-सम्पन्न सदाचारी ही बनाना चाहिये फिर हमारे द्वारा होने-वाले सभी कार्य एवं व्यवहार-आचरण आदर्श-श्रेष्ठ होंगें। इससे हमारा अपने पूज्यजनों के प्रति माता पिता भाई-बन्धु इष्ट, मित्रो के प्रति अधिक से अधिक सम्मान करने का स्वभाव बनेगा। जीवन में नम्रता सरलता, सहनशीलता, धैर्य, उत्साह आदि अनेकों गुणों के प्रभाव से हमारे अन्दर प्रियता-प्रसन्नता समता-सन्तोष की प्राप्ति होकर हर समय आनन्द, शान्तिमय की मन्नता बनी रहेगी। हम अपने लिये परिवार एवं समाज के लिये हितकारी व भाग्य शाली समझे जायेगें।

दूसरों के प्रिय बनने के लिये और अपने प्रिय बनाने के लिये हम लोगों को अपने स्वभाव में सरलता वाणी में मधुरता आचरणो में निष्कटता, सेवाभाव, व्यवहार में नम्रता, प्रियता प्रसनन्ता आदि को अपने अन्दर उदय करना होगा, जाग्रत करना होगा तभी काम बनेगा। श्री गुरू देव की हितकारी वाणी है कि–

१- अपना हित करना पाप है।

२-दूसरो का हित चिन्तन करना धर्म है।

३- दूसरे का आनिष्ट चिन्तन करना महापाप है।

सद्गुण-सदाचार सम्पन्न विद्यर्थी ही देश के भाग्य को उदय करने में समर्थ होंगें। प्रेम-प्रसन्नता के त्यागी और चिन्ता-क्रोध के रागी अध्यापक अध्यापिकओं द्वारा शिक्षित छात्र-छात्राओं का चरित्र होगा कैसा?– तामसी दुर्योधन और सूपनखा के जैसा। ॐ शान्तिमय

दिव्य-वाणी-स्मृति-रखने योग्य–

स्वस्थ देह और स्वस्थ दिमाग मित्र है।

अस्वस्थ देह और रोगी दिमाग-शत्रु है।।

''-श्री गीता अध्याय ६ श्लोक ५ और ६-''

*** हम इस संसार में यात्री की तरह थोड़े समय के लिये आते हैं, संसार से जाते समय साथ में कुछ भी नहीं ले जा सकते परन्तु स्वभाव साथ जाता है। जैसा स्वभाव होता है वैसी ही गति मिलती है। स्वभाव शुद्ध होगा तो अच्छी गति मिलेगी। हम दूसरों का स्वभाव नहीं बदल सकते, परन्तु अपने स्वभाव का सुधार तो कर ही सकते हैं। स्वयं का स्वभाव बिगड़ता है तो स्वयं को भी अशान्ति मिलती है।**

–श्री गुण-ज्ञान सागर